मास्कोमें विदेशी जीवन

लेखिका

श्रीमती लीडिया कर्क

अनुवादक

के० आर० गुप्त एम० ए०

दो रुपया]   [मूल्य २)

प्रकाशक

इण्डियन यूनिवर्सिटी पब्लिशर्स, प्राइवेट लि०

काश्मीरी गेट

दिल्ली-६

समालोचना

"अमरीकी राजदूत एडमिरल एलन जी० कर्क की पत्नी ने पत्रों में रूस के जीवन की झांकियां एक स्त्री की दृष्टि से दी हैं। लेखिका ने दुकानों का, स्त्रियों की वेश-भूषा का, वस्तुओं का, मूल्यों का, सामाजिक घटनाओं तथा रहन-सहन की समस्याओं का वर्णन बहुत रोचक ढंग से किया है। श्रीमती कर्क ने यह भी बताया है कि रूस में ज़रा-ज़रा सी बात पर नियन्त्रण है और वहां का जीवन नीरस और रंगहीन है।"

लेडीज़ होम जनरल

मार्च १६४६ ई० की बात है। पत्रों में समाचार आया कि मास्को के राजदूतावास से बेडिल स्मिथ के निवृत्त होने की सम्भावना है। इस दूरस्थ पद पर दो साल से अधिक रह चुकने के बाद उनकी इच्छा थी कि पुनः सक्रिय सेनानायक बनें। इस समाचार पर मेरी भी नज़र पड़ी। अगले दिन के पत्रों में यह समाचार फिर दृष्टिगोचर हुआ और मुझे सहसा विचार आया कि इस पद के लिये मेरा उम्मीदवार कौन हो सकता है, करदाता के रूप में मेरी नज़र में एक ही व्यक्ति था। पत्नी के नाते और यह सोच कर कि इस अभियान में मुझे भी राजदूत का साथ देना होगा मैं व्याकुल हो उठी। मेरे उम्मीदवार थे मेरे स्वामी ऐडमिरल ऐलन गूडरिच कर्क जो उस समय बेल्जियम में राजदूत थे।

इस विषय में मैंने उनसे बात-चीत की। उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। भले ही एक ऐडमिरल तीन साल तक कूटनीतिक मिशन का अध्यक्ष रह चुका हो, किन्तु यह सम्भव नहीं कि उसे एक जनरल का उत्तराधिकारी नियुक्त किया जाय। कुछ देर वार्ता होती रही। आखिर हम इस नतीजे पर पहुँचे कि दो पद ऐसे हैं जिन्हें कदाचित अस्वीकार नहीं किया जा सकता। इनमें से एक पद जर्मनी में था और दूसरा रूस में। ये दोनों ही संघर्षपूर्ण पद थे।

कई सप्ताह बीत गये। 'अटलांटिक ट्रीटी' लिखी जा चुकी थी। वाशिंगटन में उस पर हस्ताक्षर होने को थे। बेल्जियम में होते हुए इस सन्धि के निरूपण में उन्होंने भी सहयोग दिया था इसलिए शनिवार को प्रातःकाल ब्रसल्ज़ के राजदूतावास में वाशिंगटन से टेलीफ़ून पर जब यह सन्देश आया कि वे उसी दिन हवाई जाहज़ से घर पहुँचे तो स्वामी को आश्चर्य नहीं हुआ।

'एक बजे तो नहीं, किन्तु जो हवाई जहाज़ चार बजे चलता है उससे अवश्य आ सकूँगा।'

मैंने उन्हें टोक कर कहा, 'ठहरिये, हम रूस नहीं जायेंगे। मुझे अपने शब्द याद हैं फिर भी आप कोई ऐसी बात न करें जिससे हमें मास्को जाना पड़े।'

'तुम तो पगली हो। बात केवल इतनी है कि संधि के विषय में मुझे देश बुलाया गया है।'

इससे मेरी तसल्ली न हुई। परन्तु मैंने उन्हें उसी पराह्न विदा कर दिया। शुक्रवार को प्रिंस रिजेंट के सचिव ऐंड्र्यू डी स्ट्रैंक ने जो पुराना मित्र था मुझे बुलाया और कहा कि प्रधान मन्त्री ऐम० स्पाक वाशिंगटन से वापिस लौट आया है। वह सभी सम्मेलनों में सम्मिलित हुआ था और संधि पर उसके सामने हस्ताक्षर हुये थे, परन्तु राजदूत से उसकी कहीं भेंट न हुई थी।

बाद में उसी शाम मैंने अपने एक सम्बन्धी को टेलीफून किया। ऐन्ड्रू ने जो कहा था मैंने उसे सब कुछ बता दिया। उसने उत्तर दिया, 'श्रीमती कर्क, आपके आग्रह पर मुझे यह कहना पड़ता है कि ऐसोसियेटिड प्रेस एक घण्टे से इस समाचार की पुष्टि कराने का प्रयास कर रहा है कि मास्को में राजदूत की नियुक्ति हो गई है।'

आखिर वही बात हुई। मुझे मालूम था कि स्वामी हामी भर देंगे। इस विषय में हमारा एक मत था। यदि किसी अन्य पद के लिए प्रस्तावना होती तो उसे टाला जा सकता था। उस सूरत में कहा जा सकता था कि उन्होंने युद्ध और शान्ति के समय दीर्घकाल तक देश की सच्चे दिल से सेवा की है और अब वे आराम तथा भौतिक सुख चाहते हैं··· वे इतने धनी नहीं कि देश की अधिक सेवा कर सकें—परन्तु इस पद को अस्वीकार करना कठिन था। एक और दायित्व आ पड़ा था। यह एक नया कर्तव्य था जिसे पालन करना आवश्यक था। इस दायित्व का भार

मुझ पर भी था। मैं जानती थी इसे निभाने में कई सुखमय और रोचक चीजों का परित्याग करना पड़ेगा। फिर भी इसे निभाना ज़रूर था।

इस समाचार से मुझे विस्मय हुआ था, परन्तु स्वामी के वापिस लौटने तक मैं इतनी सम्भल गई थी कि उन्हें मैंने अपने मन की दशा का बोध नहीं होने दिया। जब उन्हें मास्को जाने का आदेश मिला तो उन्हें भी आश्चर्य हुआ था, परन्तु वे जानते थे कि इस विषय में क्या कहना चाहिये। वे मेरे मन की बात भी जानते थे। उन्होंने यह पद स्वीकार कर लिया था।

एक महीना हमने अपने देश में गुज़ारा हम अपने सम्बन्धियों से डाक्टरों तथा दन्तवैद्यों से मिले, हमने मुखतारनामों पर हस्ताक्षर किये और नये वसीयतनामे लिखे। सभी लोग हमें बड़े चाव से मिले। यहां तक कि 'सेक्स' की दुकानदारिन ने भी उत्कंठा का प्रदर्शन किया। मैं अंगिया खरीद रही थी। उसने मेरा नाम पता देखा तो काउंटर पर से झुक कर बोली:—

'क्या आप ही वे भद्र नारी हैं जिनके पति रूस जा रहे हैं? मेरी शुभ कामनाएँ आपके साथ हैं।'

इन शब्दों से मुझे बहुत सान्त्वना मिली, परन्तु हमारी सबसे बड़ी खुशी यह थी कि रोजर कालिज की पढ़ाई बीच में छोड़ कर एक साल के लिए हमारे साथ मास्को में रहने को तैयार हो गया था। वह केवल अठारह वर्ष का था और प्रिंस्टन कालिज में दूसरे साल में पढ़ रहा था। अपनी श्रेणी के विचार से उसकी आयु कम थी। उसने रूसी भाषा सीखी थी। आशा थी कि राजदूतावास में उसे कोई पद मिल जायेगा। वह वहां उपयोगी सिद्ध होगा और रूसी भाषा का अध्ययन भी जारी रख सकेगा। उसके अध्यापकों ने यह बात पसन्द की थी। मेरे लिये तो उसका साथ जाना वरदान के समान था। परन्तु स्वामी के लिये भी जो, युद्ध और विदेशी सेवा के कारण पुत्र से दस साल अलग रहे थे यह एक

विलक्षण बात थी। यह रोजर का अपना सुझाव था पर हमें भी इससे बहुत खुशी हुई थी।

रोजर और मैं 'न्यू ऐम्स्टर्डम'-नाम के जहाज़ पर सवार हुए। स्वामी ने हम से एक सप्ताह पूर्व प्रस्थान किया था क्योंकि उन्हें पेरिस में होने वाले विदेशी मन्त्रियों के सम्मेलन में शामिल होना था। हम उन्हें 'क़िल्लन' में जा मिले।

पेरिस में जितने दिन रहे हमें सामान खरीदने से अवकाश न मिला। उस सामान की जो हमें विमान द्वारा अपने साथ ले जाना था लम्बी-लम्बी सूचियां थीं। इसका कारण यह था कि रूस में अव्वल तो कुछ मिलता ही नहीं, यदि मिलता भी है तो दुगने-चौगुने मोल पर।

युद्ध के अन्तर्गत तथा उसके कुछ समय पश्चात् तक मास्को राज-दूतावास के लिये एक विशेष विमान नियत था। परन्तु रूसी अब इस विमान को मास्को में ठहरने की आज्ञा नहीं देते इस लिये इसे वहां से हटा लिया गया है। राजदूत जब सरकारी काम से आता जाता है तो हमारी वायुसेना विमान का प्रबन्ध करती है।

मास्को पहुँचने के पांच दिन पश्चात् मैंने एक पत्र लिखा जिसमें अपनी इस यात्रा का वृत्तान्त दिया जो हमने बर्लिन के मार्ग द्वारा विमान में बैठ कर पेरिस से रूस तक की थी। इस पत्र में रूस की राजधानी मास्को में पहुँचने का विवरण भी दिया था।

मास्को, ३ जौलाई, १९४६

खुला और सुहावना दिन था। घुड़दौड़ में रुचि रखने वाले शौकीन लोग 'ग्रैंड प्रिक्स' देखने के लिए बड़े समारोह से चले आ रहे थे। स्वामी, रोजर और मैं ठीक दो बजे 'क़िल्लन' को रवाना हुये। विशाल और भव्य विमान अर्ली के हवाई अड्डे पर खड़ा हमारी राह देख रहा था। विमान चालक और अन्य कार्यकर्ता सीढ़ी के साथ एक पंक्ति में खड़े थे। भारी सामान पहले ही लद चुका था। सन्दूक, ट्रंक और सूटकेस इस

प्रकार पड़े थे कि उनके बीच से गुजरना कठिन था। मैंने इसे 'कर्क' अभियान का नाम दिया।

मौसम के अनिश्चित होने की संभावना थी इसलिए सावधानी के रूप में मैंने एक टिकिया खाली थी। विमान सिंह के समान गरजता हुआ यान पथ पर बढ़ा। विमान के अन्दर रास्ते में एक ओर जहां टैनिस खेलने के बल्ले और मेरी टाईप की मशीन रखी थी मुझे स्वामी की बन्दूक दिखाई दी। इसे देखकर अनायास मुझे मैडम पवलव की याद आ गई। वह बैल्जियम में स्थित रूसी राजदूत की पत्नी है और विदाई के समय मेरी उससे भेंट हुई थी।

बातों-बातों में उसने कहा था, 'क्या आप के पति को शिकार का शौक है?'

मैंने उत्तर दिया, 'हां वे अच्छे आखेटक हैं।

उसने इस प्रकार सिर हिलाया जैसे यह बात उसे भाई न हो, और कहा—

'परन्तु रूस में उन्हें जानवर कहां मिलेंगे?'

यह भद्र नारी पिस्तौल का निशाना लगाने में दक्ष थी इसलिये मुझे विस्मय हुआ कि वह कैसे और किस चीज़ का शिकार करती है। खुले मैदानों की अपेक्षा शायद वह तहखानों में ही शिकार खेलती थी।

जर्मनी में हमें दो रात ठहरना था एक रात हीडलबर्ग में और दूसरी रात बर्लिन में। हमारा पहला पड़ाव वीज़बेडन था। विमान अमरीकी वायुसेना के हवाई अड्डे पर उतरा। जनरल हुबनर जो हमारी थल सेना के अध्यक्ष थे और जनरल कैनन जो यूरोपीय मंच में हमारी थल सेना के नायक थे हमें वहां मिलने आये। जनरल हुबनर हीडलबर्ग से अपनी निजी रेलगाड़ी से आया था। वह तीन डिब्बों की गाड़ी थी जिसमें बैठकर फ्रा गोएरिंग नाज़ियों के उत्कर्ष के समय वियाना, प्रेग और पैरिस जाया करती थी और वहां से सामान खरीद कर लाया करती थी। इसी गाड़ी में बैठकर हम दूसरे दिन वीज़बेडन वापिस आये और वहां से उड़कर बर्लिन पहुंचे, फिर टैम्पलहौफ़ के हवाई अड्डे पर गये।

हमारे सम्मान के लिये सैनिकों का पूरा जत्था आया हुआ था। एक ओर दो दस्ते सैनिकों के और बैंड था दूसरी ओर अमरीका के उच्च कर्मचारियों की टोली थी।

बाजे ने पहले एक जंगी धुन बजाई फिर अमरीका के राष्ट्रीयगान की एक तान निकाली। इसके बोल थे—दी स्टार स्पैंगेल्ड बैन्नर 'अर्थात् सितारों टकी यह पताका हमारी। इसे सुनकर मेरा दिल भर आया और अनायास मेरा ओंठ मेरे दाँतों में दब गया। ऊपर विमान की गर्जन थी, नीचे मधुर गान और सामने अमरीका की ध्वजा फहरा रही थी। कर्क परिवार के तीन सदस्य मास्को जा रहे थे। इसी से मेरे मन में उत्कंठा उत्पन्न हुई और यही कारण था कि मैंने अपना ओंठ काट लिया था।

स्वामी ने जनरल हेईस के साथ जो बर्लिन में स्थित हमारी सेना के अध्यक्ष हैं रक्षि का पर्यायलोचन किया। उसके पश्चात् हम अपने नाविक प्रतिनिधि ऐडमिरल वाईक्स के निवासस्थान पर गये और वहीं हमने रात व्यतीत की।

अगली प्रातः अर्थात २८ जून को हम टैम्पलहौफ़ गये। वहां विशाल वायुयान उड़ान के लिये तैयार खड़ा था। बहुत से राज्यकर्मचारी खड़े थे जिनमें मास्को राजदूतावास का एक मुख्य सचिव मिस्टर मौरिस भी था। उनमें दो रूसी भी थे, एक रेडियो चालक और दूसरा विमान चालक। उन्हें हमारी उड़ान का निर्देशन करने के लिए नियुक्त किया गया था।

हमारे विमानों को हमारे अपने पाईलेट चलाते हैं, परन्तु उड़ान की योजना बनाना रूसियों का काम है। विमान संचालन के अतिरिक्त सब बातों का दायित्व उन्हीं पर है। वे उड्डयन विभाग के असैनिक कर्मचारी हैं जिनमें से किन्हीं दो को दोबारा एक साथ नहीं लगाया जाता।

हम अपने सन्दूकों और गट्ठों के बीच में जम कर बैठ गये। नौ बजे विमान चला और बहुत ऊँचे, रूसी भाग के ऊपर से उड़ता हुआ पोलैन्ड और मास्को की ओर बढ़ा।

मार्ग में देखने को कोई चीज़ न थी। रूसी इस विषय में बहुत सचेत थे और हमें ऐसे नगरों और बस्तियों से बचाकर ले जा रहे थे जिनका हमारे लिये कोई महत्व हो। पोलैंड की कृषि भूमि अवश्य दिखाई दी। ऐसा प्रतीत होता था कि उसमें दलदलें हैं, झाड़ियां हैं और झीलों तक उसमें से कोई पक्की सड़क अथवा रेल की पटड़ी नहीं गुजरती।

विमान साढ़े पांच घंटे तक गड़गड़ाता हुआ उड़ता रहा। हम मास्को के निकट जा पहुँचे थे। विमान बड़े वेग से नीचे उतरने लगा। हम व्नूकोवा के हवाई अड्डे को जा रहे थे जो नगर से कोसों दूर है।

हम यान पथ पर बढ़े जा रहे थे कि सामने एक भीड़ दिखाई दी। हमारा विमान कौतूहल की वस्तु थी क्योंकि उस समय रूस में चार इंजन के विमान नहीं थे और हमारा विमान साल में केवल दो तीन बार ही इधर आता था।

विमान रुका। मैंने अपना टोप सीधा किया और लिपस्टिक को सँवारा। फिर स्वामी के पीछे-पीछे सीढ़ी से नीचे उतरी। राजदूतावास का समस्त अमला हमें मिलने आया था। एक रूसी उच्च कर्मचारी और 'स्वामी' के चार सरकारी एम० वी० डी० भी थे। उनके साथ हमारे समुपदेशी फोआये कोहलर ने हमारा परिचय कराया। रूस में प्रवेश करते समय और वहां से विदा होते हुये इन चार व्यक्तियों से राजदूत की पहली और अन्तिम भेंट होती है। ये छोटे कद के सुगठित व्यक्ति थे। उन्होंने काले वस्त्र पहने थे। उनके टोप नीचे को मुड़े हुए थे। उनकी जांघों के साथ बन्दूकें लटक रही थीं।

मैंने उनसे हाथ मिलाया। उनके हाथ सख्त और रूखे थे। हमें उनके नाम नहीं बताये गये। यह रक्षा केवल अमरीकी और ब्रिटिश राजदूतों को प्राप्त है। इस प्रथा का सूत्रपात १९१९ में हुआ था। जर्मनी के एक राजदूत का वध कर दिया गया था। तभी से चोटी के तीन राजदूतों की रक्षा के लिये रक्षि नियुक्त किये जाते रहे हैं। जर्मनी, ब्रिटिश और अमरीकी राजदूतों की चार व्यक्ति दिन रात रक्षा करते हैं। हमारी केवल पहले चार

व्यक्तियों से भेंट हुई थीं। परन्तु यह आठ अथवा बारह व्यक्तियों का जत्था है। वे बारी-बारी पहरा देते हैं।

जब भी राजदूत अपने घर से बाहर जाता है, वे उसके पीछे-पीछे मोटरकार में बैठकर चलते हैं। अपने या अन्य देश के राजदूतावास के भीतर ही राजदूत को इनकी नज़रों से छुट्टी मिलती है। इसका अभिप्राय राजदूत की रक्षा करना है। यह प्रथा और भी कई प्रकार उपयोगी सिद्ध होती है। इन सुसज्जित व्यक्तियों को पहरा देते देखकर मुझे बहुत खुशी होती है।

हमारी मोटरकार मास्को पहुँची तो बादल छाये हुये थे। थोड़ी देर में वर्षा होने लगी। हवाई अड्डे से नगर जाने में तैंतालीस मिनट लगे। सड़क चौड़ी थी, भूमि समतल। लकड़ी के टूटे-फूटे मकान थे जिन पर रँग रोगन का नाम न था। उनमें से कई तो लट्ठों के बने थे। चारों ओर धुन्ध और नमी छाई थी। जो सड़कें मुख्य सड़क से फटती थीं कच्ची प्रतीत होती थीं। उन पर बच्चे बकरियों को हांकते हुए चले जा रहे थे। कभी-कभी कोई बूढ़ी औरत भी दिखाई दे जाती थी, जिसके पीछे-पीछे गाय होती थी।

नगर में प्रवेश करते ही चौड़ी और साफ सुथरी सड़कें दिखाई दीं। ऐसा आभास होता था कि बहुतसे मकान नये बने हैं, परन्तु कई मकान और वे मकान भी जो आपेक्षाकृत बड़े थे, ऐसे दिखाई देते थे जैसे उन पर गोलाबारी हुई हो। मैंने पूछा तो मालूम हुआ कि उन पर रंग रोगन होना बाकी है या उनकी मरम्मत होने वाली है।

हम मुड़कर एक वर्गाकार में पहुँचे। एक ओर एक पुराना गिरजाघर था। जिसके खंडहरों के बीच में थोड़ी हरियाली थी। यह जगह साफ़ न थी। इससे आगे स्पेसो हाउस था। यह स्थान साफ सुथरा और सुरक्षित प्रतीत होता था जिसके द्वार पर संयुक्त राज्य के राज दूतावास का चर्म बना था।

इस भवन को साफ़ सुथरा कह देना पर्याप्त न होगा। यह एक विशाल महल है जो नव-रीति कला शैली के अनुसार बना है। इसका

निर्माण किसी धनी व्यापारी ने १९१२ ई० में किया था। उसका विवाह किसी शिष्ट कुटुम्ब में हुआ था। क्रान्ति के पश्चात् वास्तविक सरकार ने इस पर अधिकार कर लिया और इसका प्रयोग विदेशी कार्यालय के अतिथि भवन के रूप में होने लगा। वास्तविक विदेशी मन्त्री किकरन की मृत्यु उस कमरे में हुई थी जो मेरा शयनागार है। (मुझे इस बात का विश्वास दिलाया गया है कि उसकी मृत्यु साधारण रूप से शान्ति पूर्वक हुई थी)।

संयुक्त राज्य ने १९३३ ई० में वास्तविक सरकार को मान्यता दी। बिल बुलिट को राजदूत नियुक्त किया गया। उसने इस भवन को राजदूतावस के लिए किराये पर लेने की बातचीत की। यह भवन राजदूत के रहने के लिए था। एक अन्य भवन जिसे 'मोखवाया' कहते हैं दफ्तर के लिए तथा महामात्रावास और अमले के लोगों के रहने के लिए किराये पर लिया गया। हमारी सरकार अब भी इन दोनों भवनों का किराया देती है।

स्पेसो हाउस बहुत ही विशाल भवन है। पहली मंजिल की छत २८ फीट ऊँची है। दूसरी मंजिल की २० फीट। उसमें एक बड़ा दालान है जो ८२ फीट लम्बा है और दो मंजिलों जितना ऊँचा है। इसकी छतमें एक महान फानूस लटकता है। इससे बड़ा फानूस मैंने और कहीं नहीं देखा। यहाँ के लोग कहते हैं कि यह मज़बूती से लगा है और इसके गिरने की सम्भावना नहीं। जनरल बेडिल स्मिथ ने आते ही इसका निरीक्षण कराया था। यदि इसका एक लटकन भी किसी आगन्तुक के सिर पर आ पड़े तो इससे कई अन्तर्राष्ट्रीय उलझनें पैदा हो जायें।

हमारे साथ इसी भवन में राजदूतावास के दो सचिव रहते हैं। डिक डेविस जो हमारा मुख्य सचिव और रूसी विशेषज्ञ है आगामी गर्मियों में जा रहा है (यहाँ विशेषज्ञ का अभिप्राय उस व्यक्ति से है जो किसी नियत रा॰की राजनीति और उसके रीति रिवाजों आदि का अध्ययन कर चुका हो)

जौन कैम्पल अभी एक साल और ठहरेगा। दालान के आगे जो कमरा है वे दोनों उसमें रहते हैं। रोजर का कमरा उससे जरा आगे है।

इस समय स्वामी की सचिवा मार्गेट सल्लीवन की सहायता से जौन गृह संचालन की देख भाल करता है। इसलिए मुझे इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं। चलते समय मुझे भय था कि रूसी नौकरों से मैं कैसे निपटूँगी और सामान आदि कैसे खरीदूँगी। समुपदेशी की पत्नी फिलिस कोहलर हमारे विमान द्वारा चली गई थी। वह स्वयं यहीं रहता है। उसका उत्तराधिकारी आयेगा तो वह जायेगा। इस प्रकार मैं पाँच आदमियों के साथ मिलकर काम करती हूँ जो मुझे बहुत भाता है।

इस समय सबसे विषम समस्या यह है कि एक ट्रंक जिसमें मेरे सबसे कीमती वस्त्र थे यहां नहीं पहुँचा। ऐसा प्रतीत होता है कि वह बैल्जियम में ही रह गया है।

३० जून १९४९

मुझे इसका कोई कारण नहीं दिखाई देता कि नगर में कोई आज़ादी से क्यों न घूम सके। मैंने स्वामी को वचन दिया है कि मैं अपना अभिज्ञान पत्र सदैव अपने साथ रखूँगी। इस बात में मुझमें और किसी रूसी में कोई अन्तर नहीं। यहां बिना वस्त्र धारण किये बाहर जाना इतना बुरा नहीं जितना अभिज्ञान पत्र के बिना बाहर निकलना। स्पेसो के आस पास एक दो विशेष चिन्हों को ध्यान में रखते हुए मैंने इर्द गिर्द की गलियों में कई बार चक्कर लगाये हैं। हमारे पास से आर्बट नाम की एक प्रसिद्ध और प्राचीन सड़क गुजरती है इस पर भी मैं कई बार घूमी हूँ। यह सड़क आर्बट स्क्वेयर से जो क्रैमलिन से ज़रा ऊपर को है आरम्भ होती है। आगे यह दूर तक देहात में चली जाती है जहां रूसके राज्यकर्मचारियोंने 'डाचा' अर्थात् आमोद-भवन बनवा रखे हैं। इस सड़क पर हम केवल नगर की सीमा तक जा सकते हैं। हमारे लिए इससे आगे जाने का निषेध है।

मास्को की सभी सड़कों पर गुप्तचर खड़े रहते हैं। पर इस सड़क पर

उनकी संख्या बहुत होती है। सड़क के बीचों बीच एक सफेद धारी बनी है जो साधारण गाड़ियों को सचेत रखने के लिए है। ये गाड़ियां सड़क के किनारे-किनारे ही चल सकती हैं।

गुप्तचरों का पता लगाना बहुत सुगम है। वे सफेद धारी के साथ २ स्थान-स्थान पर खड़े होते हैं। उनके कपड़ों की काट यहां तक कि उनकी आकृति से ही उनका पता चल जाता है। जौन कैम्पल कहता होता है कि दफ्तर आते समय उन्हें गिनने में उसे बहुत आनन्द आता है। उसे यह एक क्रीड़ा प्रतीत होती है।

सड़क के साथ २ घटिया दर्जे की दुकानें हैं। वहां ऐसा सामान रखा है जिसे देखकर पश्चिमी लोगों को दया आती है। भोजनालयों की खिड़कियों में उन चीजों के नमूने रखे हैं जो वहां बिकती हैं। ये नमूने गत्ते के हैं। गत्ते के चूजे, मांस, पनीर, फल, रोटियां आदि। इन्हें देखते ही मुझे यह विचार आया कि गत्ते के नमूने खाद्य सामग्री की कमी के कारण बनाये गये हैं परन्तु बाद में पता चला कि यह बहुत पुराना रिवाज है और उस समय से चला आ रहा है जब साधारण लोग पढ़ना लिखना न जानते थे। खिड़कियों में रखे नमूनों को देखकर ही उन्हें मालूम हो जाता था कि अन्दर क्या २ बिक रहा है।

अब रूस में किसी चीज का राशन नहीं है। यदि दुकानें खाली पड़ी रहती हैं तो इसका कारण खाद्य सामग्री की कमी है। लोगों का जीवन-स्तर भी बहुत नीचा है। कहते हैं कि युद्ध के पश्चात् स्थिति बहुत सुधर गई है। पश्चिमी संसार से आकर यहां के दीन हीन और मैले कुचैले लोगों पर दृष्टि पड़ती है तो अपनी आंखों पर विश्वास नहीं आता। इससे पूर्व उनकी दशा क्या रही होगी? भिखारियों की भी कमी नहीं।

मैं बाहर निकलती हूँ तो लोग मुझे आंखें फाड़ २ कर देखते हैं। विदेशी लोग कितने ही साधारण वस्त्र पहन कर निकलें फिर भी वे रूसियों से सर्वथा भिन्न दिखाई देते हैं। हमारे जूते विशेष रूप से आकर्षक हैं। उनके अपने जूते पतले तले के और बहुत सस्ते होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है

मानो वे कृत्रिम चमड़े के बने हों। अतिशय जूते कैनवस के होते हैं। उनका रंग रूप भिन्न २ होता है। इन लोगों के अच्छे से अच्छे जूते निकम्ने से निकम्मे ज़िच जूतों के समान प्रतीत होते हैं जो कभी कभी बैल्जियम में दिखाई देते थे। मालूम होता है यहां केवल सैनिकों के जूते ही असली चमड़े के बनते हैं।

जनाना वस्त्रों के विषय में मूक रहना ही बेहतर है आजकल गर्मी में स्त्रियां छींट के अथवा रेश्मन के वस्त्र पहनती हैं। स्कर्ट अर्थात् लंहगे तंग और छोटे होते हैं उनकी काट तथा उनका रूप कुछ भी नहीं होता। पहनने वाली के तन पर वह ठीक बैठे इसका तो प्रयास ही नहीं किया जाता। जुराबें मोटे सूत की होती हैं या रेश्मन की। किसी २ दुकान पर नाईलन की जुराबें भी दिखाई देती हैं। हमारी मुद्रा में एक जोड़े के दाम बारह से पन्द्रह डालर तक हैं। रूसी सरकार ने अपने सिक्के रूबल का मूल्य बढ़ा दिया है जिसके कारण एक डालर की कीमत अब आठ रूबल के बराबर है (इस प्रकार एक जोड़े का मूल्य लगभग पचास रुपये हैं—अनुवादक)

अभी तक यहां बहुत सर्दी और नमी रहती है। सुना है कि रूस की गर्मी में उत्ताप बहुत होता है। मुझे यह जानकर विस्मय हुआ। मुझे निराशा भी हुई है क्योंकि मेरे खेलने और नहाने के वस्त्र यों ही पड़े हैं। यदि कभी सूर्य देवता के दर्शन होते भी हैं तो धूप का आनन्द लेने का कोई अवसर प्राप्त नहीं होता। मास्को से बाहर हमें केवल चार सड़कों पर मोटर कार चलाने की आज्ञा है। इन सड़कों पर भी हम चालीस पचास मील से आगे नहीं जा सकते। इससे आगे तीन स्थान ऐसे हैं जहां हम जा सकते हैं। वहां जाने के लिये विदेशी कार्यालय को ४८ घंटे पूर्व सूचित करना पड़ता है। इनमें सबसे लम्बी यात्रा उस स्थान की है जहां 'ताल्सताय' रहा करता था। 'जैगोस्कं' का मठ और 'क्लिन' अन्य दो स्थान हैं। क्लिन के स्थान पर 'चैकोव्स्की' रहा करता था। इनमें से किसी यात्रा में हमें कहीं बीच में ठहरने की आज्ञा नहीं। हम सड़क पर रुक कर भोजन भी नहीं कर सकते।

३ जौलाई, १६५५

इस समय स्पेसो हाऊस में खूब चहल-पहल है। चार जौलाई के वार्षिक उत्सव की तैयारियां हो रही हैं। कम से कम ४०० व्यक्तियों के आने की आशा है। अमरीकी दूतावास का समस्त अमला, अन्य देशों के सभी राजदूत और चुने हुये रूसी राज्यकर्मचारी निमन्त्रित हैं। उनका स्वागत साढ़े नौ बजे किया जायेगा। शाम का खाना होगा और उसके पश्चात् नाच। विदा होने से पहले फोआए कोहलर ने सब कुछ आयोजित कर दिया था। मेरा इतना ही काम है कि मैं स्वामी और फोआए कोहलर के साथ मिलकर आगन्तुकों का सत्कार करूँ।

ट्रंक मिल गया है। आवेश में आकर ब्रसल्ज़ वालों ने इसे बर्लिन भेज दिया था। उन्हें आशा थी कि यह हमें उस स्थान पर मिल जायेगा। यह वहीं पड़ा है। जब कोई आयेगा तो लायेगा। कम से कम इसका पता लगने से मन को चैन तो मिला है परन्तु मुझे खेद है कि मैं अपने ज़री के सफेद वस्त्र धारण नहीं कर पाऊँगी। मुझे लाल और सफेद बूटी की 'सम्मर' छींट पहननी पड़ेगी। बाहर बग़ीचे में नीले और सफेद रंग के फूलों की खोज करूंगी जिनका एक छोटा गुच्छा मैं अपने कन्धे पर लगाना चाहती हूँ। मैं अपने देश के प्रति प्रेम प्रकट करना चाहती हूँ। फोआए कोहलर ने मुझे बताया कि जो बीज उसके पास थे उनका माली ने पूरा पूरा लाभ उठाया है। परन्तु 'नैस्टर्शियम' 'मैरीगोल्ड' तथा 'लुपाईन' ही दीख पड़ते हैं। मास्को में गर्मी में भी बहुत कम फूल उगते हैं। शहर भर में दो या तीन दुकानें ऐसी हैं जहां फूल मिल सकते हैं। यहां भी प्रायः हरे, कांटेदार पौदे ही दिखाई देते हैं। कहीं कहीं फूल भी दिखाई दे जाते हैं परन्तु गुलाब के फूल और सजावट के अन्य फूल नाम को नहीं मिलते। अच्छा हुआ मैं 'कौन्स्टैन्स स्पराई' से कृत्रिम फूलों का गट्ठा उठा लाई थी। मैंने इनके साथ हरे पत्ते लगा दिये हैं और उन्हें बड़े दालान के कोनों में विशाल गुलदानों में सजा दिया है।

कल हवाई अड्डे से यहां आई तो देखा कि जहां जहां कुछ उग

सकता है वह सब स्थान गोभी और आलू के लिये नियत है। सड़क के साथ साथ भी आलू उगे थे जिनकी देखभाल या तो घर वाले करते थे या गांव की पचायत के सदस्य। क्रान्ति के प्रारम्भिक दिनों में नगर के बहुत से वृक्ष काट दिये गये थे। परन्तु पुनः वृक्ष लगा दिये गये हैं और सड़कों के साथ-साथ 'मेपल' के छोटे-छोटे पौधे दिखाई देते हैं। इनके गिर्द सलाखें लगी हैं।

५ जौलाई, १९४५

चार जौलाई का उत्सव समाप्त हो चुका था। ४०० अतिथि आये थे जिनमें से बहुत से सुबह साढ़े तीन बजे तक रहे। स्वामी और मैं फोआए कोहलर के साथ विशाल दालान के द्वार पर अतिथियों का स्वागत करने के लिये खड़े थे। मैंने कूटनीतिक सहयोगियों पर पहली बार दृष्टि डाली थी। दस बजे तक चारों ओर नर-नारी दिखाई देने लगे। इन में अमरीकी भी थे और विदेशी भी। पुरुषों ने सफेद नकटाई और पदक आदि लगा रखे थे या उन्होंने अपनी अपनी यूनीफार्म पहन रखी थीं। स्त्रियों ने अच्छे से अच्छे फ्राक पहने थे। मेरे मन में अभी भी अपने ज़री दार वस्त्रों की चाह थी।

कोई बारह रूसी आये थे जिनमें ओमिको और उसके साथी भी थे। उसने भूरे रंग का सूट पहन रखा था जिसमें सलवटें पड़ा थीं। इस उत्सव के लिये उसने हजामत करने का कष्ट भी न किया था। वह अपने काम से उठकर आया था। रूसी लोग अपना अधिकतर काम रात को ही करते हैं। परन्तु न्यूयार्क के उत्सवों पर हमने उसे चमक दमक में देखा था इसलिये उसे यहां इस दशा में देखकर हमें खुशी नहीं हुई।

नाचघर में किराये पर आया हुआ रूसी आर्केस्ट्रा बज रहा था। इन लोगों ने हमें अनुग्रहीत किया और अमरीकी नाच की धुनें बजाई। बहुत ही आनन्द आया। मैं ओमिको के पास खड़ी थी। मैंने उसकी पत्नी के विषय में पूछा। उसने कहा कि वह 'कार्ल्सबाद' में अपना इलाज करा रही है। हमने अपने विषय में बातचीत की और कहा कि कूटनीति सम्बन्धी

जीवन में बहुत कठिनाइयां हैं। मैडम ग्रोमिको इलाज से ठीक हो रही थी। मैंने उसे और उसकी पत्नी को बधाई दी और कहा कि अपनी पत्नी को मेरा अभिवादन दें। मैंने उसे याद दिलाया कि हम न्यूयार्क में उस सहभोज में मिले थे जो राजदूत और श्रीमती वारेन आस्टिन ने दिया था।

पैंतालीस मिनट बीत चुके थे। जैसे उन्हें कोई संकेत मिला हो, अन्य सभी रूसी सहभोज के कमरे से एक साथ निकल आये। ग्रोमिको ने हाथ मिलाया। वे उसके पीछे पंक्ति में खड़े हो गये और बाहर चले गये। सहभोज में किसी भी रूसी की पत्नी सम्मिलित न हुई थी। मुझे मालूम हुआ है कि ये भद्र नारियां कभी भी दिखाई नहीं देतीं। कभी कभी मैडम त्रिशिन्सकी अपने पति के साथ आती है, कभी कभी मैडम ग्रोमिको भी दिखाई दे जाती है। नहीं तो पुरुष प्रायः अकेले ही आते हैं। मैं समझती हूँ कि वे यह नहीं चाहते कि उनकी पत्नियां पश्चिमी रीति रिवाजों को देखकर बिगड़ जायें। परन्तु भोजनालयों में भी पुरुष ही साथ साथ भोजन करते दिखाई देते हैं। स्त्रियां वहां भी उनके साथ नहीं होतीं।

१० जौलाई, १९५१

'रैड स्क्वेयर' एक विलक्षण स्थान है। सदियों से यह रूस के राष्ट्रीय जीवन का केन्द्र रहा है। यहीं इतिहास का निर्माण हुआ। यहीं ज़ारों की प्रशंसा और निन्दा हुई। यहीं विजय उत्सव मनाये गये और फांसियां दी गईं। रूसी भाषा के शब्द 'क्रैस्से' अथवा 'रैड' का अर्थ लाल भी है और 'सुन्दर' भी। इस वर्गाकार का सदैव यही नाम रहा है यह बहुत ही विशाल जगह है। यहां लेनिन का मकबरा है, फांसी देने का गोल चबूतरा है और एक ओर 'सैंट बैसिल' नाम का गिरजाघर है। इनके अतिरिक्त वहां और कुछ भी नहीं है। गिरजाघर एक ऊट पटांग ढेर के रूप में है। पुराने चित्रों में यह स्थान खूब भरा हुआ दिखाया गया है। यह लोगों के जीवन का केन्द्र था और यहीं प्रमुख मंडी होती थी।

'क्रैमलिन' का अर्थ है 'दुर्ग'। यह बस्ती कुछ ऊंचाई पर है। यहां से मास्को नदी दिखाई देती है। यहीं से यह नगर बसना आरम्भ हुआ था। क्रैमलिन के भीतर गिरजाघर हैं, मठ हैं, कन्याओं के शिक्षालय हैं जिन्हें अब सरकारी काम में लाया जाता है। इसमें महल भी हैं। सबसे बड़े महल में सर्वोच्च सोवियत के सम्मेलन होते हैं। इस स्थान की बहुत सचेत रहकर रक्षा की जाती है। केवल तीन द्वार प्रयोग में आते हैं और विदेशी केवल एक ही द्वार से अन्दर जा सकते हैं। यह द्वार रैड स्क्वेयर' के विपक्ष की ओर है। मुख्य द्वार जो रैड स्क्वेयर के सामने है एक पूज्य मूर्ति से सुशोभित था। उसके दोनों ओर छोटे-छोठे गिरजाघर थे परन्तु अब सब कुछ गिरा दिया गया है। द्वार के बाईं ओर की दीवार के साथ लेनिन का मकबरा है जो पत्थर का बना है। इस पर लाल और काला रंग किया गया है।

मकबरे के दोनों ओर बैंचों की कतारें हैं। जब महान राज्य उत्सव मनाये जाते हैं तो दर्शक इन पर बैठते हैं। मकबरे के पीछे देवदार के वृक्षों की पंक्तियां हैं इनके पीछे दल के महान व्यक्तियों की कबरें हैं। इनमें तीन अमरीकियों की भी कबरें हैं। (जौन रीड, हेवुड और हिब्बन)।

दिवार गुलाबी रंग की ईटों की बनी है और साठ फीट ऊँची है। वह वर्गाकार के मुख्य पक्ष के साथ साथ चली गई है। उसके ऊपर का हिस्सा अजीब तरह की पूंछ के समान बना हुआ है। यह बहुत प्रभावशाली दृश्य है जो एक बार देखने पर कभी भूलता नहीं। यह सुन्दर भी है और भयानक भी। जिन घटनाओं का इससे सम्बन्ध है उनमें लावण्य भी है और रौद्र भी, किन्तु इसके साथ साथ यह मन में खुबता भी है। गिर्जा-घरों के सुनहरी गुम्बद और उसके अन्दर भवनों की पंक्तियां दोनों प्रकार की भावनायें उत्पन्न करती है। कैसा ही मौसम हो कोई न कोई रूसी प्रत्येक दिन इस पवित्र स्थान की ओर विस्मय से ताकता हुआ मिलेगा। हो सकता है वह नगर के बाहर के किसी कारखाने में काम करने वाला कारीगर हो अथवा देहात से आया हुआ कोई किसान।

कल हम स्वयं उसकी ओर देख रहे थे। हमें इस बात का वास्तविक अनुभव हुआ कि इस वर्गाकार में क्या घटना घट सकती है। ब्रूस्टर की रमणीय युवा पत्नी ऐलिन मोरिस हमें यह स्थान दिखाने ले चली। हम उसकी मोटर कार में जा रहे थे। वर्गाकार के मध्य में पहुँचे तो मोटरकार ने 'फरु फरु' करना आरम्भ किया, फिर 'ठा ठा' का आवाज आई और मोटरकार रुक गई।

उसी समय पन्द्रह बीस ट्रक वर्गाकार में आ गये। उनमें रक्षा पुलिस के आदमी भरे थे जिन्होंने खाकी और नीले रंग की टोपियां पहन रखी थीं। वे बाहर निकले और पंक्तियां बनाकर लोगों को वर्गाकार से बाहर निकालने लगे। हमारा ड्राईवर घबरा गया। हमारी समझ में कुछ भी नहीं आया, परन्तु पुलिस अपने काम में सचेत थी। पहले उन्होंने वर्गाकार को खाली कराया। फिर सड़कों पर से आदमी हटाने शुरू किये। यह दृश्य बहुत ही दिलचस्प था। इस काम में कोई कठिनाई न थी। वर्गाकार को पार करने की आज्ञा केवल एक ही मार्ग से है। नहीं तो पार्श्वों के साथ साथ घूम कर जाना पड़ता है। उससे नीचे की ओर सड़कें 'मोखोवाया स्क्वेयर' में जा मिलती हैं। पुलीसमैनों ने लम्बी लम्बी पंक्तियां बनाईं और लोगों को इस प्रकार धकेल कर ले गये जैसे समुद्र की लहर तृणों को तट की ओर धकेल ले जाती है।

फिर कुछ और ट्रक आ पहुँचे। अब तो हमारा ड्राईवर सख्त हो गया। सौभाग्य की बात कि जब एक सिपाही जिसकी आंखों से आग बरस रही थी हमारी ओर बढ़ा तो मोटरकार चल पड़ी और हम एक ओर हो गये।

बाद में हमें पता चला कि बल्गारिया के साम्यवादी डिमिट्रोव की मृत्यु हो गई थी और वे उसके शव को 'यूनियन' हाल में राज्यक रूप से लिटाने के लिये ला रहे थे। यह भवन किसी समय 'हाउस आफ नोबल्ज़' अर्थात् शिष्ट भवन कहलाता था।

पोलितब्यू के सदस्य और अन्य उच्च राज्यकर्मचारी उसका सत्कार करने के लिये रात को देर तक आते रहे। जब कभी पोलितब्यू के बाद

इधर उधर आते हैं तो उनकी रक्षा के साधन जुटाये जाते हैं महान् नेता सदैव विशाल और काले रंग की पर्देदार मोटर गाड़ियों में चलते हैं। जितना बड़ा या महान नेता होता है उसके पीछे उतनी ही अधिक रक्षक मोटरकारें चलती हैं। कभी कभी एक मोटरकार आगे और एक पीछे चलता है। इन मोटरकारों में विशेष प्रकार के धूप लगे होते हैं। पुलीस वाले और आम लोग इन्हें खूब पहचानते हैं और तुरन्त मार्ग से हट जाते हैं।

१० जौलाई, १९४१

मैं स्पैसो भवन से अभ्यस्त होने लगी हूँ। मास्को का कूटनीतिक जीवन भी मुझे सुहाने लगा है। यह जीवन असलङ्गा के जीवन से सर्वथा भिन्न है। असलङ्गा में होते हुए हमारा सम्बन्ध प्रायः कॉलिजिएट की साधारण जनता से रहता था। अपने सहकारी हमें केवल सरकारी सहभोजों के समय और घनिष्ट मित्र अन्य सहभोजों के अवसर पर ही मिलते थे। यहां ऐसा मालूम होता है कि एक बहुत बड़ा समुद्री बेड़ा है जिस पर विभिन्न वर्गों के, भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों तथा राष्ट्रों के लोग बैठे लहरों पर डोल रहे हैं।

मेरी अधिकतर दिलचस्पी उन लोगों से मिलने में है, जिनके साथ मेरी भेंट का प्रबन्ध सरकारी तौर पर हुआ है। यह सिलसिला इसी सप्ताह आरम्भ हो रहा है। आज मैंने एक घण्टे के अन्तर से दो स्त्रियों से भेंट की। एक मैक्सिको के राजदूत की पत्नी से और दूसरी पोलैंड की राजदूत से। इन अवसरों पर चाय पीने और मीठी पैस्ट्री खाने का ही काम रहता है। पोलैंड की राजदूत ने कौफ़ी पिलाई जिस पर फेंटी हुई क्रीम की तह जमी थी। वह बहुत भली चौकोरमुखी युवती है जिसकी आंखों से उदासी झलकती है।

हमारी बातचीत फ्रांसीसी भाषा में हुई। यह कूटनीतिक सांचे में ढली थी।

"मैडम क्या आपको पधारे बहुत दिन हो गये हैं?"

......'क्या आप परिवार सहित रहती हैं?' इत्यादि। फिर मौसम

के विषय में बात होती रही है। यह प्रसंग देर तक चलता रहता।

मैंने पूछा, 'क्या इसने पहले भी कभी मास्को आना हुआ था?'

उसने कहा, 'हां, युद्ध के दिनों में मैं यहीं थी। मैं पद्पाती सेना में भरती होकर अपने रूसी मित्रों के साथ युद्ध में भाग लेने आई थी।'

मैंने सुना था कि यह भद्र नारी करनल के पद पर नियुक्त थी। सेना के साथ मास्को से बर्लिन गई थी। इसके विषय में मैंने कुछ प्रश्न किये, किन्तु उसने कोई विशेष उत्तर नहीं दिया। हम पुनः मौसम के प्रसंग पर लौट आये। इसके पश्चात् बाज बच्चों की बात हुई और अन्ततः वार्सा के पुनरनिर्माण के विषय में आदेश से वार्ता हुई। मैंने कहा, 'सुनने में आया है कि वार्सा का पुनरनिर्माण एक आश्चर्यजनक घटना है।' इसके पश्चात् यह भेंट समाप्त हो गई।

उपग्रही राजदूतावासों में, और यों तो किसी भी राजदूतावास में निजी बातचीत करना सम्भव नहीं। सदैव यही भय रहता है कि दीवारों के भी कान होते हैं। इन स्त्रियों से बात करते समय मुझे यही ध्यान रहता है कि जो मैं बोल रही हूं उसका लेखा तैयार हो रहा है, मेरी परिपोषिता ही मेरे शब्दों का और व्यवहार का विवरण पहुंचा देगी और उसके व्यवहार का विवरण कोई और।

यह एक अनुचित बात है। पोलैंड की यह भद्र नारी दिलचस्प किस्म की औरत थी और मैं उसके अनुभव से लाभ उठाना चाहती थी। वह भी मुझसे मित्रता स्थापित करने की इच्छुक प्रतीत होती थी। परन्तु जब कोई मित्रता की प्रस्तावना करता है तो हमें बहुत सचेत रहना पड़ता है। यदि इस हाव में सौजन्य है तो प्रस्तावना करने वाले को हानि पहुंचने का डर है। यदि यह सौजन्य रहित है और हम मित्रता का उत्तर मित्रता से देने लगते हैं तो हम अपने आप फंदे में फंस जाते हैं। यह एक भयंकर प्रक्रिया है।

मैक्सीको के राजदूत की पत्नी मैडम रिवास रमणीय युवती है। उसका पति व्यावसायिक कूटराजनीतिज्ञ है। वह यहां और पोलैंड में परोक्ष

में रहा है। युद्ध के दिनों में वह जिस प्रकार मास्को से भागी थी उसका वर्णन अति रोचक था। ज्योंही बम्ब बरसने लगे वह अपने भयभीत सहकारियों के साथ भाग खड़ी हुई। उसने सूट पहन रखा था और किसी अज्ञात कारण से चमड़े की सुनहरी चप्पल। वह राजदूतावास से बाहर आई तो दालान में पड़ी मेज़ से उसने एक पैकेट उठाया जो पेरिस से आने वाली अन्तिम डाक में आया था। उसने इसे वासों से बाहर एक खंदक में जाकर खोला जहां घुस कर वह और उसके साथी ऊपर उड़ते हुये विमानों के गुज़र जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। इस पटारी में उंगलियों के कृत्रिम नख थे और केवल यही सामान था जो भागते समय वह अपने साथ ले गई थी।

मैडेम रिवास क्रैमलिन के कव्वे का कहानी की भी नायिका है। मास्को में कव्वों की भरमार है, जो बहुत काले और विशाल होते हैं। ये बहुत बुरी तरह झपटते हैं और गलो सड़ी चाजों को चट कर जाते हैं। एक दिन मैडेम रिवास ने अपने आंगन में एक कव्वा देखा जिसका एक पंख टूट कर लटक गया था। उसे कव्वे पर दया आगई। घर लाकर उसने कव्वे की मरहम पट्टी की। कव्वा बहुत बड़ा था इस लिये घर के भीतर खुला छोड़ने में कुछ व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। उसने कव्वे के लिये लाल रंग की फलालैन की छोटी सी पतलून बना दी, जो उसके काले पंखों के साथ बहुत सुहाती थी। पंख ठीक हो गया और लाल रंग की पतलून पहने पहने कव्वा सीधा क्रैमलिन की ओर उड़ गया। संभव है वह 'चाचा जो' के पास चुगली करने गया हो।

बूरोबिन ने रिवास परिवार को आदेश दिया है कि वह मकान खाली कर दिया जाये। (इस आदेश का कारण कहा न था) बूरोबिन सोवियत विदेशी कार्यालय का विभाग है। विदेशी कूटराजनीतिज्ञों की जो भी आवश्यकतायें होती हैं, चाहे उन्हें क्रिसमस कार्डों की आवश्यकता हो चाहे अपने गराजों पर छतें डलवानी हों। यह उन सभी को पूरा करता

है। अन्य रूसी राज्य विभागों के समान यहां भी दफ़्तरशाही और नौकरशाही का दौर दौरा है।

रीवास से किसी उपरही मिशन के लिये मकान खाली करया जा रहा था। मैक्सीको के राजदूत के लिये इसकी अपेक्षा बहुत छोटा सा मकान नियत किया गया। इसमें केवल चार कमरे थे और नौकरों के रहने का कोई प्रबन्ध न था। रीवास ने कहा कि उन्हें चौदह आदमियों के लिये स्थान चाहिये। सोवियत सरकार की ओर से उत्तर मिला, 'चार शयनागार आपके लिये पर्याप्त हैं। आप और क्या चाहते हैं?'

बेल्जियम की राजदूत चंतल गौफिन ने बूरोबिन के व्यवहार की इस से भी विचित्र कहानियां सुनाई हैं। बेल्जियम का राजदूत एक साल तक होटल में रह चुकने के पश्चात् अब राजदूतावास में गया है। चंतल के पास मकान तो है परन्तु कोई नौकर नहीं। दिन में उसके यहां एक काम करने वाली धाया आती है, और बस। उसकी कठिनाइयों का एक कारण यह भी है कि उसे रूसी भाषा खूब आती है। वह एक साहसी युवती है। वह किसी भी रूसी की सहायता लेना नहीं चाहती। राज्य-कर्मचारियों से तो क्या वह दुकानदारों और नौकरों से भी किसी सहायता की प्रत्याशा नहीं करती। उसका पति लुई स्वतन्त्र वृत्ति का व्यक्ति है और वह सदैव अपने अधिकारों की रक्षा के लिये कटिबद्ध रहता है। इसलिये बेल्जियमवासियों के मार्ग में विशेष कठिनाइयां आती हैं।

लुई ने मुझे अपनी एक नौकरानी की कहानी सुनाई जो उन्हें बहुत पसन्द थी। वह एक मेहनती लड़की थी जो सवेरे उनके यहां काम करती और दोपहर बाद किसी कारखाने में। एक दिन राजदूतावास के द्वार पर खड़े सन्तरी ने उसे टोका। उससे अगले दिन संतरी ने लड़की को एक पत्र दिया जिस पर लिखा था कि वह बेल्जियम के राजदूत अथवा किसी अन्य विदेशी के यहां काम नहीं कर सकती। लड़की ने इसका कारण पूछा और कहा कि उसे पैसों की आवश्यकता है। इसका उत्तर मिला कि वह अभी अवयस्क है और यदि वह विदेशियों के यहां काम करना चाहती

है तो उसे दो साल तक किसी विशेष पाठशाला में शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। लड़की को बहुत क्रोध आया किन्तु वह कर ही क्या सकती थी। उसे गौफ़िन से कहना पड़ा कि वह नौकरी छोड़ रही है।

उसके पश्चात् उनकी दूसरी नौकरानी ने लुई को बताया कि उन दोनों को अपने स्वामी के विषय में सूचना देनी पड़ती थी। उन्हें कहा गया था कि वे अपने स्वामी के आचरण और व्यवहार का अध्ययन करें। वे क्या खाते पीते हैं, कौन सी औषधियों का प्रयोग करते हैं? दांत किस समय साफ करते है? क्या वे ब्रुशों को सदैव एक ही स्थान पर रखते हैं? क्या उनका नैत्य का जीवन निर्धारित है? यदि वह बदलता रहता है तो क्या उन्हें घबराहट तो नहीं रहती? क्या वे एक दूसरे के साथ लड़ते झगड़ते हैं? अपने बच्चे के प्रति उनका कैसा व्यवहार है इत्यादि। उन्हें सभी छोटी-छोटी बातों के विषय में सूचना देने का आदेश था। इस समस्त जानकारी को यदि एक साथ रखा जाय तो उनकी जीवन शैली का पूरा चित्र प्राप्त हो सकता था।

ये लड़कियां इतनी समझदार और शिक्षित नहीं होतीं कि गुप्तचरों का काम कर सकें परन्तु उनके परिवेदन से किसी व्यक्ति के विषय में पर्याप्त जानकारी हो सकती है। यदि सच्ची २ बात बताई जाय तो कुशल व्यक्ति इससे कई परिणाम निकाल सकता है। मेरा विचार है कि हमारे राज-दूतावास के विषय में भी इस प्रकार की सूचना जाती रहती है। इसके अतिरिक्त दो तीन विशेषज्ञ भी इस काम के लिए नियुक्त हैं। उदाहरणतः हमारा द्वारपाल माईक, जो मुख्य सेवक रहा है और कई भाषायें जानता है, यह काम करता है।

स्पैसो हाउस के अमले पर बीस व्यक्ति हैं। पांच स्त्रियां और हैं जो तहखाने में काम करती हैं और कपड़े धोने की मशीन का संचालन करती हैं। यहां अमरीकी बस्ती के सभी लोगों के वस्त्र धुलते हैं। दो भोजन बनाने वाले हैं। रसोईघर में एक दासी है। एक बर्तन साफ करने वाली है। 'चिन' और 'ट' ओंग' दो चीनी हैं। स्टीफन पैन्ट्री में काम करता

है। दो स्त्रियां नीचे झाड़ू लगाती हैं, तीन नौकरानियां ऊपर हैं। दो ड्राइवर हैं, दो टेलीफोन चालक, एक माली और दो पहरेदार।

इन सबको दिन में तीन बार भोजन देना पड़ता है। दो चीनी लड़कों को छोड़कर किसी को भी काम का अनुभव नहीं। चिन और ट ओंग पन्द्रह साल हुए डिमारी बैस के साथ जो एक विदेशी संवाददाता था मास्को आये थे। उन्होंने रूसी लड़कियों से विवाह किया। उनके बच्चे हुए और वे यहीं राजदूतावास में काम करने के लिए ठहर गये। उनके ठहरने का कारण यह था कि उन्हें अपने परिवार को रूस से बाहर ले जाने की आज्ञा प्राप्त न हो सकी। दोनों स्त्रियां 'स्पेसो' में नौकर हैं। वे अच्छी लड़कियां हैं और उनके पति उन्हें बहुत चाहते हैं।

चिन घर में मुखिया का काम करता है। ट, ओंग जो दूसरे दर्जे पर है उसका वफादार सहायक है। ये दोनों हमारे घर का बहुत ध्यान रखते हैं। उनका व्यवहार आदर्श चीनी नौकरों का सा है। श्रीमती बैस ने उन्हें कई बार अमरीका आने के लिए कहा वे अपने परिवार को छोड़ने के लिए तैयार नहीं। इन आदमियों को तो रूसी सरकार रूस से बाहर जाने की आज्ञा दे सकती है, परन्तु उनके परिवार को नहीं। रूस में विदेशियों और रूसियों के आपसी विवाह विधिवत नहीं समझे जाते, अर्थात् इस प्रकार के विवाहों को इस देश में मान्यता नहीं मिलती।

सवाल उठता है कि हम राजदूतावास में रूसियों को क्यों नौकर रखते हैं। अमरीका से क्यों अपने साथ नौकर नहीं ले आते? वीसा मिलने पर भी अमरीका से नौकरों को यहां लाना बहुत महंगा पड़ेगा।

रात हमारा पहला सहभोज था। यह वास्तव में केवल शाम का खाना था। अड़तीस अतिथि आये थे। बड़े दालान में एक खुले स्थान पर छोटी २ मेजें लगा दी गई थीं। यह एक उच्च कोटि के रात्री क्लब का एक अच्छा खासा नमूना दीख पड़ता था। जब हमने इस बड़े दालान को देखा तो हमें विचार आया कि इसे इसी प्रकार के उत्सवों के लिए प्रयुक्त करना उचित होगा। मेजों पर बत्तियां रखीं थी और शैम्पेन सजी थीं।

खिक डैविस के फोनोग्राफ का गान हो रहा था। । चौदह स्त्रियां थीं जिन्होंने सम्भर के कपड़े के फ्राक पहन रखे थे। चौबीस आदमी थे जो उनके साथ बारी-बारी नाच रहे थे। यह उत्सव बहुत ही आनन्ददायक रहा।

यह युवकों और युवतियों का सहभोज था। मिशनों के शिरोमणि इसमें न आये थे। निम्न श्रेणी के सम्मुपदेशी, सचिव आदि आये थे। इनमें बैल्जियम, यूनान भारत, ब्रिटेन, मैक्सीको और फ्रांस के प्रतिनिधि आये थे। एक इज़राईली जोड़ा था। पति राजदूतावास का अध्यक्ष था। उसकी पत्नी वियाना की रहने वाली अति रमणीय और सुसंस्कृत नारी थी। उसने बहुत सुन्दर वस्त्र पहन रखे थे। प्रायः फ्रांसीसी और अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग हो रहा था। इस प्रकार के उत्सवों के लिए रूसियों को निमन्त्रित नहीं किया जाता। यदि उनको निमन्त्रण दिया भी जाये तो वे नहीं आते। उपग्रही केवल राष्ट्रीय दिवस-सम्बन्धी उत्सवों पर ही आते हैं।

भोजन के समय क्या २ परोसा जाये इस पर कुछ प्रतिबन्ध लगे हैं। फिर भी हमारी बावर्चिन, फ्रीडा ने जो फिनलैंड की रहने वाली है, हमारा मन भाता 'चिकन टैट्राज़ीनी' तैयार कर दिया। सलाद और आईसक्रीम भी थी। स्वामी और रोज़र ने इतना अच्छा 'व्हिस्की पंच' बनाया कि इसे पीते ही सब स्फूरित हो उठे। यह सहभोज वास्तव में फोआए कोहलर और इमर्सन परिवार के सम्मान में हो रहा था। फोआए कोहलर जो हमारा सम्मुपदेशी है, यहां से विदा होकर जा रहा था। वह हमारा रूसी विशेषज्ञ है।

इमर्सन परिवार के लोग बहुत पक्के हैं। वे नगर से बाहर एक टूटे फूटे मकान में दो साल तक रहते रहे। दीवारों की दरेड़ों में से हवा सुंकारती हुई आती थी। नालियों का पानी नीचे तहखानों में भर जाता था। उन्होंने इस स्थान को इसलिए पसन्द किया था कि यहां एक बाग़ है और साथ ही एक पाठशाला है जहां उनके दो बच्चे पढ़ते थे। एक नौ साल का दूसरा सात साल का। रूसी स्कूलों में दाखिल होने वाले वे

अन्तिम विदेशी बच्चे थे। उपग्रही शायद दाखिल हो सकते हैं, परन्तु हमारे बच्चों को किसी प्रकार के स्कूल में जाने की आज्ञा नहीं।

श्रीमती इमर्सन ने कभी कोई उलाहना नहीं दिया। इस परिवार ने बड़ी वीरता से इस छोटे से गांव में अपनी राष्ट्रीय ध्वजा के मान की रक्षा की। बच्चों ने पाठशाला में अच्छे अंक प्राप्त किये। किसी बच्चे के माता पिता श्री इमर्सन और उनकी पत्नी को मिलने नहीं आये। परन्तु वे बच्चों को आईसक्रीम और चौकोलेट देते थे जिससे प्रलोभित होकर अन्य बालक उनके बालकों के साथ खेलने लगे। इमर्सन परिवार के बच्चे भी रूसियों के घरों में जाने लगे। समस्त नगर में ऐसा ही होना चाहिए था और एक समय ऐसा ही होता था, परन्तु अब बच्चों के खेल पर भी प्रतिबन्ध लगा दिये हैं।

मास्को में मकानों की कितनी दिक्कत है इसका विवरण भी संभव नहीं। हमारे पास स्पेसो है महामात्रावास भवन मोखोवाया भी है जिसमें विवाहित कर्मचारियों के लिए निवास स्थान है। इसके अतिरिक्त हमें बाहर कुछ अन्य मकान भी मिले हुये हैं। सेना के उच्च कर्मचारियों के लिए दो मकान हैं। सेना के आधीन एक और मकान है जिसका प्रयोग हम भी करते हैं। यह सैनिकों के लिए और नर लिपिकों के लिए है। निजी रूप से हमें कोई भी मकान किराये पर नहीं मिल सकता। होटल के कमरे भी एक आदमी को या एक जोड़े को दिये जाते हैं और वे किसी अन्य को ये कमरे नहीं दे सकते। इनमें से किसी भी मकान की हालत अच्छी नहीं। कोई भी आधुनिक ढंग से नहीं बना। वे सुखदायक भी नहीं। स्पेसो और मोखोवाया में गरम पानी मिल जाता है, परन्तु अन्य भवनों में गरम पानी के केवल फव्वारे हैं। यह पानी नहाने के काम आता है, परन्तु हाथ धोने के लिए या रसोई घर के प्रयोग के लिए गरम पानी नहीं मिलता।

रोजर भवन निर्माता का शिष्य बन गया है। वह चाहता है कि उसे रूसी भाषा बोलने का अच्छा अभ्यास हो जाये। इस मतलब के लिए

यह बहुत अच्छा काम है। वह मजदूरों का जमेदार है और उनके साथ मिलकर काम भी करता है। इस समानता के देश में रूसियों को यह विश्वास नहीं होता कि राजदूत का पुत्र खुशी २ मजदूरों के साथ काम करता है। रूसी स्वयं कोटि का बहुत विचार रखते हैं।

रोजर ने आज ठीक नौ बजे काम आरम्भ किया। मैं जानना चाहती हूँ कि वह कैसा काम करता है। रूसी मकानों की मरम्मत का अनुभव घर पर बहुत उपयोगी सिद्ध होगा और पत्ति के रूप में वह इससे बहुत लाभ उठा सकेगा। पंजि में उसे एफ० ऐस० ऐस० ४ का कर्मचारी दिखाया गया है। असैनिक सेवकों में उसका वेतन सबसे कम है। मैं गर्व नहीं करती, परन्तु मुझे विश्वास है कि अमरीका करदाताओं को उसके काम से खसारा न रहेगा। वह सचेत और उत्साही कार्यकर्ता है।

१०, जौलाई, १९४६

हम अभी-अभी रूसी वायुसेना की प्रदर्शिनी देखकर वापिस आये हैं यह एक महान् वार्षिक उत्सव है। इस अवसर पर मार्शल स्तालिन, मोलितव्, उच्च राज्यकर्मचारी और रूसी राजनयक प्रतिवर्ष सहयोग देते हैं। शिष्ट अतिथियों को तुशीनो के हवाई अड्डे के मुख्य मंडप में बैठने के लिये टिकट दिये जाते हैं। सामान्य जनता मैदान में बैठती है। जनता के पीछे सैनिक कन्धे-से-कन्धा मिलाये खड़े होते हैं और इस प्रकार वे एक जीवित बाड़ के समान प्रतीत होते हैं।

अपनी मोटरकार पर बिल्ला लगाकर हम नगर से बाहर चले। हमारे जाने के लिये विशेष मार्ग नियत थे जिन पर दोनों ओर लाल रंग के झंडे बांसों पर लटक रहे थे। पुलीस की पंक्तियों में से गुज़रने से पहले मैदान में पहुँचते ही हमें अपने कागज़ पत्र दिखाने पड़े। हमारे राजदूतावास से केवल स्वामी, रोजर और मैं, तथा समुपदेशी और उच्च सेना सहचारी निमंत्रित किये गये थे।

केन्द्र में एक भवन था। उसके दाईं ओर एक चबूतरा बना था। हमें वहीं ले जाया गया। यहीं हमारे अन्य कूट राजनीतिक सहकारी बैठे हुये

थे। रूस के विदेशी विभाग के कुछ चुने हुये राज्य कर्मचारी और कई प्रकार के गुप्तचर थे जो बिना वर्दी की पुलीस भी वहां बैठी थी। सोवियत रूस के उच्च नेता छतों और छज्जों पर बैठे थे। छज्जे का मध्य भाग स्तालिन और पोलितब्यूरो के लिये नियत था।

साधारण जनता इस दृश्य को दूर से ही देख सकती थी—बहुत ही दूर से। निकट से देखने का अधिकार केवल शिष्ट व्यक्तियों को ही था। इस पर भी स्तालिन के आस पास उसके खास सहचर ही थे हम उसके आसन से सौ गज़ से भी अधिक की दूरी पर बैठे थे। हमें विचार था कि जनरलसिमो को देखने का शायद यही एक अवसर है, हममें से कई सौभाग्यवश अपने दूरबीन उठा लाये थे। साधारणतः वह जनता के सम्मुख साल में केवल दो बार आता है। एक तो मई दिवस की सेना प्रदर्शिनी के समय और एक वायु प्रदर्शिनी के समय।

मध्याह्न में कुछ क्षण बाकी थे कि मुख्यद्वार से कई काले रंग की मोटर कारें आने लगीं जिनके पीछे-पीछे रक्षित कारें थीं। इनमें से जो व्यक्ति बाहर आये वे महत्वशाली प्रतीत होते थे। जिन लोगों को हम जानते थे उनमें से एक मोलोतोव था, एक बरिया और कुछ मार्शल थे। इसके पश्चात् एक छोटी सी खुली मोटरकार आई। इसमें हथियारों से सुसज्जित सैनिक बैठे थे। इसके पीछे एक बहुत लम्बी और बहुत ही काली मोटर-कार आई जिसके पीछे सैनिकों से भरी एक और मोटरकार थी।

केन्द्रीय मंडप की सीढ़ियों के पास आकर सहचर रुक गये। मार्शल स्तालिन जिसने भूरे रंग की वर्दी पहन रखी थी बड़ी मोटर में से बाहर निकला। उसका कदम भारी था और वह सचेत रूप से सीढ़ियों पर चढ़ रहा था। वह द्वार में से गुज़रा और थोड़ी देर बाद ऊपर के छज्जे में आ पहुँचा। उसे पोलितब्यूरो के सदस्यों ने घेरा हुआ था।

नीचे सामने की ओर सैनिक बाजा बजने लगा जिसने राष्ट्रीय गान की धुन निकाली। प्रदर्शनी आरम्भ हो गई। रूसियों ने 'इन्टरनेशनेल' का परित्याग कर दिया है। नया गान लगभग वैसा ही रमणीय है जैसा

क्रान्ति से पूर्व का गान होता था उसके बोल होते थे। 'ए लाईफ़ फ़ार दा ज़ार' अर्थात् 'ज़ार का हो दीर्घ जीवन'। हम बहुत दूर थे। 'स्वामी' की दूरबीन की सहायता से हमने उस स्थान पर दृष्टि डाली जहां स्तालिन और रूस के मुख्य नेता बैठे थे। हमने भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को पहचानने का प्रयास किया और यह जानने का प्रयत्न भी किया कि स्तालिन के मुकाबले में उनका कौन सा दर्जा है। यह एक बहुत महत्वपूर्ण बात है। यदि कोई व्यक्ति स्थालिन की नज़रों से गिर जाता है तो इस भव्य पंक्ति में भी उसका स्थान बहुत नीचा हो जाता है।

इसमें सन्देह नहीं कि यह उत्सव बहुत ही शानदार था। स्तालिन के पुत्र वासिली स्तालिन ने जो वायुयान उड़ाने में दक्ष है पहल की। वह एक छोटे विमान में बैठ कर उड़ा जिसमें केवल एक ही व्यक्ति के बैठने का स्थान था। उसके पश्चात् नर और नारियों ने वायुयान उड़ाने के करतब दिखाये। बनावटी लड़ाइयां हुई। ग्लाइडरों और वायुयानों का प्रदर्शन भी बहुत प्रभावशाली था। अन्त में छतरियों से उतरने की क्रिया का प्रदर्शन किया गया था जो बहुत ही रमणीय था। सैकड़ों छतरियां जिनका रंग उन छतरियों के समान था जो समुद्री तट पर प्रयोग में आती हैं समस्त मैदान में फैल गईं।

यह उत्सव दो घंटे तक रहा। इसके पश्चात् स्तालिन छज्जे से लोप हो गया। वह जैसे आया था वैसे ही चला गया। पीछे-पीछे अन्य मोटर-कारें चल पड़ीं। हमें मंडप के पीछे की ओर ले जाया गया। वहीं हमारी मोटरकारें आ गईं।

जिस मार्ग से हम आये थे नगर को उसी मार्ग से लौट रहे थे। इस पर सन्तरी भारी संख्या में खड़े थे। कभी-कभी सड़क के बीच से बड़ी तीव्र गति से कोई लम्बी और काली मोटरकार गुज़र जाती। इससे पता चलता था कि कोई बड़ा नेता लौटकर घर जा रहा है। कुछ सड़कें ऐसी हैं जिन पर मध्य का मार्ग केवल ये महान नेता ही प्रयुक्त कर सकते हैं।

राजनयकों की मोटरकारों और अन्य कारों को एक पंक्ति में सड़क के साथ-साथ चलना पड़ता है।

मेरे मनमें बहुत से प्रश्न उठते हैं। मुझे यहां आये अब दो सप्ताह हो गये हैं और नौकरों को छोड़कर मैंने किसी रूसी से बात-चीत नहीं की। या उन रूसियों से बात की है जो विदेशी विभाग से सम्बन्ध रखते हैं और जो चार जौलाई के उत्सव पर हमारे घर आये थे अथवा अन्य-राज्य कर्मचारियों से जिनसे कभी-कभी किसी राष्ट्रीय दिवस के उत्सव पर मेरी भेंट हुई है। ऐसा प्रतीत होता है कि साधारण रूसियों से मिलने का अवसर हमें कभी भी प्राप्त न होगा। मैंने प्रोमिको से बात चीत की थी। परन्तु केवल अपने मास्को आने का कारण ही उसे बताया था और उसकी पत्नी के स्वास्थ्य के विषय में पूछा था। अन्य राज्य कर्मचारियों से केवल अपने मास्को आने और मौसम के विषय में बात-चीत की थी।

'स्वामी' ने रूसी सरकार को लिखा है कि क्या मैडम विशिन्सकी से या अन्य भद्र नारी से जो किसी राज्यकर्मचारी की पत्नी हो मेरी भेंट हो सकती है। अभी तक कोई उत्तर नहीं आया। इटली के राजदूत की पत्नी मैडम ब्रोसियो ने जिसका राजनयकों में उच्च स्थान है मुझे बताया है कि रूसी सरकार यह नहीं चाहती कि हम लोग रूसी राज्यकर्मचारियों की पत्नियों से भेंट करें। हम उनमें से किसी के साथ मित्रता नहीं कर सकते। जिन रूसियों को हम पहले से जानते हैं वे भी हमारे साथ मित्रता नहीं कर सकते। यदि हम उन्हें निमन्त्रित करते हैं तो वे हमारे निमन्त्रण को अस्वीकार कर देते हैं। मैं यह नहीं चाहती कि कोई मेरा मत अस्वीकार करे, न ही मैं अपना मत बदलना चाहती हूँ। परन्तु मेरे मनमें स्नेह है और मैं इन लोगों से अपने मनकी कहना चाहती हूँ।

१६ जौलाई १९५२

रोजर, जौन पेप्पिल और मैं कल नगर के बाहर न्यू सेंडन्ज़ के स्थान पर एक प्रसिद्ध पुराने मठ को देखने गये। यहां दो गिर्जाघरों को पुनः

निर्माण हुआ है। इनमें से एक अजायबघर के रूप में प्रयोग में आता है और दूसरा आराधना के लिये।

क्रान्ति से पूर्व मास्को में सैकड़ों गिर्जाघर थे। मेरा विचार है कि आजकल केवल दस गिर्जाघर ऐसे हैं जहां आराधना हो सकती है। हम गिर्जाघर के अन्दर गये। रूढ़ीवादी रूसियों का एक गिर्जाघर मैंने पेरिस में कई साल हुये देखा था। उस प्रकार का यह दूसरा गिर्जाघर था। सन्ध्या समय की आराधना आरम्भ होने वाली थी और लोगों की भीड़ लगी थी। आराधना करने वालों में अधिकतर स्त्रियां थीं जो बहुत वृद्ध और निर्धन प्रतीत होती थीं। उन्होंने मैले कुचैले कपड़े पहन रखे थे और सिरों पर शाल लपेट रखी थीं। वे अनन्य भक्त मालूम होती थीं। वे बार-बार सलीब का चिह्न बनातीं, घुटनों के बल बैठतीं और भूमि पर माथा टेकतीं।

वहां दो पादरी थे। वे दोनों युवक प्रतीत होते थे। उन्होंने अपना कर्तव्य बड़ी सावधानी और सौन्दर्य से पालन किया। गिर्जाघर अन्दर से बहुत सादा था। किन्तु दीवारों पर बहुत सी मूर्तियां बनी थीं। जिनके पास लालटेनें लटक रही थीं। प्रत्येक मूर्ति के सामने लोगों की पंक्तियां खड़ी थीं प्रत्येक व्यक्ति अपनी इष्ट मूर्ति का चुम्बन करने का इच्छुक था। गायन भी हो रहा था। कुछ लोग धूप लिये इधर-उधर घूम रहे थे। पादरियों ने एक जलूस का रूप बनाया और वे एक मूर्ति से दूसरी मूर्ति की ओर जाने लगे।

इस क्रिया में बहुत चमक-दमक थी। प्राचीन समय में इस गिर्जाघर में और भी अधिक चमक-दमक रही होगी। सैकड़ों बत्तियां जलती थीं। मूर्तियों के ऊपर जड़ाऊ और चमकीले छत्तर थे। (अब ये छत्तर हटा दिये गए हैं। या तो इन्हें पिघला दिया गया है या अजायबघरों में रख दिया गया है)। इनके अतिरिक्त तिल्लेदार कपड़े होते थे और सोने चांदी के बर्तन। अब इनमें से यहां कुछ भी नहीं है।

२० जौलाई, १९४९

मेरे दृश्यावलोकन में बाधा आ गई है और मुझे लोगों से भेंट के लिये आना जाना पड़ता है। मैं प्रयास कर रही हूँ कि जल्दी ही यह काम निपट जाये। मैंने ज़ेच की राजदूत से भेंट की है। वह एक गुस्सेवाली युवती है उसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि वह एक कट्टर साम्यवादी है। उसने बहुत रूखापन दिखाया शायद इस व्यवहार का कारण वह बात चीत थी जो उसके साथ स्वामी ने १४ जौलाई को फ्रांसीसी राजदूतावास में की थी।

स्वामी ने कहा था, 'डैविस कप के मैचों में आपकी टीम ने बहुत गर्वपूर्ण काम किया है।'

इसका उत्तर उसने संक्षेप में दिया। अगले दिन हमने पढ़ा कि इन खिलाड़ियों ने इंग्लैंड में शरण ले ली है। उसने समझा होगा कि स्वामी उसे झांसा देने का प्रयत्न कर रहे . ।

मेरा ट्रंक अभी भी यहां नहीं पहुँचा। हमारा नया मन्त्री समुपदेशी बैली बारबुअर अगले सप्ताह आ रहा है। आशा है वह इसे साथ ले आयेगा।

रोजर ने कहा कि कल उसके कार्यकर्त्ताओं ने विषम समस्या खड़ी कर दी। इनमें एक युवक था जो बहुत अच्छा काम करता था। सवेरे की डाक से उसे एक पत्र मिला उसमें उसे सैनिक सेवा के लिए बुलाया गया था। इस आदमी को इससे पहले कोई सूचना न मिली थी और न ही उसकी कोई परीक्षा हुई थी। उसे केवल यह आदेश मिला कि वह पांच दिन का भोजन लेकर काम पर हाज़िर हो। रूस में आदेश स्वच्छन्द रूप से दिये जाते हैं। इनके विषय में कोई आपत्ति नहीं उठाई जा सकती। न कोई अपील हो सकती है। शायद उसे इसलिए बुला लिया गया था कि वह हमारा सबसे अच्छा आदमी था। इसका अभिप्राय हमें तंग करने के अतिरिक्त और क्या हो सकता था।

रोजर को अपने काम में बहुत आनन्द आता है। वह साथ-साथ

रूसी भाषा भी सीख रहा है। उसे मिस्त्रियों को राजों को और सईसों को आदेश देने पड़ते हैं। उसने रूसी भाषा में एक परीक्षा दी है। यह परीक्षा राजदूतावास के कुछ उच्चकर्मचारियों ने ली थी। वे देखना चाहते थे कि क्या वह इस योग्य है कि उसे रूसी भाषा के विशेष अध्ययन के लिये भेजा जावे। रोजर इस परीक्षा में सफल रहा। बोर्ड के एक सदस्य ने कहा कि रोजर की योग्यता को देख कर कालिज के शिक्षा के प्रति उसके मन में सम्मान उत्पन्न हो गया है। ब्रिस्टन कालिज में एक साल तक रूसी भाषा का अध्ययन करने से रोजर ने इस भाषा का काफ़ी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। यह सौभाग्य की बात थी कि उसने यह भाषा सीख ली थी।

राजदूतावास में जितने भी युवक और युवतियां हैं वे सब जल्दी से जल्दी रूस भाषा का काम चलाऊ ज्ञान प्राप्त करने का भरसक प्रयत्न करते हैं। स्त्रियों को इतनी रूसी भाषा अवश्य आनी चाहिये कि वे नौकरों को आदेश दे सकें। अंग्रेजी समझने वाली केवल एक या दो ही नौकरानियां हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारी मुख्य बावर्चन, फरीदा, और उसका पति जो माली है, कुछ साल संयुक्तराज्य में रह आये हैं। ये लोग फिनलैण्ड के रहने वाले हैं। जिस समय रूसियों ने केरिलिया का अधिग्रहण किया वे वहां आ गये थे और उन्हें रूस के नागरिक घोषित कर दिया गया था। चिन अंग्रेज़ी बोलता है। द्वारपाल भी इसी भाषा का प्रयोग करते हैं।

घर में होते हुए मुझे सदैव यह विचार रहता है कि मेरे आचार व्यवहार के विषय में विरोधियों को सूचना पहुँचाती रहती है। हमारे घर में रूसी नौकर हैं इसलिये इसका कोई उपचार नहीं। यह अच्छी बात है कि मेरा जीवन दोषरहित है। जहां तक मुझे इसका बोध है सड़कों पर मेरा पीछा नहीं किया जाता और मैं स्वतन्त्रता से घूमती हूँ। यह भी हो सकता है कि मुझे इसका बोध ही न हो। रूसी लोगों के देखभाल रखने के उपाय बहुत जटिल हैं। इनके यहां नर या नारी किसी के पीछे-

पीछे नहीं चलते। देख-रेख करने वाला सड़क के दूसरी ओर खड़ा रहता है और ताकता रहता है। या हो सकता है कि कोई व्यक्ति कार में बैठकर आपकी गतिविधि पर आंख रखता हो। कुछ भी हो, हमें यह आदेश है कि हम अपने अभिज्ञान पत्र सदैव अपने साथ रखें।

हमें यह देख कर बहुत क्रोध आता है कि रेडियो द्वारा ज़रा अमरीका से समाचार-आदि सुनने का प्रयास करो तो 'घर घर' की आवाजें आने लगती हैं। इसका अभिप्राय यह है कि किसी तरकीब से अमरीका से आनेवाली आवाज़ का मार्ग रोक दिया गया है। मास्को से बाहर जाकर सुनो तो आवाज़ कुछ अधिक साफ़ आती है। यहां के नगर में यही चेष्टा करते हैं कि अमरीका से प्रसारित होने वाला रूसी भाषा का कार्यक्रम मार्ग में ही शिथिल हो जाये। अंग्रेज़ी भाषा का कार्यक्रम साफ़ आता है।

ब्रिटेन से प्रसारित हुये कार्यक्रम का भी यही हाल है। वहां के रूसी कार्यक्रम को तो बिलकुल ही दबो दिया जाता है। यदि कार्यक्रम को शिथिल न भी किया जाये तो भी रूस में इसे सुनने वालों की संख्या न्यून ही रहेगी। रूस में एक कमरे में कभी भी एक आदमी अकेला नहीं रहता। मकानों की बड़ी दिक्कत है इसलिये एक कमरे में कई-कई आदमी रहते हैं। कोई भी व्यक्ति यह न चाहेगा कि उसे अन्य विदेशों से आये कार्यक्रम को सुनते हुये कोई देखे।

रूसी घर टूटे-फूटे हैं फिर भी यहां आग लगने की वारदातें बहुत कम होती हैं। इसका कारण भी यही बताया जाता है कि घर में सदैव कोई न कोई व्यक्ति रहता है और यदि आग लगे भी तो वह तुरन्त बुझा देता है।

पुलिसमैन भी स्थान-स्थान पर खड़े रहते हैं। गर्मी के मौसम में वे सफेद सूती कोट और काली पतलून पहने रहते हैं। उनके जूते भी उन्हीं के नाप के होते हैं। कमर के साथ बन्दूकें लगी होती हैं। इस वेष में वे भले आदमी प्रतीत होते हैं। नगर में वे हजारों की संख्या में फैले हुए हैं। ऐसा मालूम होता है जैसे प्रत्येक बड़े मकान के द्वार पर और प्रत्येक

सड़क के मोड़ पर एक पुलिसमैन खड़ा है रोजर ने मुझे बताया है कि यदि कहीं फुटबाल का खेल हो रहा हो तो वे एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक दीवार बना कर खड़े हो जाते हैं।

स्वामी, रोजर और डिक डैविस आज पराह्न में एक बहुत बड़ा मैच देखने जा रहे हैं। रैड आर्मी की टीम 'डाइनेमो' अर्थात् ऐगवीडी की टीम के वरुद्ध खेल रही है। ये लोग वापिस आयेंगे तो हम लोग गरम ओवी खाने के पश्चात् पोलैण्ड के राष्ट्रीय उत्सव में जाने की तैयारियां करेंगे। ये उत्सव विशेष रीति से मनाये जाते हैं। ठीक साढ़े नौ बजे प्रोग्राम आरम्भ होता है। समस्त कूटनीतिज्ञ अमला, तथा गिने चुने रूसी कर्मचारी बैठक में आ बैठते हैं। वहां से वे सब खाने के कमरे में जाते हैं और वहां शाम को भोजन करते हैं।

हम पश्चिम के रहने वालों को वे अकेला छोड़ देते हैं। उपग्रही हमारे साथ थोड़ी बहुत बातचीत कर भी लेते हैं, परन्तु रूसियों का तो परिचय तक हमें नहीं दिया जाता। रूसी कर्मचारी देखने में बहुत अजीब लगते हैं। मार्शल विशेष रूप से विचित्र प्रतीत होते हैं। उनकी यूनीफार्म गद्देदार होती है जिसपर पदकों की पंक्तियां लगी होती हैं। एक बार जौन कैम्पिल ने किसी नाई की दुकान पर एक वर्दी लटकती देखी थी। उसने वर्दी का निरीक्षण किया और देखा कि छाती पर गद्दियां लगी थीं जिसके कारण छाती पर महराब सी बन जाती है। इस महराब की रूसी लोग बहुत प्रशंसा करते हैं।

२७ जौलाई, १९४९

आज मैं बहुत उत्तेजित हूँ। अगले बुद्धवार को ५ बजे मैं मैडम विशिन्सकी से मिलने जा रही हूँ। मुझे मालूम हुआ है कि उससे भेंट करने वाली मैं पहली राजदूत हूँ। यह एक महत्वपूर्ण बात प्रतीत होती है।

स्वामी ने प्रोमिको से पूछा कि क्या मैडम विशिन्सकी से भेंट हो सकती है? यदि हो सकती हो तो मुझे उससे मिलकर बहुत खुशी होगी।

मैं चाहती हूं कि यह भेंट उसके घर पर हो। किन्तु स्वामी का विचार है कि ऐसा न होगा। यह भेंट किसी राज्यभवन में ही हो सकेगी। हमें यह मालूम ही नहीं कि रूसी कर्मचारी कहां रहते हैं।

अमरीकियों को ही नहीं, बल्कि किसी भी राजनयक को उनके घर जाने का निमन्त्रण नहीं आता। मुझे अकेले ही जाना होगा। मैं चाहती हूँ कि अच्छे से अच्छे वस्त्र पहनकर जाऊँ और अति उत्तम व्यवहार दिखाऊँ। मुझे आशा है कि उसके वस्त्र भी उत्तम होंगे।

२८ जौलाई, १६५६

कल की भेंट के विषय में मुझे पूरा पत्र लिखने की आवश्यकता अनुभव हो रही है। मैंने सम्मर की भूरी और सफेद हल्की छींट के वस्त्र धारण किये। सिर पर अति सुन्दर 'सुज्जी' टोपी पहनी। स्वामी ने कहा कि इस वेष में मैं अति सुन्दर प्रतीत होती थी। मैं अकेले ही गई थी।

मैं चलने लगी तो राजदूतावास के द्वारपाल माईक से मैंने पूछा कि क्या मैडम विशिन्सकी फ्रांसीसी भाषा जानती है? उसने उत्तर दिया, 'हां, श्रीमती जी, वह कोई युवती नहीं। उसका सम्बन्ध पुराने लोगों से है।

मैडम विशिन्सकी हल्की फुलकी साठ साल की स्त्री है। वह थकी-थकी सी और रुग्ण-सी प्रतीत होती थी, परन्तु उसने बहुत सुन्दर और सादा वस्त्र धारण किये हुए थे। उसका फ्राक भूरे रंग का था जिसकी छांट न हुई थी। उसने मोतियों के बूँदे पहन रखे थे। इनके अतिरिक्त उसके शरीर पर और कोई हीरे मणियां न थे। बाल सिर के ऊपर सुदृढ़ता से लिपटे थे। ऊपर कुन्तल बने थे। बाल रंगे हुए थे। उनका रंग आबनूस जैसा था। यह रंग प्रायः यूरोप की स्त्रियों के बालों में और विशेषकर बूढ़ी अभिनेत्रियों के बालों में दिखाई देता है। उसके वर्ण से प्रतीत होता था कि उसके बाल लाल रंग के रहे होंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह युवावस्था में अति सुन्दर थी।

मैंने पूछा कि क्या उसे फ्रांसीसी भाषा आती है। उसे यह जानकर

बहुत खुशी हुई कि मैं उनकी भाषा जानता हूँ। यह देखकर तीन स्त्रियां जो इस कमरे में थीं कुछ व्याकुल हो गईं। जिस स्त्री का काम यह था कि वह मेरी बातों का अनुवाद रूसी भाषा में और उनकी रूसी भाषा का अनुवाद अंग्रेजी में करे वह विशेष रूप से घबरा गई थी। वह चाहती थी कि वह हमारी बात चीत को किसी विशेष विधि से एक दूसरे को समझाये और इस विधि के अनुसार उसका संशोधन करती जाये। इसका परिणाम यह हुआ कि बात के समझाने का काम मुझ पर आ पड़ा। मैडम गुसेव और मैडम ओरिन जो उन मन्त्रियों की पत्नियां थीं फ्रांसीसी भाषा न जानती थीं। तीसरी स्त्री को भी यह भाषा न आती थी। मैं कभी-कभी बड़ी शिष्टता से कहता : 'मैडम विशिन्सकी कहती हैं......'

'हाँ, मैं भी उस विशिन्सकी से कह रही थी...' इसने परिहास का रूप धारण कर लिया और मुझे इसमें बहुत आनन्द महसूस हुआ।

पहले-पहल मैडम विशिन्सकी के व्यवहार में कुछ झिझक थी। मैडम गुसेव ने स्पष्ट रूप से कौतूहल दिखाया। मैडम ओरिन उदासीन थीं और उसके मन में शिथिलता के भाव थे। हमने मौसम के विषय में बातचीत की। यह एक हानिरहित विषय है जिसमें कोई जोखिम नहीं होती। हमने मास्को पर और उसके नये भवनों पर विचार किया।

मैडम गुसेव ने कहा, 'हमारे भवन अमरीका के विशाल भवनों से भिन्न हैं। आपके यहां मकान सन्दूकों के समान बिल्कुल सादा होते हैं।'

मैं कहने वाला था कि उनके भवन ऐसे हैं जैसे विवाह के अवसर पर बने हुए केक होते हैं, किन्तु हो सकता था वे समझतीं कि मैं उन भवनों की आलोचना कर रहा हूँ। इसलिए मैंने यह बात नहीं कही।

इनमें से कोई भी स्त्री कभी अमरीका न गई थी। मैडम विशिन्सकी एक बार अपने पति के साथ पेरिस गई थी। उसने कहा कि पेरिस एक सुन्दर नगर है। वह वहां अधिक समय के लिये ठहरना चाहती थी।

मैंने कहा, 'नहीं। मेरे मन में इसे देखने का बहुत चाव है। क्या इसका उद्‌घाटन इस सितम्बर में होगा ?'

मैडम गुर्सीव ने पूछा, 'क्या अमरीका में 'बैलेट' खेला जाता है ?'

मैंने उत्तर दिया, 'हां, प्राचीन 'बैलेट' भी होता है और आधुनिक भी। मैं आपके कलाकारों के करतब देखना चाहती हूँ। बहुत साल की बात है। उस समय मैं बच्ची थी, न्यूयार्क में डायघिलेव-नाम का बैलेट आया था। यह वहां बहुत सफल रहा था।'

उसने इस पर कोई आलोचना नहीं की।

ऐसे विषय बहुत कम हैं जिन्हें निजी भेंट के समय छेड़ा जा सकता है। यह उचित प्रतीत नहीं होता कि इन लोगों को किसी कठिनाई में डाल दिया जाये क्योंकि इनकी गति विधि पर सरकार की ओर भी कड़ी दृष्टि रहती है। मैं जानती थी कि मैं कहां बैठी हूँ और किससे बातचीत कर रही हूँ। यदि मैंने इस बात का विचार न किया होता तो मैं उनसे बहुत से प्रश्न करती और स्वतन्त्रता से बोलती। मुझे अनायास यह विचार आया कि मैडम विशिन्सकी उन रूसी परावासियों के समान है जो पैरिस में प्रायः दिखाई देते हैं। वे संतिप्त होते हैं जिसके कारण उनके व्यवहार में कटुता आ जाती है। मैडम विशिन्सकी को भी बहुत सी पुरानी घटनायें याद होंगी। उसकी आकृति उसकी आवाज़ और उसका व्यवहार मन्त्रियों की अन्य दो पत्नियों से सर्वथा भिन्न था। वे सोवियत की उपज थीं।

मैं मैडम विशिन्सकी से बहुत देर तक वार्ता करती रहती, परन्तु हमें तीन स्त्रियां घेरे हुई थीं और खानसामा भी ऐसवीडो में जनरल से क्या कम होगा। वह बहुत मनमोहक थी। मुझे उस पर दया आरही थी। पुराने शाही कुटुम्बों के सदस्यों की दशा प्रायः ऐसी ही होती है। वे अकेले अकेले महसूस करते हैं और उनके मन को चैन नहीं होता।

मैं चलने लगी तो मैंने इस भेंट के लिये उसका धन्यवाद किया और आशा प्रकट की कि हमारी भेंट फिर होगी। मैंने यह भी कहा कि उससे

मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई है। उसने भी कहा कि शीघ्र ही हमारी फिर भेंट होगी।

युना द्विभाषी ने मुझे विदा किया। मैंने उसकी अँग्रेज़ी की सराहना की। मैंने पूछा, 'क्या तुमने अँग्रेज़ी यहीं सीखी है ?'

'हां, हां ! हमारे यहां भाषयें सिखाने की विशेष पाठशाला है। मुझे आशा है कि शायद् मैं किसी दिन रूस के बाहर जाऊँ। बाहर घूमना अच्छा भी लगता है और उपयोगी भी सिद्ध होता है।

मैंने उत्तर दिया—'हां, बहुत उपयोगी रहता है।'

अरदली ने द्वार खोला। राजदूतावास की मोटरकार आई और मैं उसमें बैठकर द्वार से बाहर निकल आई। मेरे चले जाने के बाद जो आलोचना इन तीन स्त्रियों ने की मैं उसे सुनना चाहती थी। जो केक बाकी रह गये थे वे ज़रूर मैडम गुसीव और मैडम ज़ोरिन ने समाप्त किये होंगे।

३० जौलाई, १९४६

मास्को में एक मास रहने के पश्चात् मैं अपने अनुभव को संयत करने बैठी हूँ। मेरा विचार था कि मास्को में काम की धमा धमी होगी। यह एक सजग और सजीव नगर होगा। रूस ने एक दीर्घ और विषम युद्ध की यातना सही थी। मुझे आशा थी कि मैं रूस के पुनरुत्थान का रूप देखूँगी। मुझे यहां किसी नये संसार का स्वप्न पूर्ण होता दिखाई देगा। इसके स्थान पर क्या देखती हूँ यह एक मर्यिल सा नगर है जिसमें सौन्दर्य की कोई भी चीज़ नहीं। केवल क्रैमलिन का भयावह आकार दिखाई देता है।

स्कैन्डेनेविया और फिनलैंड में राष्ट्रीय कला के कुछ उदाहरण मिलते हैं। इन देशों का आचार-विचार रूसियों के ही अनुकूल है और यह सोवियत लोगों की आवश्यकताओं के अनुसार ढल सकता है। परन्तु इस प्रकार का क्रान्तिकारी परिवर्तन लाना सुगम नहीं। मन्त्रियों की इसमें अनुमति नहीं और उनके विरोध के होते हुये किसी भी प्रकार का परिवर्तन लाना असम्भव है। इसके लिये बहुत उत्साह की आवश्यकता है। स्तालिन की

आयु सत्तर वर्ष की है और उसकी आंखें के मलिन से सब कुछ देखती हैं। चमकदार शीशे के मकान और बड़े-बड़े ब्लाक बनवाना उसे पसन्द नहीं।

रूसी संगीतकारों और कलाकारों के मन से मौलिक रचना के भाव निकल से गये हैं। उन्हें इन भावों को प्रकट करने का साहस नहीं होता। लेखकों को नाप-तोल कर पुस्तकें लिखनी पड़ती हैं चित्रकारों के चित्र भी किसी विशेष योजना के अनुसार बने होते हैं और उनमें जान नहीं होती। इस बात से तंग आकर प्रोकोफीफ़ नाम के गायनाचार्य ने रागों की रचना करना छोड़ दिया है। शोस्टेकोविच ने यह स्वीकार किया है कि वह सोवियत दृष्टि-कोण का अनुसरण नहीं कर सकता।

वस्त्रों के विषय में भी रूसियों की हीनता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। पुरुषों के सूट निकम्मे कपड़े के बने होते हैं। कपड़े धुलवाने की भी सुविधा नहीं। स्त्रियों के वस्त्र भी तंग और छोटे होते हैं और उन पर सजावट का निशान तक नहीं होता। ऊपर पहनने के वस्त्र बहुत खुले होते हैं कीमती वस्त्र भी तन पर ठीक नहीं बैठते। किसी राज्य-कर्मचारी की पत्नी का फ्राक भी जो कभी-कभी नाटक के समय या किसी उत्सव पर दिखाई देता है साधारण काट का और बन्द गले का होता है। उसकी आस्तीन लम्बी होती हैं। हीरे मणियों का स्थान कांच के मणकों ने ले लिया है। वे भद्र-नारियां भी जो बड़े ठाठ से सन्ध्या समय के विशेष वस्त्र पहनकर निकलती हैं ऐसे छल्ले पहनती हैं जिन्हें उनकी दादियां 'डिनर रिंग' कहती थीं और जो वे रात के भोजन के समय पहनती थीं। ये छल्ले बहुत चमकीले होते हैं और इनका आकार अंडे की भांति होता है। यह अंगूठे के साथ वाली उँगली पर पहना जाता है। विवाह के समय जो छल्ले दिये जाते हैं उन्हें पहनने का रिवाज नहीं। दुकानों पर वे प्रायः बिकते हैं। उनकी कीमत बहुत है। साधारण से छल्ले का मोल साठ-सत्तर डालर से कम नहीं। शायद यही कारण है कि स्त्रियां इन्हें नहीं पहनतीं।

नीचे पहनने के वस्त्र जो दुकानों पर देखने को मिलते हैं बहुत भद्दी किसम के हैं। स्त्रियों के कच्छे, कच्छे नहीं हैं, बल्कि उन्हें पायजामे कहना

चाहिये। उनका रंग नीला अथवा गुलाबी होता है और वे बुने हुये होते हैं। कमीज़ों के रंग इन रंगों से मेल खाते हैं। चोलियां बहुत मोटे कपड़े की बनी होती हैं और इनका रंग भी बहुत भड़कीला होता है। ये पीठ के पीछे तीन बटनों द्वारा बन्धती हैं। चोलियां इस प्रकार बनी हैं कि इन्हें पहनने वालियों का आकार भयावह प्रतीत होने लगता है। ये सब एक ही तरह की होती हैं। वे दुकानों में इस प्रकार सजाई जाती हैं जैसे चीनी के प्याले। कटिबन्ध कहीं दिखाई नहीं देते। वे डाक्टरों के यहां ही मिल सकते हैं। सौंदर्य से उनका कोई सम्बन्ध नहीं। मैंने कटिबन्ध का एक नमूना देखा है। वह मेंहदी के रंग के सूत का बना था, आगे की ओर बन्द होता था और उस पर सीप के बारह बटन लगे थे।

बुनी हुई कमीज़ और अंगिये और चोली के साथ सुसज्जित स्त्रियां पुराने ढंग की सफेद कमीज़ पहनती हैं जिसके किनारे पर सस्ता गोटा लगा होता है। सोने के समय के वस्त्र मुझे दुकानों पर कहीं दिखाई नहीं दिये। पुरुष पाजामों का प्रयोग यात्रा में करते हैं या उस समय जब वे आराम से बैठते हैं। सोते समय उनका प्रयोग नहीं होता। रात के लिये कछहरे काम में आते हैं। इनका रंग गहरा नीला होता है बनयाने हलके नीले रंग की होती हैं बिलकुल स्त्रियों की बनयानों के समान।

इनका मूल्य हमारी मुद्रा में इस प्रकार है:—

बुनी हुई सूती अंगिया	डालर ७.००
सूती चोली	डालर ४.२०
मर्दाना कमीज़ सूती	डालर १५.००
चमड़े के मर्दाने जूते	डालर ७५.००
साधारण मर्दाने जूते	डालर ४०.०० से ६०.०० तक
रेयन के बने जनाना वस्त्र	डालर १००.००
जो अमरीका में १४.६५	डालर को बिकते हैं।
मर्दाने सूट (हलके दर्जे के)	डालर २०५.०० से ३००.०० तक

पूर्वी जर्मनी से चीनो के बर्तन आते हैं। (डूसडन और मीसन के

कारखाने रूसी भाग में हैं) यह सामान बहुत घटिया दर्जे का बनता है। लोगों की पसन्द और उनकी आवश्यकता को देखते हुये ही इस सामान को घटिया दर्जे का बनाया जाता है । समस्त नगर में सब कुछ एकसा दीख पड़ता है जिसमें जीवन के चिन्ह दिखाई नहीं देते।

रूसियों का व्यवहार ऐसा क्यों है ? बहुत सीमा तक इसका कारण वहां की जलवायु है। यहां की जलवायु असीम है। जिस दिन से हम आये हैं तभी से वर्षा हो रही है।

मैंने बैल्जियम की राजदूत चन्टल गौफ़िन से कहा कि वह मुझे एक दिन बाज़ार ले चले। वह बहुत अच्छी रूसी भाषा बोलती है, घर को खूब सम्भाल रखती है और अच्छा सौदा करती है। मैंने अपने बहुत पुराने वस्त्र धारण किये। चन्टल ने बरसाती पहनी और सिर पर रूमाल बांध लिया। उसने कहा कि मैं पूंजिवादियों के गुप्तचर के समान प्रतीत होती हूँ।

हम नगर की केन्द्रीय मन्डी में गये। जहां किसान लोग और वे लोग जो सहकारी खेती करते हैं अपनी उपज लेकर आते हैं। सरकार की मांग के पश्चात् जो बचता है उसे बेचा जा सकता है। खुली मन्डी में वे अपने भाव से बेच सकते हैं इसलिए यहां बेचने के लिए वे अच्छे से अच्छा माल लाते हैं।

अगस्त का आरम्भ था, परन्तु वहां केवल खीरे, गाजर, गोभी, सूखे हुये प्याज, एक-आध चुकन्दर और हाथ से चुनी हुई खुम्बें—मन्डी में बस यही कुछ आया हुआ था।

स्त्रियां गोभी का आधा या चौथाई फूल न खरीदती थीं। केवल दो चार ही डंठल खरीदती थीं। दो तीन गाजरें और इतने ही प्याज। इससे वे शोर्बा बनाते हैं। शोर्बा इन लोगों का मन भाता खाजा है। जब कभी उन्हें मांस प्राप्त होता है वे इसे भी शोर्बे में ही पकाते हैं। रूस में मांस को भून कर खाने का रिवाज नहीं। रालने का तो कोई नाम भी नहीं जानता। मांस उनके लिए केवल उबला हुआ मांस होता है। मांस का वे कीमा

करा लेते हैं और कीमा किये मांस को वे हाथों में खुला ही उठाये लिये जाते हैं। यदि वे इसे कभी लपेटते भी हैं तो पुराने अख़बार के एक छोटे से टुकड़े में। वे इसे अपने रस्सियों के थैले में डाल लेते हैं। मांस में से चर्बी अलग करली जाती है और वह पृथक बिकती है। वे चर्बीको रोटी पर लगा कर खाते हैं। मक्खन या मुरब्बे की अपेक्षा लोग यहां चर्बी का ही प्रयोग करते हैं।

चेन्टल के कथनानुसार औसत दर्जे के रूसी का भोजन बहुत साधारण होता है। श्रमिक और छोटे कारख़ानेदार 'काशा' जो एक प्रकार का दलिया होता है सुबह बिना दूध और शक्कर के खाते हैं। कभी-कभी वे इसमें तेल डाल लेते हैं। दोपहर को वे 'सौइक्रौट' खाते हैं जो शोर्बे में पका हुआ मांस होता है। इसी के साथ रोटी खाते हैं। रात को रोटी और चाय लेते हैं। चाय ऐसी होती है जो बहुत देर तक उबलती रहती है। रोटी बहुत अच्छी होती है। कभी यह काले रंग की होती है जिसका प्रयोग साधारण रूप से सदैव ही होता है। कभी सफेद और केक के समान। रोटी सरकारी तनूरों में ही बनती है और उन दुकानों पर बिकती है जिनका संचालन सरकार द्वारा होता है।

आटा साल में केवल दो बार बिकता है। मई दिवस को और ७ नवम्बर की छुट्टी के दिन। और किसी दिन बाज़ार में किसी भाव भी आटा नहीं मिल सकता। इन दिनों में भी प्रत्येक व्यक्ति निर्धारित मात्रा में ही आटा खरीद सकता है। इस अवसर पर बड़े-बड़े विज्ञापनों द्वारा यह घोषित किया जाता है कि दयावान और महान पिता स्तालिन ने अपने लोगों को आटा खरीदने की आज्ञा प्रदान की है। आटे का वितरण इस प्रकार होता है कि लोग समझते हैं जैसे उन्हें कोई उपहार मिल रहा है। उनके मन में यह विचार उत्पन्न नहीं होता कि उन्हें चिरकाल तक आटा नहीं मिलता रहा।

मैंने ऐसी गाड़ियां नहीं देखीं जिनके द्वारा लोगों को सामान पहुंचाया

जाता है। बिस्तर और दरियां भी लोग सिर पर या कन्धों पर उठाकर ले जाते हैं। इसमें स्त्रियां पुरुषों का हाथ बटाती हैं।

१० अगस्त, १९४९

मुझे लोगों की खिड़कियों में से झांकने का स्वभाव पड़ गया है। मैं निर्लज्ज होकर लोगों के घरों में झांकती हूं। सड़क पर घूमते हुए मेरी दृष्टि तहखानों और नीचे की मंजिल में जाती है। खिड़कियों पर प्रायः सफेद पर्दे लगे होते हैं। कहीं-कहीं गोटा लगे पर्दे भी दिखाई दे जाते हैं। खिड़कियों में प्रायः लोग गमले रखते हैं। उनमें पौधे अजीब किस्म के होते हैं। नीचे से ऊपर तक डंठल ही होता है। किसी २ पौधे पर पत्ते दिखाई देते हैं और वे भी अन्त शिखर पर। कहीं २ बोतलों में फूलों के गुच्छे भी लगे दिखाई देते हैं। मेज-कुर्सियों पर सफेद कपड़ा पड़ा होता है। मेज़पोश हाथ से बुने होते हैं. घर में बस इतनी सी सजावट होती है।

कमरे प्रायः साफ-सुथरे होते हैं। दीवारों पर या तो सफेदी की होती है या हल्के नीले रंग का 'डिस्टैम्पर'। कुछ घर मैले-कुचैले और गन्दे होते हैं। ज़ीने और सीढ़ियां तो कभी भी साफ नहीं होतीं। अधिकांश गलियों का भी यही हाल है। मैंने यह सब कुछ अन्दर जा कर नहीं देखा, बल्कि बाहर से झांककर ही देखा है। हम लोगों को किसी रूसी के घर में जाने का अवसर नहीं मिलता।

आंगनों का हाल भी बुरा है। मौसम के अनुसार उनमें या तो कीचड़ होती है या धूल और उसमें कई प्रकार का कूड़ा करकट पड़ा होता है। कभी २ कोई टूटी हुई बैंच दिखाई देती है। बूढ़ी स्त्रियां वहां बैठकर बच्चों की देखभाल करती हैं। रूस में बूढ़े लोगों का यही कर्तव्य है। मानो यह उनका धर्म है।

रूसियों को प्रायः यह कहते सुना है कि चारों ओर नव-निर्माण का कार्य हो रहा है। वे यह बात बड़े गर्व से कहते हैं। स्मोलो स्ट्रीट के पास जिसे बी० रूस कहते हैं बड़े-बड़े भवन बन रहे हैं। मैंने कम श्रमिकों को वहां काम करते देखा। चुनाई और रंग-रोगन का काम प्रायः स्त्रियां करती

हैं। ये स्त्रियां मुख्यतः किसान होती हैं। उन्हें उनके खेतों में से भरती करते हैं। मेहनताना देने का ढंग बहुत अजीब है। मेहनताना फुटों के हिसाब से दिया जाता है। पैमाइश काम की नहीं होती, बल्कि यह अनुमान लगाया जाता है कि वे दिन में कितना काम कर सकते हैं। समस्त काम के मेहनताने का हिसाब लगाकर उसे श्रमिकों में बराबर २ बांट दिया जाता है। साधारण श्रमिक इस प्रकार महीने में १०० डालर कमा लेता है। यदि रूबल में हिसाब लगाया जाये तो यह राशि बहुत न्यून है। काम की गति क्या है इसकी किसी को चिन्ता नहीं। यदि निरीक्षक जो नर-नारी कोई भी हो सकता है, चला जाये तो श्रमिक मलबे के ढेर पर बैठ जाते हैं और सो जाते हैं। वे लोग गतिहीन प्रतीत होते हैं। वे धैर्यवान हो सकते हैं, उत्साही नहीं।

जहां २ पगडंडियां बनी हैं या सड़कें पक्की हैं वहां दिन में दो बार सफाई की जाती है। कानून यह कहता है कि इन स्थानों को धोया जाये। इसका दायित्व गृहस्थियों पर है। सर्दी में उनको बर्फ हटानी पड़ती है और गर्मी में पानी बहाना पड़ता है। इसके साथ ही वहां झाड़ू लगाना भी जरूरी है। बूढ़ी स्त्रियां टहनियों से झाड़ू लगाती हैं। दिन में किसी समय भी आपको बीसियों स्त्रियां झाड़ू चलाती और धूल के बादल उड़ाती दिखाई देंगी। वे इस धूल को छोटे २ तसलों में उठाती हैं। इस काम में उन्हें घंटों लगते हैं, परन्तु रूस में मानव-शक्ति नर हो या नारियां बहुत सस्ती हैं।

१६ अगस्त, १९४६

शनिवार के पराह्न को मौसम सुहावना था। हमारा रूसी विशेषज्ञ, जौर्ज मार्गन, मुझे गौर्की पार्क में सैर के लिए ले गया। इस प्रकार की रूस में कई पार्कें हैं जिन्हें 'पार्क आफ़ कल्चर एंड रैस्ट' अर्थात् संस्कृति और विश्राम स्थान का नाम दिया जाता है। यह नाम बहुत बड़ा है, परन्तु इसका अभिप्राय केवल साधारण पार्क से ही है। यह लोगों के मनोविनोद के लिए होती है। गौर्की पार्क इन सब में बड़ी है।

शनिवार को रूस में छुट्टी नहीं होती इसलिये पार्क में अधिक लोग न थे। बच्चे काफी थे जो गेंद से खेल रहे थे। बड़े लड़के फुटबाल का खेल खेल रहे थे।

एक ओर चलचित्र का मंच था। इसमें सहकारी खेतों पर काम करने वालों के जीवन का चित्र दिखाया जा रहा था। दूसरी ओर वाचनालय था जिसमें दल सम्बन्धी पुस्तकें रखी थीं। एक ओर चबूतरा था जहां बैठ कर लोग शतरंज खेल रहे थे। मेज़ों के साथ-साथ बूढ़े व्यक्ति खेल में व्यस्त दिखाई देते थे।

एक छोटी सी झील थी जिसमें दो या तीन जोड़े नाव चला रहे थे। किनारे पर एक भोजनालय था। हम चाय पीने के लिये रुक गये। चाय यहां गिलासों में दी जाती है। नींबू लेना हो तो एक रूबल फालतू देना पड़ता है। हमारे इर्द गिर्द बैठे हुए लोग रोटी, मछली का अचार या अन्य हल्का सा भोजन कर रहे थे। पेयों में वोडका, बियर या रंगीन सोडा लैमोनेड थे। ऐसा प्रतीत होता है कि रूसी लोगों का भोजन का कोई समय निश्चित नहीं। वे किसी समय भी खाने बैठ जाते हैं और जो भी मिलता है हड़प कर लेते हैं। वे इसका कोई विचार नहीं करते कि पहले क्या खाना है और पीछे क्या, जैसे भुनी हुई मछली के साथ आइसक्रीम चलती है।

यहां कुछ युवा जोड़े बैठे थे। बाहर रूसियों का व्यवहार बहुत अच्छा होता है। प्रेमी एक दूसरे से हट कर बैठते हैं और बहुत कम बातचीत करते हैं। सभी लोग बहुत चुपचाप रहते हैं। उनकी खामोशी प्रभावशाली है। इसकी अपेक्षा हम लोग बहुत शोर करते हैं और जोश में आये रहते हैं। रूसियों की भीड़ लगी हो तब भी शोर नहीं होता। ऊँचे स्वर से कोई भी नहीं बोलता। उनके चेहरे से उनके मन के भाव प्रकट नहीं होते, पार्क में घूमते समय भी वे ऐसे ही प्रतीत होते हैं जैसे काम के बाद थके-मांदे घर लौट कर जा रहे हों। सुहावने मौसम का भी उनके चेहरों पर कोई प्रभाव न दीख पड़ता था। उनके वस्त्र भी प्रत्येक समय एक से ही होते हैं।

द्वार से आगे स्थान-स्थान पर तख्तियों पर यह लिखा हुआ था कि इस पार्क का और अन्य सुविधाओं का प्रबन्ध उनके मित्र स्तालिन ने किया है। इसलिये वह उन्हें आदेश देता है कि कोई फूल न तोड़े, घास पर न चले, गंदगी न फैलाये। उस सौंदर्य का आनन्द लें जो स्तालिन ने उन्हें प्रदान किया है। इन तख्तियों के अतिरिक्त लाउड स्पीकरों से भी आवाज आ रही थी। लाउड स्पीकर वृक्षों में टिके थे या घरों पर लगे थे। इनसे राजनीतिक भाषण सुनाई दे रहे थे। कभी-कभी गाना भी सुनाई देता था। पार्क में कोई स्थान ऐसा न था जहां इनकी आवाज न पहुँचती हो

१८ अगस्त, १९४१

रविवार को हम मास्को नदी पर पिकनिक के लिए गए। नदी के नीचे की ओर जहां लेनिन का आमोद-भवन था जगल और मैदान हैं। साधारण जनता को अब यहां आने की आज्ञा है। रूस में रविवार को सरकारी छुट्टी नहीं होती परन्तु कई व्यवसायों के लोगों ने आमोद प्रमोद के लिये इसी दिन को उचित समझा है। दुकानें इस दिन खुली रहती हैं। भवन-निर्माण का काम तथा कारखाने बन्द रहते हैं। बहुत से कारखानों में इस दिन न केवल छुट्टी होती है, बल्कि श्रमिकों को ट्रकों द्वारा देहात में भेजने का भी प्रबन्ध किया जाता है। यह उनके काम के पारितोषिक के रूप में होता है।

हमारा नया मंत्री समुपदेशी, वैली बारपोर हमारे साथ था। वह सब प्रकार एक विशाल व्यक्ति है। उसका कद छः फीट तीन इंच है, भार २५० पाऊंड (लगभग तीन मन) वह अति योग्य कर्मचारी है। हमें इस बात की खुशी है कि उसे यहां नियुक्त किया गया है। यदि स्वामी को स्तालिन से मिलने की आज्ञा प्राप्त हो गई तो वह और जौर्ज मौर्गन उनके साथ जायेंगे।

दस दिन हुये ब्रिटिश राजदूत सर डैविड कैली से स्तालिन ने भेंट की थी। उसके अतिरिक्त हमारे सहकारियों में किसी अन्य को इस प्रकार सम्मानित नहीं किया गया। स्वामी इस विषय में बिलकुल शान्त हैं। मैं

होती तो बहुत घबरा जाती। क्रैमिलिन के इस व्यक्ति को कुछ इस प्रकार का रूप दे दिया है कि मनुष्य प्रतीत नहीं होता, बल्कि एक शक्ति मालूम होता है। लेनिन तक, जिसके शव को मसाले लगाकर समाधि में रखा हुआ है, पहुंचना इतना कठिन नहीं। परन्तु हो सकता है कि यदि वह जीवित होता तो वह भी एक भयानक व्यक्ति सिद्ध होता।

रोजर और मैं कल लेनिन का मकबरा देखने गये। सप्ताह में चार दिन पराह्न के समय लोग इसे देखने के लिये जा सकते हैं चाहे आंधी हो चाहे वर्षा इसे देखने के लिये लोगों की लम्बी-लम्बी पंक्तियां लगी रहती हैं। कभी-कभी यह पंक्ति कई फर्लांग लम्बी हो जाती है। एक बार आदमी अन्दर जाने लगें तो वे बड़ी तेज़ी से बढ़ते जाते हैं। पुलिस-मैन किसी को रुकने नहीं देते और सफलता पूर्वक अनुशासन रखते हैं।

मकबरा एक वर्गाकार है। यह लाल और काले पत्थर का बना है जिस पर पालिश किया गया है। शायद इसे बनाने में सॉरेस के मकबरे की नकल की गई है। यह क्रैमलिन की बाहर वाली दीवार के साथ रैड स्क्वेयर के दो मुख्य द्वारों के मध्य में बना है। द्वार पर खड़े पुलिसमैन को हमने अपने राजनयक कार्ड दिखाये और उसने हमें झट अन्दर जाने की आज्ञा दे दी।

हम जिधर भी जाते थे पुलिसमैनों की दृष्टि हम पर रहती थी। इन में रक्षा पुलिस के चुने हुये आदमी भी थे। वे बन्दूकों और संगीनों से सुसज्जित थे। द्वार पर वे सचेत खड़े थे। उनके पांव मखमल के छोटे २ गद्दों पर थे।

द्वार नीचे की मंज़िल में है। हम बाईं ओर मुड़े, और काले और चिकने पत्थर का एक पेचदार सीढ़ी से नीचे उतरने लगे। सात्रियों में गार्ड खड़े थे और वे हमें एक पंक्ति में चलने का संकेत करते थे।

जिस कमरे में लेनिन का शव रखा है उसका ताप बर्फ के ताप जितना होता है। इसलिये जैसे हम इस स्थान की ओर बढ़े हम। ठंडा होती गई। इस कमरे के मध्य में कांच के कवर के नीचे एक अर्थी पर लेनिन का

शव पड़ा है। उस पर छाती तक काली मखमल की एक चादर डाल रखी है। हाथ बगलों से साथ हैं और सिर काली साटिन के तकिये पर। प्रकाश का कुछ ऐसा प्रबन्ध है कि उसके चेहरे पर एक पीले रंग की चमक दिखाई देती है। ऐसा मालूम होता है जैसे उसके भीतर बत्ती लगी हो।

उसे कालर और नैकटाईदार काला सूट पहना रखा है। सिर और दाढ़ी के बाल बहुत सावधानी से कटे हैं।

ब्रिटिश समुपदेशी ज्यौफ्रे हैरिसन ने कुछ दिन पहले उसके हाथों में दस्ताने देखे थे। किन्तु उस दिन दस्ताने न थे।

२१ अगस्त, १६४६

स्वामी के क्रैमलिन जाने का समय रात को १० बजे नियत हुआ था। वैली बारबोअर शाम के भोजन के समय यहां आगया। इस प्रकार जौर्ज मौर्गन के साथ मिलकर इन तीनों की टोली बन गई। दस बजने में दस मिनट थे कि ये तीनों रवाना हो गये।

ये लोग करीब ग्यारह बजे वापिस आये। वे बहुत खुश दिखाई देते थे। उनको भेंट में ३७ मिनट लगे थे। ब्रिटिश राजदूत इससे बारह मिनट कम वहां ठहरा था।

क्रैमलिन पहुँच कर उन्हें एक-एक करके कई 'एडी' मिले। वे उन्हें ऐसे मार्गों से ले गये जहां स्थान-स्थान पर रक्षि खड़े थे। अन्ततः वे एक कमरे में गये जो बहुत सादगी से सजाया गया था। उसमें एक मेज़ पड़ी थी और आगन्तुकों के लिये कुर्सियां। स्तालिन उनके अभिवादन के लिये उठा और स्वामी की ओर बढ़ा, उनसे हाथ मिलाया और उन्हें मेज के पास बिठा दिया। स्तालिन के साथ विशिन्सकी और उसका द्विभाषी अमरीका में स्थित भूतपूर्व रूसी राजदूत का पुत्र आएलोव्सकी था। वह एक युवक था। स्वामी ने कहा कि बातचीत में पहले पहल कुछ खिचाव रहा। परन्तु इसमें स्नेह का समावेश था। मार्शल ने इतना सौजन्य दिखलाया कि आगे हाथ बढ़ाकर स्वामी का 'पाईप' जला दिया। बाद में समाचार पत्रों में इस क्रिया पर आलोचना हुई और कहा गया कि स्वामी के लिये वह एक

सम्मान की बात थी। कई साधारण विषयों पर बातचीत हुई। अमरीका के रेडियो 'वौइस आफ अमेरिका' का प्रसंग भी आ पड़ा।

जब यह बात छिड़ी तो स्तालिन ने विशिन्सकी को सम्बोधित करते हुए कहा, 'क्या सचमुच ये लोग हमारे विषय में बहुत बुरी २ बातें कहते हैं?'

स्तालिन ने यह प्रश्न मुस्कराते हुए किया था, किन्तु विशिन्सकी घबरा गया। यदि मार्शल आंख भी झपकता तो वह उसके इर्द-गिर्द फुदकने लगता जैसे कोई नया उत्सुक 'एडी' अपने स्वामी के इशारों पर नाचता है। भेंट की समाप्ति पर स्तालिन ने बड़े समारोह से स्वामी के साथ हाथ मिलाया और कहा कि वे जब चाहें खुशी से उसे मिलने आ सकते हैं।

मार्शल और विदेशी मन्त्री दोनों ने सौजन्य का प्रमाण दिया था। मैं जानती हूँ कि स्वामी ने इस भेंट का संचालन बड़ी कुशलता से किया होगा। इस काम में वे बहुत चतुर हैं। यदि रूसियों ने सदाचार दिखलाया तो यह स्वामी के व्यवहार का प्रत्युत्तर-मात्र था।

स्वामी ने स्तालिन का वर्णन करते हुये कहा कि वह लम्बा चौड़ा व्यक्ति है। उसके सिर के और मूछों के बाल सफेद हुए जा रहे हैं। उसका वेष असैनिक था जिस पर पदक न लगे थे। परन्तु वह था बहुत चुस्त। उसकी आवाज़ में बल था और आंखें साफ थीं। उसका स्वास्थ्य अच्छा प्रतीत होता था। उसके व्यवहार से ऐसा लगता था मानो उसमें महान और बलिष्ट व्यक्तियों का सा आत्म विश्वास है। उसकी आयु का विचार छोड़कर और उन बातों का विचार छोड़कर जो वृद्ध अवस्था के कारण स्वभाविक ही उत्पन्न हो जाती हैं, वे कहते थे कि स्तालिन अभी कई साल जीवित रहेगा और जब तक वह जियेगा शक्ति उसके हाथ में रहेगी।

२४ अगस्त, १९४९

राज्य भोजनागार में रात हमने पहला विधिवत सहभोज किया जिसमें बाईस व्यक्ति उपस्थित थे। मेज़ आबनूस की बनी है और बहुत

विशाल है। यह गज़ों चौड़ी है। इसके बीच में सामान रखने के लिए हमारे खानसामा चिन को मेज़ के ऊपर चढ़ना पड़ता है। एक बार एक रूसी नौकरानी इस पर पालिश करने लगी। वह इसके ऊपर लेट गई। उसकी टांगें हवा में झूलने लगीं। टांगों को झुला झुलाकर ही वह इधर-उधर पालिश कर सकी।

हमारे एक गूंगे नौकर से हमारी बावर्चिन के पति को जो माली है सिर पर भारी चोट आ गई थी। उसके हस्पताल में होने के कारण हमारी बावर्चिन का मन व्याकुल था फिर भी उसने हमें बहुत अच्छा भोजन खिलाया, शोर्बा तैयार किया, टमाटर के कतले बनाये और नाना प्रकार के अच्छे-अच्छे भोजन तैयार किये। चिकन और आईस्क्रीम का भी प्रबन्ध किया।

आस्ट्रेलिया के राजदूत की पत्नी श्रीमती वाट कह रही थी कि बूरो-बिन रूसी लड़कियोंको विदेशी राजदूतावासों में काम करने के लिये इसलिये भेजता है कि वे खानादारी के काम से परिचित हो जायें, मेज़ लगाने 'मीनो' आयोजित करने और साधारण आचरण के विषय में उन्हें व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हो जाये। उसके यहां दो तीन लड़कियां काम करती थीं, जो छोड़कर रूसी परिवारों में नौकरी करने लगी हैं। शायद वे मन्त्रियों और जनरलों की पत्नियों को शिक्षा देने के लिये गई हैं। श्रीमती वाट ने यह बात बड़े निश्चय से कही थी और यह तो हमें भी मालूम है कि विदेशी कार्यालय के उच्च कर्मचारियों को आचरण की शिक्षा देने के लिये एक स्कूल है।

ऐसा प्रतीत होता है कि प्रत्येक उच्च राज्य कर्मचारी की पत्नी का एक गुप्त कंचुक गृह होता है। फिनलैंड में स्थित हमारे मन्त्री की पत्नी एलिजेबथ कैबट ने युद्ध के तुरंत पश्चात युगोस्लेविया का भ्रमण किया था। यह अति संयम का काल था इसलिये हमारी स्त्रियों को यह आदेश दिया गया था कि वे सादा वस्त्र धारण करें और अपने आमोद-प्रमोद के सादा ढंग निकालें। परन्तु रूस में यह बात न थी। रूसी धूम-धाम से

सहभोज देते थे और उनकी पत्नियां मूल्यवान पोस्तीन, सजीले गाऊन और कीमती हीरे मणियां पहनती थीं।

एलिज़ेबथ ने कहा—'साल का पहला दिन आया और रूस के राजदूतावास के कर्मचारी बदल गये। जो नये कर्मचारी आये उनकी पत्नियां भी वैसे ही मूल्यवान आभूषण और वस्त्र धारण किये हुये थीं।'

२६ अगस्त, १६४६

मैं मोखोवाया स्क्वेयर' पर स्त्रियों को काम करते देखती हूँ। वे सड़क को पुनः बना रही हैं। वे उस पर अस्फाल्ट बिछा कर भाप के रोलर चला रही हैं। इन लड़कियों ने या तो सूती स्कर्ट पहन रखे हैं या कमीज और जैकेट। सिरों पर रूमाल लपेटे हैं। मोटे सूत की जुराबें हैं। उनके कैनवस के जूतों पर अस्फाल्ट के ढेले के ढेले जम गये हैं। पतलून या पाजामा वे नहीं पहनतीं। रेल की लाइनों पर तो मुझे रूसी स्त्रियां पाजामे पहने दिखीं हैं अन्य कहीं नहीं। हमारे राजदूतावास में काम करने वाली स्त्रियों ने मुझे बताया है कि सर्दी के मौसम में भी कोई स्त्री पतलून नहीं पहनती।

अस्फाल्ट में काम करना बहुत गन्दा और कठिन काम है। परन्तु ऐसा कोई काम दिखाई नहीं देता जिसे ये स्त्रियां न करती हों। वे भद्दे से भद्दा और सख़्त से सख़्त काम कर सकती हैं। वे सभी स्थानों पर दिखाई देती हैं। पत्थर और ईंटें ढोती हैं। ट्रकों परसे सामान उतारती हैं, रेत और कंकर मिलाती हैं। लीपना-पोतना या रंग रोग़न करना ये सभी कुछ जानती हैं। वे सब काम बड़ी विनम्रता से करती हैं।

जो लड़कियां देहात से मास्को आना चाहती हैं उनकी भरती देहात में ही होती है। वे श्रमिकों से सम्बन्ध रखने वाली एक संविदा पर हस्ताक्षर करती हैं। हस्ताक्षर करने मात्र से वे यहां काम करने के लिये आ सकती हैं। उनमें से बहुत सी ऐसी होती हैं जिन्हें पढ़ना लिखना बहुत कम आता है। इस लिये वे कोई और काम नहीं कर सकतीं। उन्हें अस्फाल्ट में काम करते देख कर हमें खेद होता है। काम समाप्त हो जाने

पर ट्रक आते हैं और ये लड़कियां उन पर चढ़ जाती हैं। ट्रकों में सीमेंट या किसी और चीज़ की बोरियां भरी होती हैं। ये बोरियों के ऊपर ही चढ़ बैठती हैं और बोरियों से भिन्न प्रतीत नहीं होतीं। कहने को यह 'समान अवसर का देश है' परन्तु मैं तो यह कहूँगी कि इसमें स्त्रियों का हिस्सा अधिक है।

इनके स्वास्थ्य के विषय में सोच कर बहुत आश्चर्य होता है। इतना कठोर काम करने से निश्चय ही इनका स्वास्थ्य बिगड़ने की संभावना है। मैंने एक संवाददाता से यह प्रश्न किया। वह इस देश में कई साल रह चुका था।

उसने कहा, 'हां, इन लड़कियों के लिए विशेष हस्पताल हैं। वे बलिष्ट मालूम होती हैं। परन्तु चन्द सालों का कठोर श्रम इनके शरीर को तोड़ देता है। वे इधर सैकड़ों की संख्या में आती हैं। यदि वे रुग्ण हों तो उन्हें वापिस देहात में भेज दिया जाता है।'

मैंने रूसी हस्पताल देखने की आज्ञा प्राप्त करने के लिये लिखा है। किसी प्रकार का भी हस्पताल हो। किन्तु अभी तक कोई उत्तर नहीं आया। मैंने स्कूल और नर्सरी देखने के लिये भी प्रार्थना की है किन्तु क्या मालूम कहीं से उत्तर आता भी है या नहीं।

कूटराजनीतिक सेवा के एक कर्मचारी की पत्नी मेरे पास आई थी। वह एक युवा, बहुत दुबली पतली और मृदुल स्त्री है। पिछले साल उसके बच्चा हुआ था। उसके प्रसव की क्रिया मास्को के प्रसवालय में हुई थी। यह रूस का सबसे आधुनिक हस्पताल समझा जाता है। बच्चे के जन्म के पूर्व वह महीने के महीने हस्पताल जाती रही थी, किन्तु उस के निरीक्षण के लिये न तो कोई सुझाव दिया गया था और न ही निरीक्षण किया गया था। इसलिये जब वह हस्पताल पहुँची तो उसे बहुत घबराहट थी। उसकी बात सुनने के पश्चात् मेरे मन में हस्पताल देखने की उत्सुकता और भी बढ़ गई।

वह स्त्री हस्पताल के द्वार पर पहुँच गई। परन्तु उसे कहा गया कि

अभी उसे दाखिल नहीं किया जा सकता। उसका दाखिला तभी हो सकता है जब उसे प्रसव पीड़ा आरम्भ हो जाये। इस बीच में या तो उसे घर पर रहना होगा या हस्पताल के बाहर कहीं और। यह उसका चौथा बच्चा था। उसने आग्रह किया कि वे उसे उसी समय दाखिल करें। ज़ोर देने पर उसे हस्पताल में दाखिल कर लिया गया। उसे एक ऐसा कमरा मिला जैसा नाइयों की दुकान में होता है। यहीं उसे प्रसव के लिये तैयार किया गया।

वहां से उसे दालान में से होते हुए प्रसव-गृह में ले गये। वहां चौदह अन्य स्त्रियां प्रसव-पीड़ा से चिल्ला रही थीं। वे पास-पास लेटी थीं और एक दूसरे को देख सकती थीं। वहां कई डाक्टर मौजूद थीं और एक बिस्तर से दूसरे बिस्तर अथवा मेज़ पर जातीं और उनकी तसल्ली के लिये कहतीं कि वहां डाक्टरों की कमी है।

मैंने उससे पूछा कि क्या उन्होंने उसे बेहोश करने की दवा दी थी।

उसने कहा, 'नहीं, उनके तरीके बहुत भद्दे थे। प्रसव में देर लग रही थी इसलिए डाक्टर अधीर हो उठी और उसने कहा, 'यदि तुम स्वयं प्रयास नहीं कर सकती तो मुझे तुम्हारी सहायता करनी पड़ेगी। लम्बी सांस लो और दस तक गिनो।'

उस बेचारी ने इस आज्ञा का पालन किया। उसे यह मालूम न था कि डाक्टर क्या करने जा रही है। इसके पश्चात् डाक्टर जो बहुत मोटी और भारी बदन की उसके ऊपर जा पड़ी। वह चाहती थी कि बच्चा जल्दी हो जाय।

आखिर बच्चा उत्पन्न हुआ। मां और बच्चे को एक छोटे से वार्ड में रखा गया। उसके पश्चात् भी प्रसूता और बच्चे की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। बाहर से कोई भोजन न आ सकता था। जो खाना वहां मिलता था वह बहुत ही बुरा था। यह हालत मास्को के मुख्य प्रसवालय की थी।

हमारे राज दूतावास में जलसेना का एक डाक्टर रहता है।' उसके

पास रूस में काम करने का लाइसेंस नहीं है। वह हमारा इलाज अपनी और हमारी ज़िम्मेदारी पर करता है। यदि कोई ऐसा रोगी हो जिसे हस्पताल में भेजना आवश्यक हो तो उसे 'पौलीक्लिनिक' में भेजना पड़ता है। यही एक हस्पताल है जिसमें राजनयक दाखिल हो सकते हैं। वहां प्रत्येक रोगी को एक न एक डाक्टर के सुपुर्द कर दिया जाता है। इसके पश्चात् रोगी अपनी इच्छा के अनुसार कुछ भी नहीं कर सकता। ऐसा कहा जाता है कि हस्पताल में होते हुए किसी रूसी को कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ता, किन्तु विदेशियों को सब चीजों का खर्च देना पड़ता है। कमरे का किराया है, भोजन है और डाक्टर की फीस है। यह सब मिल मिलाकर लगभग ४५ डालर प्रतिदिन पड़ता है। इस स्त्री के वृतान्त के विपरीत डाक्टर ने मुझे बताया है कि रूस के डाक्टरों के इलाज की विधि बहुत अच्छी है, परन्तु हस्पतालों में सामान अच्छा और काफ़ी नहीं। जो ढंग हस्पतालों में बर्ता जाता है वह भद्दा और काम चलाऊ है।

पिछली बसन्त ऋतु में डच समुपदेशी का 'अपैन्डिक्स' अर्थात् एक उपांग फट गया। उसे रात को ही हस्पताल ले गये। दो स्त्रियों ने डेढ़ घण्टा लगाकर उसका आप्रेशन किया। केवल पैंतालीस मिनट तक बेहोशी की दवा का प्रयोग किया गया और वह भी स्थानीय रूप से।

वह चिल्लाया और कहने लगा कि उसे पीड़ा हो रही है। डाक्टर ने कहा कि उसे शिथिल और चुपचाप लेटा रहना चाहिये। एक ने कहा, 'मन मन में पुश्किन की कविता पढ़ो।' इस बीच में उन्होंने परिचारिकाओं को आदेश दिया कि वे उसकी टांगें और बाहें मेज के साथ बांध दें और वे स्वयं आप्रेशन करने में लगी रहीं।

हालैंड निवासी ने मुझे एक और बात बताई। आप्रेशन के पश्चात् उल्लास के दिनों में जब वह अच्छा हो रहा था तो उसने मित्रों से अमरीकी पत्रिकायें पढ़ने के लिये मंगाईं। शीघ्र ही सब वार्डों से आकर परिचारिकाओं ने वहां झुरमुट बना लिया और उससे कहने लगीं कि ज़रा वह उन्हें तस्वीरें देखने दे। उसकी मेज पर उसका एक मित्र एक अति मूल्य-

वान उपहार छोड़ गया था। यह थी नरम प्रसाच्यन पत्र की एक लोठन। एक परिचारिका ने इसे उठा लिया और वह कौतूहल से पूछने लगी, 'यह क्या है ?' रूस में यदि इस प्रकार का कागज़ मिलता भी है तो वह चपटी डिब्बियों में बन्द होता है। लिपटा हुआ कागज़ उसने कभी न देखा था। तभी उसको यह अमरीकी काग़ज़ अजीब लगा।

मेरे सहकारी जिन्होंने कभी रूसी डाक्टरों को बुलाया है कहते हैं कि उनका रोग निदान तो ठीक होता है। परन्तु भैषजिक (कैमिस्ट) वह दवाई तैयार नहीं कर सकते जो डाक्टर लिख कर देते हैं। आधुनिक औषधियां रूस में काफी मात्रा में नहीं मिलतीं। भगवान करे कि मैं निरोग रहूं। यह सच है कि सड़कों पर जो लोग घूमते हैं वे सुदृढ़ प्रतीत होते हैं, परन्तु हमें बीमार आदमी दिखाई भी तो नहीं देते।

३ सितम्बर, १९४९

नगर में पुन. सन्नाटा छा गया है। गर्मी की ऋतु में यहां बच्चों के शिविर लगते हैं। कल बच्चों की टोलियां वापिस आ रही थीं। उस समय यह स्थान 'ग्रेट सैन्ट्रल स्टेशन' के समान प्रतीत होता था। सब जगह बच्चे ही बच्चे दिखाई देते थे। उनमें से कोई अकेला था, कुछ टोलियों में थे। कोई अपनी माता के साथ था कोई पिता के साथ और कोई बाबा या दादी के साथ। दुकानों पर भीड़ लगी थी। चाहे वे कपड़े की दुकानें थी, चाहे काग़ज़ पेन्सिल बेचने वालों की, चाहे नाइयों की सभी दुकानों पर जमघट लगे थे। स्कूल के प्रत्येक बच्चे ने अपना सिर मुंडाया। यह सफाई के विचार से किया गया या पैसे बचाने के विचार से यह अलग बात है। स्कूल की प्रत्येक लड़की ने बालों में नया रिब्बन लगाय

अब वे सब पुनः स्कूलों में चले गये हैं। सब नहीं तो आधे तो जरूर। जैसे हमारे कुछ नगरों में होता है यहां भी दो समय स्कूल लगते हैं, एक सुबह और एक पराह्न में। प्राथमिक पाठशाला के बच्चे जिन्हें 'पायोनियर' कहते हैं और जो 'कौमसोमल' नाम के निम्न स्कूल में पढ़ते हैं यह गीत

गाते हैं, 'स्तालिन, हम आपके आभारी हैं कि आपने हमारा बचपन सुखी बनाया है।' वे ठीक ही कहते हैं। उनका बचपन अवश्य सुखमय दीख पड़ता है। रूसी अपने बच्चों से बहुत प्यार करते हैं और जो वे चाहते हैं उन्हें देते हैं।

मैं स्वयं किसी स्कूल को देखने नहीं जा सकती। (मेरी प्रार्थना का अभी कोई उत्तर नहीं आया।) मैंने अपनी नौकरानी से दो स्कूलों के विषय में जहां उसके बच्चे पढ़ते हैं पूछा। उसने कहा कि बच्चे स्कूल में प्रायः अपने सातवें जन्मदिन के पश्चात् जाते हैं। वहां वे सात साल तक पढ़ते हैं। माता पिता के मन में बड़े नगरों में आने की इच्छा इसीलिये उत्पन्न होती है, कि नगरों में शिक्षा प्राप्त करने की अधिक सुविधायें हैं। माध्यमिक स्कूलों के लिये छात्र कई प्रकार चुने जाते हैं। कुछ तो योग्यता के अनुसार लिये जाते हैं, कुछ दल के दबाव के कारण। जिन बच्चों में औसत दर्जे की योग्यता होती है उन्हें व्यवसाय सम्बन्धी स्कूलों में भेजा जाता है। निम्न बुद्धि के बच्चों के लिये भी साधारण शिक्षा उचित नहीं समझी जाती। जो बच्चे किसी कला में असाधारण योग्यता का प्रदर्शन करते हैं केवल उन्हीं को इस कला की उच्च शिक्षा प्राप्त करने की आज्ञा है।

नये नाविक स्कूलों के लिये नौ छात्र भरती किए जा रहे हैं। यह भरती उन बच्चों में से हो रही है जो युद्ध के दिनों में अनाथ हो गये थे। यह बात जानने योग्य है कि अनाथों को रूस में पहल मिलती है। इसका कारण यह है कि उन पर दल का प्रभाव अधिक हो सकता है। उनका किसी विशेष विचार धारा अथवा किसी परिवार से सम्बन्ध नहीं होता।

बच्चों का स्वास्थ्य प्रायः अच्छा होता है, यद्यपि क्षय रोग और गठिये के विषय में आंकड़े प्राप्त नहीं होते। वास्तव में रूस में आंकड़े प्राप्त करना सम्भव ही नहीं। बच्चे मोटे नहीं होते और उनका रंग ज़र्द होता है। किन्तु अपने माता-पिता के समान वे भी कठोर होते हैं।

५ सितम्बर, १९४९

सम्भव है देश में हमारे विषय में दन्तवदन्तियां फैल रही हों क्योंकि शाम स्वामी और मैं उच्च सोवियत कर्मचारियों में इस प्रकार बैठे थे कि हमारा स्थान ऐसा था जहां सबकी दृष्टि पड़ती थी। कल बलगारिया का राष्ट्रीय दिवस था। बलगारिया की राजदूत गम्भीर वृत्ति की स्त्री है। उसके बाल सूइयों के समान खड़े रहते हैं। उसके चेहरे से उसका दृढ़ निश्चय झलकता है। उसकी आंखों में क्रान्ति की चमक है। उसने सभी राजनयकों को 'मैट्रोपोल होटल' में एक ठाठदार सहभोज दिया।

हमारे घर कुछ युवक लोग रोजर के साथ सहभोज के लिये आये हुए थे इसलिये उत्सव पर पहुंचने में हमें कुछ देर हो गई। जब हम पहुँचे तो अतिथि पहले ही खाने के कमरे में चले गए थे। मैं द्वार पर रुक गई और कुछ ब्रिटिश और इटैलियन लोगों से बात करने लगी। स्वामी मुख्य मेज पर बैठी राजदूत के पास गये और उससे बात करने लगे। एक मिनट बाद वे वापिस आ गये। उन्होंने मुझे अपने पास आने का संकेत किया और कहा कि हमारी परिपोषिती ने हमें बैठ जाने का आदेश दिया है। उन्होंने दो स्थान इंगित किये जो उसकी मेज़ की एक ओर थे और हम बैठ गये। हमारे सहकारी हमें आंखें फाड़-फाड़ कर देख रहे थे। मैंने देखा कि मेरे पास ही ग्रोमिको बैठा है। उससे आगे एक सज्जन बैठे थे जिनका परिचय देते हुए हमें बताया गया कि वे सर्वोच्च सोवियत के सचिव हैं। उससे आगे राजदूत बैठी थी और उसके दाईं ओर विशिन्सकी। फिर मार्शल बुदैन्नी जो घुड़सवारों का जनरल था। उसकी रौद्र आकृति उसकी लम्बी-लम्बी मूंछों के कारण और भी भयावह प्रतीत हो रही थी। हमारे विपक्ष में उपग्रहों के उच्च कर्मचारी बैठे थे। परिपोषिती के बिलकुल सामने विख्यात नर्तकी 'लैपशिन्सकाया' बैठी थी।

राजदूत उठी और उसने एक भाषण दिया। मेरी समझ में इसका एक शब्द भी नहीं आया। स्वामी ने झुक कर ग्रोमीको से कहा, 'श्रीमान

मन्त्री जी, ज़रा बता दीजिये इस भाषण में कोई ऐसी बात तो नहीं जिससे मेरे देश को भ्रान्ति हो।'

प्रोमिको ने मुस्करा कर उत्तर दिया, 'भ्रान्ति तो 'वौडका' पीने से आयेगी जो बहुत तेज़ होती है। यह तो केवल सफेद मदिरा है।

कमरे में नीचे की ओर हमारे दो संवाददाता थे। वे हमारी ओर घबराई हुई आंखों से देख रहे थे। हमारे सहकारी आपस में खुसर-फुसर कर रहे थे। यह एक परिहास प्रतीत होता था। इसका विशेष कारण यह था कि इस मेज़ पर कोई अन्य राजदूत न था, उन देशों का भी नहीं जो रूस का साथ देते हैं।

हम उठे तो मार्शल बुल्गैनी स्वामी के पास आ गया और उनके साथ सेहत का जाम पीते हुए कहने लगा, 'एक सैनिक एक नाविक का अभिवादन करता है।'

मास्को के सहभोजों में क्या होता है? अचार, बहुत विशाल सामन मछली, रंग बिरंगी आईसक्रीमें, बड़े भड़कीले वेष में सोवियत मन्त्री, अन्य ऐसे सूट पहने हुये जिनमें सलवटें पड़ी हों, जिनका रंग भूरा हो और जिन पर नकटाई भी न लगी हो। बलगारिया की राजदूत ने अजीब किसम का काला वेष पहन रखा था और लाल रंग का रिब्बन लगा रखा था। सितारे का चिह्न पिन द्वारा उसकी छाती पर टंका था। मार्शलों ने हलके रंग के गंदुमी कोट पहन रखे थे। उनकी छाती पर पदकों की पंक्तियां लगी थीं और ये पदक ऐसे प्रतीत होते थे जैसे खेतों में गोभी के फूल लगे हों। नर्तकी के वस्त्र भी अच्छे न थे, परन्तु दो अति सुन्दर हीरे उसके कानों में लटक रहे थे।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि मुझे इस सहभोज में बहुत आनन्द आया, परन्तु अब हमारे बलगारिया से सम्बन्ध टूट गए हैं और हमारी परिपोषिती और हम अब एक दूसरे के साथ बोलते भी नहीं।

३० सितम्बर, १६४६

आखिर हमने क्रैमलिन की सैर भी कर ली। मुझे इस बात की

खुशी है कि हमने यह स्थान देखने में विलम्ब किया। मैं चाहती थी कि मुझे रूसी कला और इतिहास के विषय में कुछ अधिक जानकारी हो जाए क्रैमलिन को देखने के लिए कई दिन पहले आज्ञा प्राप्त करनी पड़ती है और विदेशी कार्यलय को बताना पड़ता है कि कौन कौन व्यक्ति जा रहे हैं। रूसी जनता को अजायबघर देखने की आज्ञा नहीं। क्रैमलिन का अहाता बन्द रहता है और हर समय इस पर भारी पहरा रहता है।

स्वामी हमें अपनी मोटरकार में बिठा कर ले गए थे इसलिए हमें क्रैमलिन के मुख्य द्वार से गुज़रने की आज्ञा मिल गई। प्रायः ग़ैर सरकारी लोगों को अन्दर पैदल ही जाना पड़ता है। मोटरकार में चढ़ कर द्वार में से गुज़रने से ही मैं उत्तेजित हो उठी। इसके साथ ६० फीट ऊँची दीवारें हैं जिन्हें मैं बाहर से देखती रही थी और जिनके बीच से गुज़रने के लिए मैं अधीर थी।

एक निर्देशिका हमारे पास आई। वह विदेशी कार्यालय की प्रतिनिधि थी। उसने भूरे रंग की यूनीफार्म पहन रखी थी। स्वामी के साथ जो चार आदमी थे उनके अतिरिक्त तीन गुप्तचर आ गए जो समस्त समय हमारे साथ रहे।

क्रैमलिन का भवन और उसके मैदान बहुत साफ़-सुथरे हैं। उन पर पालिश किया गया है और वे उस स्नानागार के समान प्रतीत होते हैं जिसमें टाईलें लगी हों। सोवियत संघ में मैंने जितने भी स्थान देखे हैं उनमें से केवल यही एक स्थान ऐसा है जिसका पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है।

हम एक केन्द्रीय वर्गाकार में पहुँचे। इसके चारों ओर गिर्जाघर बने हैं। इनमें से तीन बहुत बड़े हैं। इनमें इवान वैलीकी का ऊँचा बुर्ज भी है जिस पर घण्टी लगी है। इन गिर्जाघरों का पुनः निर्माण हो रहा है इस लिए हमें अन्दर जाने की आज्ञा नहीं मिली।

निर्देशिका ने बड़े गर्व से हमें ज़ार की तोप दिखाई। संसार में इस से बड़ी कोई तोप नहीं है। उसने यह बात स्वीकार की कि यह तोप

कभी चलाई नहीं गई। उसी प्रकार गर्व से उसने हमें एक घण्टी दिखाई जो संसार की सबसे बड़ी घण्टी है। यह भी कभी बजाई नहीं गई थी।

ग्रेट पैलेस जिसका निर्माण १८३८ ई० में हुआ था—एक विशेष युग का स्मारक है। इसे देखकर मुझे संयुक्त राज्य में स्थित सेराटोगा के होटल का विचार आया। इसकी सजावट का सामान भी उसी युग का था जिस युग का उस होटल में। परन्तु यहां का सामान वहां के सामान से कहीं अधिक शानदार था। यहां भारी भारी सोफ़ासैट तथा कुर्सियां थीं जिन पर साटिन और चमकीले कमखाब का कपड़ा चढ़ा था। कीमती लकड़ी की छोटी-छोटी मेजें थीं। गुलाब की लकड़ी के बने हुए पियानो थे जिन पर पच्चीकारी की गई थी। गायन के लिये जो स्थान था वहां लकड़ी पर कटाई का काम हुआ हुआ था। बैठने के स्थान गोल थे जिनके बीच में ताड़ के वृक्ष उगे थे। इस पर सैकड़ों स्फटिक फानूसों से प्रकाश पड़ रहा था जिन्हें हमारी सुविधा के लिये रोशन किया गया था।

जब यह महल बनकर तैयार हुआ तो ज़ारों ने इसका प्रयोग नहीं किया। वे मास्को में कभी-कभी आते थे। या तो अभिषेक के लिये या सरकारी काम से। एक के बाद एक कई कमरे बने थे। ऐसा प्रतीत होता था कि उनमें आज तक कोई भी नहीं रहा और ये अभी तक अछूते हैं। सजावट का सामना करीने से रखा था। यह बिलकुल नया प्रतीत होता था मानों सजावट करने वाले इसे सजाकर अभी अभी गये हैं। इसकी एक बात हम सबको बहुत पसन्द आई। हर एक कमरे में घड़ी थी। सभी घड़ियां चल रही थीं और बहुत शानदार थीं जिनमें चन्द्रमा और तारे घूमते थे। इनसे मिनटों, घण्टों, महीनों और सालों का पता चलता था। उनके आमुख पर परियां नाचती दिखाई गई थीं और छोटे छोटे लड़के दिखाए गये थे जो ढोल बजाकर घण्टों को इंगित करते थे। यदि कोई ऐसा समय आजाय कि इनकी मुरम्मत करने वाला संसार में कोई न मिले तो निश्चय ही इन्हें क्रैमलिन के किसी तह खाने में बंद कर दिया जायेगा।

महल से हम अजायबघर गये। यहां रूस का शाही कोष प्रदर्शित किया गया है। मुकुट में जो हीरे मणियां लगी थीं वे यहां नहीं रखी गईं। सोने चांदी की असंख्य तश्तरियां रखी हैं। गिर्जाघर के वस्त्र हैं। कीमती पत्थर इतने लगे हैं कि वस्त्र अकड़े हुयेप्रतीत होते हैं। चीनी मिट्टी और अनैमल के बर्तन भी बहुत हैं। एक चीज़ ऐसी थी जिसे देखकर हमें बहुत अचम्भा हुआ। एक अलमारी में कृत्रिम अंडे रखे थे जो अन्तिम ज़ार ने ईस्टर के उत्सव पर अपने परिवार के लोगों को भेंट किये थे। इनमें से पहला अंडा सम्राज्ञी के लिये था। वह उदास रहती थी और कभी हंसती न थी। उसे हंसाने और खुश करने के लिये ही यह अंडा बनाया गया था। इस उपहार का प्रयोजन सिद्ध हुआ इसलिये ज़ार ने आदेश दिया कि इस प्रकार का अंडा सम्राज्ञी को प्रतिवर्ष दिया जाये। जब भी यह अंडा नये सिरे से तैयार किया जाता था तो इसमें कुछ न कुछ वृद्धि कर दी जाती थी। अन्य अंडों में भी वृद्धि होती गई। एक अंडे के भीतर शाही नाव का सोने और मणियों का बना हुआ नमूना था। एक अन्य अंडे में ज़ार की अपनी ग़ाड़ी का नमूना था। इसे चलाने के लिये सोने की ताली से चाबी दी जाती थी। एक अंडा एक पुष्प के समान खुलता था। उसकी हर एक पंखड़ी पर ज़ार के किसी बच्चे का चित्र बना था। ये सब अंडे शाही सर्राफ़, फेबरजी, ने बनाये थे। सबसे अच्छा और अन्तिम अंडा १९१७ ई० में बन्दूक की धात और सोने के मिश्रण से बनाया गया था। अण्डा बन्दूक के चार कारतूसों पर रखा था।

अन्त में जब हमने सब कुछ देख लिया तो निर्देशिका ने एक संक्षिप्त भाषण दिया। जौर्ज मौर्गन ने बताया कि इसका मतलब था: यह सब किसी समय ज़ारों की संपत्ति थी। अब इस पर रूस के लोगों का अधिकार है। यह समस्त कोष उनका है। इससे उन्हें आनन्द लेना चाहिये और इसकी रक्षा करनी चाहिये।

लोग इसकी रक्षा जरूर करते हैं, परन्तु इससे आनन्द प्राप्त नहीं करते। उस दिन अजायबघर देखने वाले केवल हम ही लोग थे। इन चीज़ों को

देखने वाले महीने में पचास से अधिक नहीं होते। दर्शक प्राय: चुने हुये व्यक्ति अथवा विदेशी लोग होते हैं। इसे देखना उनका अधिकार नहीं, बल्कि यह रूसी सरकार की कृपा है कि वह उन्हें ये चीजें देखने देती है।

६ नवम्बर १६४६

कल ७ नवम्बर है। यह छुट्टी का दिन है और क्रान्ति की वर्षगांठ। नगर में खूब चहल-पहल है। स्थान-स्थान पर लाल झन्डियां लगाई जा रही हैं। प्रत्येक दुकान में लेनिन और स्तालिन के चित्र सजाये गये हैं। सरकारी भवनों के द्वारों पर उनके महान् चित्र सुशोभित हैं। रैड स्क्वेयर में भी रंग बिखरा है। लैनिन के मकबरे के दूसरी ओर के भवनों को ध्वजाओं से ढांप दिया गया है। मकबरे पर हाथ से रंग रोगन किया जा रहा है। इस काम में स्त्रियों का एक दस्ता लगा है। ये नारियां श्रद्धालु प्रतीत होती हैं फिर भी इनके सिर पर रक्षा पुलिस खड़ी है। पुलिसमैनों ने नीले रंग की टोपियां पहन रखी हैं और वे उनके वस्त्रों के एक-एक चिन्थड़े को ध्यान से देख रहे हैं। सीढ़ियों पर दरियां बिछ गई हैं। रूस के महान् नेता इन पर चढ़कर मकबरे की छत तक पहुँचेंगे। ये स्तालिन के आस-पास खड़े होकर सेना की प्रदर्शिनी को देखेंगे।

७ नवम्बर १६४६

प्रातराश आज हमने सवेरे ही ले लिया। हम नौ बजे घर से निकल पड़े। चाहते थे कि अच्छे वक्त मोखोवाया पहुँच जायें। एक चीनी दादी के समान मैं पोस्तीन के एक भारी कोट में लिपटी थी। इस कोट में मैं बहुत बलिष्ट और अच्छी लगती थी।

हमें मार्ग में तीन बार अपने कार्ड और पास दिखाने के लिए रुकना पड़ा। स्वामी के नायबों को भी अपने कागज पत्र दिखाने पड़े।

इसे जन-उत्सव का नाम दिया जाता है। परन्तु जनता का इसमें विशेष भाग नहीं होता। वे केवल उस प्रदर्शन में भाग लेते हैं जिसे वे स्वेच्छिक प्रदर्शन कहते हैं। खाली मैदान के चारों ओर किनारों से साथ साथ रक्षा पुलिस के आदमी कन्धे से कन्धा मिलाये खड़े थे। उन्होंने

खाकी ऊन की वर्दियां पहनी थीं और नीली टोपियां ओढ़ी थीं। हम उनके पास से गुजरे, लेकिन मकबरे के दोनों ओर पत्थर के बैंच स्थाई रूप से लगे हैं। हम बाईं ओर बैंचों पर सामने की पंक्ति में बैठ गये।

वर्गाकार के दूसरी ओर लाल सेना की पंक्तियां खड़ी थीं। सैनिक सचेत थे। उनके बीच में बाजे वाले। क्रेमलिन के घंटे ने दस बजाये। पोलीतब्यूरो के सदस्य जिन्होंने काले रंग के ओवरकोट और हैट पहन रखे थे पार्श्व के द्वार से आये और सीढ़ियों द्वारा छत पर चढ़ गये। वहां पहुँचकर वे एक पंक्ति में खड़े हो गये। युद्ध मन्त्री घोड़े पर चढ़कर आया, नीचे उतरा और जाकर इन लोगों में खड़ा हो गया। तोपों से अभिवादन के गोले छूटे और बैंड ने राष्ट्रीय गान बजाना आरम्भ किया। पोलितब्यूरो के सदस्यों को छोड़ कर सबने टोपियां उतार लीं। संभवतः इसमें यही विचार था कि मनुष्य अपने आपको स्वयं अशीर्वाद नहीं देता।

कूच आरम्भ हुआ। समस्त रूस में दर्शनीय जूते केवल सैनिकों के ही होते हैं। जब ये जूते पत्थरीली सड़क पर पड़ते हैं तो उनसे शिथिल कर देने वाली आवाज़ निकलती है। रूसी सैनिक भी उसी प्रकार पग रखते हैं जैसे जर्मनी के सैनिक और उसे भूमि पर इस ज़ोर से मारते हैं कि सैनिकों के कपोल तक हिल जाते हैं।

सैनिक प्रदर्शिनी सवा घंटे तक होती रही। उसके पश्चात असैनिक संस्थाओं की बारी आई। इनमें कारखानों की समितियां, खेलने वालों की पार्षद, औ स्कूलों के प्रतिनिधि थे। उनकी रंग-बिरंगी रेशम की ध्वजायें बढ़ते हुये लोगों के सिरों पर फहरा रही थीं। यह दृश्य बहुत आकर्षक था।

सेना की कवायद समाप्त हुई तो रक्षा पुलिस ने लम्बी-लम्बी पंक्तियां बना लीं। पुलिसमैन इस प्रकार खड़े थे कि जलूस में चलने वालों की पांच-पांच की टोलियां बन गईं। पुलिस की एक पंक्ति के मुख अन्दर को थे एक के बाहर को। इसका अभिप्राय यह था कि रूस के इन वफ़ादार लोगों का जो बढ़े चले आ रहे थे प्रत्येक कदम पुलिस की दृष्टि में रहे।

हम आधे घंटे तक उन्हें देखते रहे। उसके पश्चात स्वामी के रक्षियों

के साथ मोखोवाया स्क्वेयर की ओर चल पड़े। यह प्रदर्शिनी साढ़े ग्यारह बजे से पराह्न के मध्य तक होती रही। आज रात को सड़क पर नाच होगा, रोशनी होगी और आतिश बाज़ी छूटेगी।

९ नवम्बर, १९४९

मैंने सभी प्रकार के जूते खरीद लिये हैं—बारिश के, हिम के और सर्दी के। इस पर भी चैन नहीं। जूते मैं देश से भी लाई थी, परन्तु सिर का वेष जो सर्दी में प्रयुक्त होता है वह यहीं खरीदना चाहती थी।

कल मैंने एक बहुत ही अच्छी रूसी टोपी खरीदी। यह टोपी क्या पोस्तीन की गोल पगड़ी है। इसका रंग मेरे गंदुमी कोट से मेल खाता है। इसे पहन कर मैं अन्ना करेनीना की माता के समान लगती हूँ, परन्तु यह गरम है और सिर को कस लेती है। हवा और सर्दी से यह अवश्य मेरा बचाव करेगी। शायद 'सूजी' को यह पसन्द न आये, परन्तु मुझे यह बहुत अच्छी लगी है।

जैसे संयुक्त राज्य में 'बी आल्टमन मार्शल फील्ड' टोपियां बनाने के लिये प्रसिद्ध है उसी प्रकार मास्को में 'मोस्तौर्ग' है। ऐलिन मौरिस मुझे वहां ले गई। वहां बहुत भीड़ थी। परन्तु हम कर कराके अन्दर घुस गये। मुझे जो टोपी पसन्द आई उससे दुकानदारिन को बहुत निराशा हुई। उसे विचार था कि मैं कोई बढ़िया टोपी खरीदूंगी। जो नमूना मुझे पसन्द आया हमारी मुद्रा में उसका मूल्य ३२.५० डालर था। मेरे विचार के अनुसार यह काफ़ी भारी रकम थी। मैंने बाद में मुड़ कर देखा। सभी स्त्रियां उसी नमूने की टोपियां खरीद रही थीं। एक बांकी विदेशी स्त्री ने नई प्रथा चला दी थी।

स्त्रियों के सिर के वेष का व्यापार रूस में बहुत महत्वपूर्ण व्यापार है। गर्मी में युवतियां नंगे सिर रहती हैं। परन्तु रूमाल बांधना शिष्टता का चिन्ह समझा जाता है। कोई भी वयस्क नारी नंगे सिर दिखाई न देगी। शायद यह पूर्वी सभ्यता के प्रभाव का अवशेष है।

३ दिसम्बर, १६४६

आकाश में हिम छा गया है। स्वामी की खिड़की के बाहर लगे तापमान का पारा शून्य से ८ या १० दर्जे ऊपर रहता है। हिम मास्को को फबता है। इससे बहुत सी गंदगी दूर हो जाती है और प्राकृतिक दृश्य चमक उठता है। जब कभी गिर्जाघरों पर भड़कीला रंग रोगन किया जाता था और गुंबद सुनहरी होते थे उस समय यह दृश्य और भी भव्य होता होगा।

पिछले शनि हम बड़े गिर्जाघर में सन्ध्या की आराधना के लिये गये। रूसी गिर्जाघरों में बैठने के लिये स्थान नहीं होते। लोग भिंचे खड़े थे। वहां अधिकतर बूढ़े आदमी और बूढ़ी स्त्रियां ही थीं। मुझे आशा न थी कि पुरुषों की संख्या इतनी अधिक होगी। वे सब के सब भक्त प्रतीत होते थे। वे निर्धन थे। द्वार पर भिखारियों की पंक्ति खड़ी थी। वे भी इस भीड़ का भाग मालूम होते थे।

आराधना पर्दे के पीछे से होती है इसलिये जन समूह प्रत्यक्ष रूप से इसमें भाग नहीं ले सकता। गायन लगातार होता रहता है। यह गाने पहले छज्जे के ऊपर से गिर्जाघर के एक पक्ष से उठता है फिर दूसरे पक्ष से। यह बेतुका राग होता है। गिर्जाघर में चमक-दमक बहुत है। मूर्तियों पर मूर्तियां रखी हैं। बहुत सी मूर्तियों और तस्वीरों का रंग बहुत भद्दा है। बड़े-बड़े फानूस लटकते हैं और विशाल मोमबत्तियां लगीं हैं। प्रकाश का बाहुल्य है।

यहां आकर गर्माई मिलती है शायद वही लोगों को आकर्षित करती है। या हो सकता है आकर्षण का कारण प्रकाश अथवा गिर्जाघर की शोभा हो। यहां शायद वे ही लोग आते हैं जो दाम देकर सुन्दरता नहीं खरीद सकते। गिर्जाघर कभी खाली नहीं होते। सप्ताह में कई बार आराधना होती है और सदैव ही लोगों की भीड़ लगी रहती है। मुझे इस बात का विश्वास हो गया है कि रूसियों की धर्म में श्रद्धा है। सरकार

ने उनकी इस दृढ़ भावना का लाभ उठाया है और इसे लेनिन, स्तालिन और दल की भक्ति में परिवर्तित कर दिया है।

प्रत्येक क्षेत्र में, जहां कहीं कला और संस्कृति विद्यमान होती है क्रैमलिन का हाथ पहुँच जाता है। यह भावहीन हाथ कला की अभिव्यक्ति को रोक देता है। रूस के गायनाचार्यों का सम्मेलन था। यह सोवियत अकादमी आफ़ कम्पोज़र्स नाम की रागनियों की संस्था की ओर से हो रहा था। सम्मेलन का यह अन्तिम कार्यक्रम था। मैंने श्रोतागणों पर दृष्टि डाली। शिष्ट लोग थे। इनमें से बहुत से नर-नारी यह जानते थे कि उत्तम श्रेणी का गान क्या होता है। उनमें से बहुत से स्वयं गायन विद्या में दक्ष थे और राग निर्माता थे। हम लोग जो पश्चिमी देशों में रहते हैं रूसी संगीत कला को किसी समय पसन्द करते थे, परन्तु जो गान यहां हो रहा था वह बिल्कुल तुच्छ था। श्रोताओं के लिये यह बात दुख-दाई थी कि उनकी कला का इस प्रकार अपमान हो रहा है। उनके आनन पीड़ा ग्रस्त थे। यह गान जो इस समय हो रहा था स्तालिन के वन सम्बंधी कार्यक्रम की स्तुति के हेतु था। आर्केस्ट्रे का अधिपुरुष एक अति योग्य व्यक्ति था। गान की रचना शौस्तेकोविच ने की थी जो सरकार की नज़रों से गिर गया था और पुनः ख्याति प्राप्त करना चाहता था।

७ दिसम्बर, १९४९

बाहर वर्गाकार में ऊधम मचा है। बीसियों बच्चे खेल रहे हैं। वे ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे काले-काले बिन्दु बर्फ पर लुढ़के जा रहे हों। बच्चे रूसी जीवन का सार हैं।

रूस में बच्चा गाड़ियों का रिवाज बहुत कम है। एक साल से छोटे बच्चों को प्रायः दादियां जिन्हें 'बाबुश्का' कहते हैं उठाये फिरती हैं। बच्चों को इस प्रकार कपड़े में लपेटा जाता है कि वह लकड़ी का लट्ठा प्रतीत होता है। ऊपर से उसे एक रज़ाई से ढक दिया जाता है जिसका एक सिरा बच्चे के पांव से और दूसरा उसकी छाती से बंधा होता है। मैंने किसी

रूसी बच्चे को रोते नहीं सुना। प्रायः उनके मुँह में चूसनी लगी होती है शायद इसीसे वे रो नहीं पाते।

छोटे बच्चे जो चल-फिर सकते हैं, पोस्तीन के एड़ियों तक के कोट पहनते हैं। वे जानवरों के समान प्रतीत होते हैं। उनके सिरों पर छज्जेदार टोपियां होती हैं। छज्जों के नीचे से उनकी प्रकाशमान आंखें खूब चमकती हैं। मैंने कल एक बच्चा देखा जिसने लाल लोमड़ की खाल का कोट पहन रखा था। वह अंगोरा बिल्ली के बच्चे के समान प्रतीत होता था। एक अन्य बच्चे ने नीले रंग का वेष पहन रखा था। इसका किनारा पोस्तीन का था। वह ऐसा मालूम होता था जैसे अभी 'बोरिस गोडूनोव' से निकल कर आया हो।

सर्दी के वस्त्र रूसियों पर खूब फबते हैं। इस बात में बच्चे और बड़े सब एक समान हैं। कुछ आदमी बहुत शानदार टोपियां पहनते हैं जो पोस्तीन की बनी होती हैं। सेना के उच्च अधिकारी भूरे अस्त्राखान की खाल की ऊँची टोपी पहनते हैं जो बहुत ही शोभा देती है।

स्त्रियां भी पोस्तीन के कोट पहनती हैं। परन्तु उनकी काट ठीक नहीं होती और पोस्तीन भी हल्के दर्जे की होती है। कुछ भी हो, सर्दी के वस्त्र गर्मी के मैले कुचैले वस्त्रों से कहीं अच्छे मालूम होते हैं।

मैंने किसी रूसी स्त्री को कभी सड़क पर पाजामा पहने नहीं देखा। सर्दी के लिये यह वेष अच्छा है, परन्तु ऐसा मालूम होता है कि सोवियत के रिवाज इसकी आज्ञा नहीं देते। जो स्त्रियां सड़कों पर काम करती हैं वे भी स्कर्ट पहनती हैं। यहां लम्बे बाल रखने का भी रिवाज है।

जब लड़कियां जवानी में कदम रखने लगती हैं वे विशेष प्रकार की चुटिया गूंथती हैं। उसमें गोटेदार फीता गुंथा होता है। नर्तकियां जो मुकुट पहनती हैं उसमें भी इसी प्रकार की चुटियां बनी होती हैं। मुकुट ती कसकर गूंथा होता है।

ओपेरा और नाटक देखने जाओ तो वहां स्त्रियां रिवाज के अनुसार मूल्यवान वस्त्र पहन कर आती हैं। वे लम्बे फ्राक नहीं पहनतीं।

साधारण स्कर्टों से उनके स्कर्ट कुछ लम्बे होते हैं। वे साटिन या मखमल के बने होते हैं। उनका रंग या तो काला होता है, या आलूचे अथवा मदिरा जैसा। कन्धे पर वे सदैव सिलवर-फौक्स नामक लोमड़ की पोस्तीन डाले होती हैं।

१२ दिसम्बर, १६४६

बाहर का दृश्य मिट्टी के समान भूरा है। बर्फ लगभग सब पिघल चुकी है। शेष जो रही है वह जमकर सख्त हो गई है और कहीं-कहीं गंदी धारियों के रूप में बिखरी हुई है। आशा है कि क्रिसमस के समय पर फिर हिमपात होगा। बिना हिमपात के मास्को सुहावना प्रतीत नहीं होता।

यहां क्रिसमस का उत्सव नहीं मनाया जाता। नये साल का उत्सव मनाया जाता है। सोवियत सरकार ईसाइयों के त्योहारों को सरकारी तौर पर नहीं मनाती। जिन वृक्षों को पवित्र समझा जाता है वे नये साल के वृक्ष कहलाते हैं क्रिसमस के वृक्ष नहीं। स्पैसो के बीच के दालान के एक कोने में हम भी वृक्ष खड़ा करेंगे। इस पर लगाने के आभूषण खरीदने के लिये मैं कल बाज़ार जाऊँगी। इस घर में सभी कुछ विशाल है। इसलिये वृक्ष भी बड़ा होगा तो शोभा देगा।

२० दिसम्बर १६४६

क्रिसमस के अवसर पर हिमपात की आशा थी सो हिमपात हो गया। बहुत गहरी बर्फ पड़ी है। रात को देर तक और आज बहुत सवेरे से दवौर्निक्स अर्थात् नर और नारी बेलचे फावड़े लेकर बर्फ साफ करने में लगे हैं। यहां का यह कानून है कि बर्फ पड़ने के कुछ घंटे बाद ही सड़कें साफ हो जानी चाहिये।

सुना है कि चीन का प्रधान म्यो (चीन का साम्यवादी नेता म्योसी टूंग सम्पादक) २१ दिसम्बर तक यहीं रहेगा। उस दिन स्तालिन का जन्म दिन है और उसकी सत्तरहवीं वर्षगांठ है। म्यो की मास्को में उपस्थित के विषय में एक संक्षिप्त सूचना छपी थी। विज्ञापन भी छपे थे। जिन पर लिखा था "सोवियत और चीन युवक संगठित हैं"। इनके

अतिरिक्त उसकी मास्को में उपस्थिति के विषय में कोई प्रचार नहीं किया गया। सुनने में आया है कि वह यहां कुछ अधिक समय तक ठहरेगा।

यह भी सुनने में आया है कि बौलशोई के स्थान पर कल रात को "रैड पौप्पी" अर्थात् लाल पोस्त नाम का नाच होगा। वहां केवल दल के उच्च नेता ही उपस्थित होंगे। वे स्तालिन का और उसके साम्राज्य के नये भाग के शासक का अभिवादन करेंगे।

"रैड पौप्पी" में अफीम के व्यापार की कहानी दी गई है और बताया गया है कि अमरीका और ब्रिटेन के पूंजिवादियों ने क्या २ दुष्ट काम किये। यह नया नाच नहीं है। इसकी मूल कहानी में चीनियों के पतन और अवसान का वर्णन था। या जिन लोगों ने दोनों कहानियों का चित्रण देखा है वे कहते है कि नई कहानी में बहुत कुछ संशोधन किया गया है। संशोधन का अभिप्राय यही है कि कहानी नई सरकार की विचारशैली के अनुसार ढल जाये। नई कहानी में अमरीकियों की दुष्टता को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाया गया है। अफीम के व्यापार के साथ २ बन्दूकों और तोपों के व्यापार का भी वर्णन किया गया है। इस वृतान्त के अनुसार ये लकड़ी की पेटियों में बन्द होकर आती थीं जिन पर लिखा होता था "संयुक्त राज्य अमरीका में बना"। इन्हें कुलियों की टोलियां उठा उठाकर अन्दर रखती हैं।

हमने एक और मार्मिक काम किया है। पिछले शनि को ओमिको परिवार ने हमारे साथ दोपहर का भोजन किया। हमने उनका स्वागत बैठने के नीले कमरे में किया था। वहां खूब आग जल रही थी। दीवार के साथ रखी मेज़ पर काकटेल, शैरी और टमाटर का रस पड़ा था। केवल पैस्तोएव ने ही शैरी पी। ओमिको परिवार के लोगों ने टमाटर के रस के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं पिया।

पैस्तोएव ने विदेशी कार्यालयों की यूनीफार्म पहन रखी थी। वह सरकारी निरीक्षक था। ओमिको ने काला सूट पहन रखा था। मैडम ओमिको के सिर पर अस्त्राखान की पोस्तीन की छोटी सी टोपी थी।

उसके वेष के साथ एक छोटी 'मफ़' अर्थात् झालर लगी थी, जो बहुत सावधानी से बनाई गई थी। इस पर व्यय भी बहुत हुआ होगा। इसे देखकर मुझे अपनी परदादी फैनी की याद आ गई, जिसकी मृत्यु ८७ साल की अवस्था में १६२० ई० में हुई थी।

झालर आलूचे के रंग के रेशम से बनी थी, जिस पर कढ़ी हुई मखमल के पैवन्द लगे थे। आस्तीन और गर्दन की पट्टी पर मखमल की पाइपिंग की गई थी। उस पर एक जड़ाऊ पिन था जिसका आकार सोने में जड़े हीरे की मक्खी के समान था।

ओमिको मेरी दाईं ओर बैठा था। उसने बहुत थोड़ा भोजन किया। इसका कारण यह था कि एक घन्टा पश्चात् उसे क्रैमलिन के एक सहभोज में सम्मिलित होना था जो म्यो के अभिवादन में दिया जा रहा था। परन्तु उसकी पत्नी ने पेट भर कर खाया और ऐसा प्रतीत हुआ कि उसे इस सहभोज में बहुत आनन्द आया है।

बातचीत में कुछ कसाव था। परन्तु इसका लहजा और इसका विषय ठीक ही था। हमने ओमिको के पुत्र के विषय में वार्ता की। उसकी आयु भी रोजर जितनी है। वह अपने माता-पिता के साथ संयुक्त राज्य में कई साल तक रहा है। मैंने उसकी माता से पूछा कि क्या वह अब भी अंग्रेज़ी पढ़ता है?

मैडिम ओमिको ने उत्तर दिया, "यह काम उसके लिये बहुत कठिन है। कई बार वह कमरा बन्द कर लेता है और अपने आप से ही अंग्रेज़ी में बातें करता है। आप जानती हैं कि यहां ऐसा कोई नहीं जिसके साथ वह अंग्रेज़ी में बात-चीत कर सके।"

कितनी मूर्खता की बात है? साधारण परिस्थितियों में हम कह सकते थे कि उसे इधर भेज दिया करें। रोजर को उससे मिलकर बात-चीत करने में बहुत खुशी होगी। परन्तु हर समय यह विचार रखना पड़ता है कि स्वाभाविक बात कहना या उसे करना असम्भव है।

२१ जनवरी, १९५०

कल एलन के साथ और मेरे साथ एक विचित्र घटना हुई। विचित्र इस लिये कि सोवियत के नागरिक अपने आप हम से कम ही बात-चीत करते हैं। हम गोर्की स्ट्रीट पर बातें कहते हुये जा रहे थे। यह एक बहुत चौड़ी सड़क है जो मंडी के मध्य में से होकर रैड स्क्वेर को जाती है। एक हंस मुख स्त्री आई और हमसे रूसी भाषा में बात करने लगी।

'मैंने आपको अंग्रेज़ी बोलते सुना है। परन्तु क्या आप अमरीकी हैं?'

एलन ने उत्तर दिया, 'हां।'

'मैं रात को सदैव 'वौएस आफ अमेरिका' और 'बीबीसी' का प्रोग्राम सुना करती थी, किन्तु अब इनमें से कोई भी मेरे रेडियो पर सुनाई नहीं देता। मुझे बहुत खेद होता है। वे बहुत अच्छे प्रोग्राम होते थे।

वह कुछ दूर गई और फिर एलन से कहने लगी, 'मैंने आपकी नई औषधियों के विषय में पढ़ा है। क्या स्टिप्टोमाईसिन की कुछ मात्रा मंगाई जा सकती है? मेरा एक भाई है। वह बीमार है। उसे क्षय का रोग लगा है। डाक्टरों का विचार है कि यदि यह औषधि उसे मिल जाये तो हो सकता है उसकी जान बच जाये।'

एलन ने कहा, 'दुर्भाग्यवश हम आपकी कोई सहायता नहीं कर सकते।' हमें इस बात का खेद था। हम उसकी सहायता करना चाहते थे किन्तु हमें विचार आया कि उसके डाक्टर के पास यह औषधि अवश्य होनी चाहिये।

उस स्त्री ने कहा, 'मैं जानती हूँ। किन्तु कोई बात नहीं। कभी अच्छे दिन भी आयेंगे।'

उसने एलन से हाथ मिलाया और चली गई। यह बहुत दुखद घटना थी। हमें यह किसी प्रकार भी मालूम न हो सकता था कि स्त्री सच कह रही है। अगर उसने सच भी कहा था तो भी हम उसकी सहायता न कर सकते थे। यदि हम उसकी सहायता करते तो उसके और हमारे लिए जोखिम खड़ी हो जाती। हम जानते थे कि गुप्तचर हमारा

पीछा कर रहे हैं और उसने हम से बात कर जोखिम का काम किया है।

हम महामात्रावास पहुँचे तो हमने डाक्टर से पूछा कि स्ट्रिप्टोमाइसीन जैसी नई औषधियों की रूस में क्या स्थिति है। उसने कहा कि यह औषधि रूस में आसानी से नहीं मिल सकती। उसने बताया कि चोर बाज़ार में इसका भाव १०० रूबल प्रति ग्राम है। और इलाज के लिए कम से कम ४० ग्राम की जरूरत है।

आदान-प्रदान के वर्तमान दर के अनुसार १०० रूबल का मतलब है १२. ५० डालर (अब २५.०० डालर) एक रूसी के लिए ४००० रूबल एक बहुत बड़ी सम्पत्ति है। यदि किसी के पास इतना धन हो भी तो ४० ग्राम औषधि प्राप्त होना असम्भव नहीं। साधारण रूस में हम कह सकते हैं कि दुर्लभ औषधियां भाग्यवान लोगों को ही मिल सकती हैं। हम कह सकते हैं कि जितना किसी की राजनीतिक सत्ता है उसके इलाज की उतनी ही अधिक सम्भावना है।

२६ जनवरी, १६५०

जब आस्ट्रियन सन्धि के सम्बन्ध में स्वामी की ग्रोमिको से अन्तिम भेंट हुई थी तो उन्होंने पूछा था, श्रीमान् मन्त्री जी, हमारा समझौता होने में कितनी देर लगेगी? यह स्थिति अब बहुत देर से चल रही है।

ग्रोमिको ने उत्तर दिया, 'यह इस पर निर्भर है कि आप समय को कितना महत्त्व देते हैं।'

सचमुच रूसियों का यही रुख है। इन लोगों के साथ व्यवहार करने में हमें यह बात याद रखनी पड़ती है।

३१ जनवरी, १६५०

मैंने आज स्त्रियों को एक नया काम करते देखा है। वे ट्रकों में गंदगी भर रहीं थीं। गंदगी ऊंचे-ऊंचे पीपों में डाली जाती है जिनके ढकने बहुत भारी-भारी और सब एक समान होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे सब नगरपालिका की ओर से दिये जाते हैं। संभव है उनका किराया भी लिया जाता हो। बड़ी-से-बड़ी इमारत के सामने तीन पीपों से अधिक

नहीं होते। इससे यह विदित होता है कि सोवियत संघ में गंदगी बहुत कम होती है। अजीब बात है कि मैंने कहीं टूटी-फूटी चीजें फेंकने के पीपे में नहीं देखे। वे पुराने अखबारों का क्या करते हैं? शायद अपने 'पेचकास' अर्थात् चूल्हों में जला देते हैं।

रूस में मकान मिलना कितना कठिन है इसका बोध एक साधारण विधि से हो सकता है। जो लोग किसी मकान में रहते हैं उनके नाम उस मकान के द्वार पर अंकित होते हैं। इन नामों को गिनना एक अति रोचक क्रिया है। आज सवेरे मैं एक ऐसे मकान के पास से गुजरी जिसकी गणना रूस के साधारण मकानों में होती है। इसमें एक छोर से दूसरे छोर तक आठ खिड़कियां थीं और नीचे से ऊपर को पांच। द्वार पर लगी तख्ती पर ३२ नाम लिखे थे। उससे आगे इसी प्रकार का अपितु कुछ छोटा मकान था। इसमें एक छोर से दूसरे छोर तक पांच खिड़कियां थीं और ऊपर से नीचे तीन। उसके द्वार पर लगी तख्ती पर २० नाम लिखे थे।

जब युवा व्यक्ति अपने विवाह की योजना बनाते हैं तो मकान की समस्या उनके सम्मुख पहले होती है। उन्हें यह संभव नहीं दीखता कि वे दोनों अपना घर बनाकर रह सकेंगे। जब तक उनके बच्चे नहीं हो जाते उन्हें रहने के लिये अधिक स्थान नहीं मिल सकता। किन्तु वे फिर भी विवाह कर लेते हैं और ससुराल वालों के साथ या उनके सम्बन्धियों के साथ रहते हैं।

मुझे एक नौकरानी ने बताया कि यदि एक आदमी अपनी पत्नी को तलाक देता है तो वह उसी मकान में पर्दा डाल कर रहने लगती है। उस आदमी की नई दुलहन आती है परन्तु, पुरानी दुलहन को जब तक कोई स्थान न मिल जाये उसे उस मकान से निकाला नहीं जा सकता।

सोवियत संघ में तलाक की वारदातें बहुत कम होने लगीं हैं। समाचार पत्रों में और पत्रिकाओं में परिवार के संगठन पर बहुत ज़ोर दिया जाता है और कहा जाता है कि बच्चों की भलाई इसी में है कि माता-पिता एक दूसरे को न छोड़ें। श्रमिकों के बच्चों के लिये नर्सरी और किंडर-

गार्टन स्कूलों का प्रबन्ध है। जिन बच्चों की देखभाल घर पर हो सकती है उनका इन स्कूलों में जाना आवश्यक नहीं। इस बात का निर्णय सरकार के हाथ में है कि किन बच्चों को नृत्य सिखाया जाये, किन को अँग्रेज़ी और किन को फ्रांसीसी। कौन बच्चा ऐसा है जो कला की उच्च चाहिये। शिक्षा से कौन लाभ उठा सकेगा और किसे शिल्पकारी के स्कूल में भेजना उचित होगा माध्यमिक पाठशालाओं में किन बच्चों को भेजा जाये और किन को विश्व विद्यालय में इसका निर्णय भी सरकार ही करती है।

जब बच्चे छोटे होते हैं तो माता-पिता उनके लिये घर बनाते हैं और उनके साथ बहुत स्नेह करते हैं। उसके पश्चात् उन सब बच्चों के चेहरे एक जैसे हो जाते हैं। लड़कों और लड़कियों में बारह तेरह साल की अवस्था में भेद किया जा सकता है, इससे पूर्व नहीं। इस अवस्था के पश्चात् सरकार ही उनके जीवन को निर्धारित करती है और उन पर छा जाती है।

३ फरवरी, १६५०

विमान आ रहे हैं। हमें सूचना मिली है कि बड़ा विमान यहां २३ फरवरी को आयेगा और हम २५ फरवरी को जा सकेंगे। हम एक रात जर्मनी में व्यतीत करेंगे और फिर ब्रसल्ज़ जायेंगे। मेरा विचार है कि मैं तीन दिन पूरे आवेश से कपड़ों की तैयारी में लगा सकूंगी। मैंने दर्जी को सूचना दे दी है कि वह इसके लिये तैयार रहे।

११ फरवरी, १६५०

हमारे प्रस्थान करने में केवल दो सप्ताह बाकी हैं। आज भारी हिमपात हो रहा है। आशा है कुछ दिन के लिये आकाश खुल जायेगा और हम यहां से सुगमता से जा सकेंगे।

क्रिसमस के समय एक बार देश जाना मिले और अगस्त में जब रोजर जायेगा उस समय थोड़ा सा अवकाश मिल जाये तो यहां रहना न अखरेगा। स्वामी ने कुछ दिन हुए यह कह कर तसल्ली दी कि हमारी एक तिहाई अवधि समाप्त हो चुकी है। किसी-किसी बात में यहां रहना बहुत दिलचस्प प्रतीत होता है। परन्तु अपने संसार से इतनी दूर और

अलगअ-लग रहना भी पाशविक है। अब मुझे मालूम हुआ है कि इस वातावरण में अधिक देर रहने से लोगों की क्या दशा हो जाती है। उन्हें देखकर खेद होता है। उन लोगों की हालत पर विशेष रूप से तरस आता है जो हमारे सहकारी हैं और जिनके मिशन छोटे हैं। इन लोगों को रूसी विशेष रूप से तंग करते हैं। वे कोई-न-कोई बात ऐसी करते रहते हैं जिससे इन बेचारों का जीवन दूभर हो जाता है।

यहां काली मिर्च भी एक न्यामत है। हमारी एक दर्ज़िन ने कहा कि उसके काम की मज़दूरी उसे वस्तु रूप में दी जाये। उसने सफेद साबुन की तीन छड़ों की और काली मिर्च के एक डिब्बे की मांग की।

उसने काफ़ी मेहनत की थी। किन्तु इस उजरत से उसकी तसल्ली हो गई। औसत दर्जे के श्रमिक को एक समय का भोजन काम कराने वाले की ओर से मिलता है इसमें रोटी, मांस और भाजी का गाढ़ा शोर्बा मिलता है। काम हाथ का है अथवा किसी अन्य प्रकार का, इसी बात पर भोजन की मात्रा निर्भर होती है।

धोबी घाटों को देखने से यह बात भली-भांति मालूम हो जाती है कि रूसी लोग क्या पहनते हैं। मास्को के धोबी घाटों पर सूत के बुने हुए और रंगीन बनयान जो नर-नारी दोनों पहनते हैं पर्याप्त संख्या में दिखाई देते हैं। स्त्रियों के घुटने तक के कच्छे भी धुलाई के लिए आते हैं। ये भी सूत के बुने होते हैं। इनका रंग या तो गंदुमी होता है या चमकदार नीला अथवा ईंट के समान लाल। प्यालियों अथवा किसी और चीज़ को ढांपने के, बिना उलेहड़ी किये पतली मलमल के वर्गाकार टुकड़े भी बहुत विद्यमान होते हैं। इनमें पनीर छानने के रूमाल भी होते हैं। इनके अतिरिक्त कहीं-कहीं टाकियां लगी चादरें, मेज़पोश और बेलदार सूती पर्दे भी नज़र आते हैं। कभी-कभी रंगीन कमीज़ें, मर्दाना और ज़नाना जर्सियां भी दृष्टिगोचर होती हैं। बड़े कपड़ों की संख्या प्रायः बहुत थोड़ी होती है।

१५ फरवरी, १६५०

कल मैंने भू गर्भ ट्रेन से एलन मौरिस के साथ पहली बार यात्रा की। मैं बहुत पहले से यह यात्रा करने की इच्छुक थी, किन्तु मुझे अकेले जाने का साहस न हुआ था। मुझे उसके प्रोत्साहन की आवश्यकता थी। रूसी अपनी मैट्रो अथवा भूगर्भ ट्रेन की सराहना बड़े गर्व से करते हैं। निश्चय ही यह बहुत प्रभावशाली है। स्टेशन चमकदार संगमरमर और पत्थर के स्नानगार के समान हैं, परन्तु स्तम्भों का प्रयोग उदारता से किया गया है। उज्ज्वल मेहराबें हैं, दिवारों पर जगह-जगह चित्र बने हैं कांसे की मूर्तियां रखी हैं। ये सब इतने चमकते हैं कि आंखें चुंधिया जाती हैं। उनका संचालन बड़ी कुशलता से होता है। इस बात का विचार नहीं होता कि इन्हें ठीक-ठाक रखने पर क्या खर्च आयेगा। गाड़ियां खुली हैं और उनमें खूब रोशनी होती है। भीड़ उनमें नहीं होती। इसका प्रभाव बहुत अच्छा पड़ता है। कर्मचारी यदि इस पर गर्व करते हैं तो वे सच्चे हैं।

मास्को में वाहन के साधन बहुत अच्छे हैं। ट्रौली बसों के संचालन की विधि सन्तोषजनक है। जहां कहीं संभव है उन्होंने सड़क पर चलने वाली मोटर कारों का स्थान ले लिया है। साधारण कामों के लिये रूसी लोग प्रायः डेढ़ टन के ट्रक किराये पर करते हैं। परिवार ने बाहर सैर के लिये जाना हो, शव ले जाना हो, विवाह हो, घर बदलना हो तो यही खुला ट्रक काम देता है। कभी-कभी वे इसमें कुर्सियां और बैंच रख लेते हैं। या ऐसे ही उसमें घुस जाते हैं।

सड़क पर शव ले जाने वाली गाड़ी मैंने केवल दो बार देखी है। प्रायः शव के साथ जाने वाले लोग खुले ताबूत के साथ ही बैठ जाते या खड़े हो जाते हैं। कभी-कभी इस गाड़ी के पीछे एक ट्रक होता है जिसमें शोक करने वाले मित्र बैठते हैं। उसमें बाजा भी होता है। शव प्रायः 'सिमैट्रियों' में ही दफ़नाये जाते हैं, किन्तु जलाने का रिवाज बढ़ता जा

रहा है। शव को जलाने में केवल पांच रूबल अर्थात सवा डालर का खर्च है। दफ़नाने में इससे कहीं अधिक।

एक दिन बहुत सर्दी थी। मैं महामात्रावास से स्पैसो की ओर आ रही थी। एक बूढ़ा व्यक्ति ताबूत को हाथ की गाड़ी पर रखे खींचे लिये जाता था। गाड़ी हिचकोले खाती जा रही थी। मेरे अतिरिक्त किसी का भी उसकी ओर ध्यान न था। मैं घर पहुँची तो मैंने अपने द्वारपाल माईक से पूछा कि यह क्या बात है। मैंने समझा था कि ताबूत में शव है।

माईक ने कहा, 'श्रीमती जी, यह बात नहीं। वह तो अभी दुकान से ताबूत खरीद कर लाया है।'

मैंने पूछा 'क्या ताबूत बाज़ार में बना बनाया मिल जाता है? इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि यदि कोई अपनी सास से छुटकारा पाना चाहे तो वह उसे मार कर इस प्रकार गाड़ी द्वारा लेजाकर कहीं दफ़ना आ सकता है?'

माईक समझता है कि ताबूत खरीदने के लिये प्रमाणपत्र दिखाना पड़ता है। मुझे यह सायत की बात प्रतीत होती है।

सम्पादक की ओर से . .

श्रीमती कर्क तीन महीने मास्को से बाहर रहीं इस लिए तीन महीने तक पत्र नहीं लिखे गये। कुछ समय उन्होंने निकट पूर्व के देशों में व्यतीत किया, एक महीना अमरीका में गुज़ारा जहां उनकी अपने दो नव-जात पौत्रों से भेंट हुई, जलयान द्वारा वापिस यूरोप आने, रेल· गाड़ी द्वारा पैरिस से स्टाकहालम जाने में भी समय लगा। कुछ काल हैलसिंकी में रोजर के साथ व्यतीत हुआ। दो रातें रेल गाड़ी द्वारा लेनिनग्राद और मास्को जाने में लगीं।

२६ मई, १६५०

मैं स्पैसो वापिस आ गई हूँ। हमारी अनुपस्थिति में यहां कोई विशेष परिवर्तन आया मालूम नहीं होता। चिन ने नीचे से ऊपर तक सारे घर

को परिमार्जित कर दिया है। बिलकुल नीचे तक नहीं क्योंकि नीचे कई रूसी रहते हैं। डाक्टर का ड्राइवर और उसकी पत्नी, एक बूढ़ा दर्जी और उसका परिवार, एक सजावट करने वाला जो राजदूतावास में काम करता है तथा पांच कपड़े धोने वालियां मकान के इस भाग को घेरे हुए है। उन्हें निकालने का दुर्बल सा प्रयास किया गया। दर्जी और सजावट करने वाले को 'अमेरिकन हाऊस' में पहुँचा दिया गया है। बाकी लोग अभी यहीं हैं। स्पैसो के तहखाने को साफ़ सुथरा रखना एक विषम समस्या है। उसे कितना ही पोंछा जाये या उसमें कितनी ही सफेदी की जाये कीड़े-मकोड़े कहीं जा छिपते हैं और अगले दिन वे कीड़े और चूहे फिर आ मौजूद होते हैं।

न्यूयार्क में होते हुए मैंने 'ब्लूमगेल' में अपनी दुकानदारिन से पूछा, 'क्या तुम्हारे यहां चूहेदान मिल सकते हैं ?'

उसने उत्तर दिया, 'मैं मालूम करती हूँ। कितने चूहेदान चाहियें ? चार या पांच ?'

मैंने कहा, 'नहीं, नहीं, तीन दर्जन।'

वह सुन कर घबरा गई, किन्तु उसने उनका प्रबन्ध कर दिया। मैं जहाज़ पर पहुँची तो उन्हें वहां पड़ा पाया। वे फलों और फूलों के टोकरों और अन्य उपहारों के साथ रखे थे जो मुझे अपने मित्रों से मिले थे। रूस के चूहे रूसी चूहेदानों में नहीं फंसते। ये चूहेदान मंहगे भी होते हैं और मिलते भी कठिनाई से हैं। मुझे आशा है कि हमारे पिंजरे काम दे जायेंगे।

स्वामी मास्को के स्टेशन पर आये हुए थे। वे खुश थे और मेरे लौट आने से उन्हें प्रसन्नता हुई थी। मेरी अनुपस्थिति में उन्होंने और रोजर ने सब प्रबन्ध ठीक ठाक किया था। उन लोगों ने बड़े समारोह से मेरा स्वागत किया। न केवल परिवार के लोग बल्कि राजदूतावास का सारा अमला पंक्ति बनाये खड़ा था।

वर्षा से जिस प्रकार मास्को जल थल हो जाता है कोई अन्य स्थान

नहीं। यहां पानी निकलने की नालियों का अभाव सा है। सभी चौराहों पर पानी ही पानी दिखाई देता है। ऐसा लगता है जैसे बाढ़ आई हो। छोटी सड़कों पर जगह २ गड्ढे पड़े हैं। जहां कहीं पर्नाले टूटे हुए हैं वहां पगडंडियों पर भी पानी आ गया है और चलते समय रबड़ के जूतों की आवश्यकता अनुभव होती है। मास्को के प्रत्येक मकान की छत टपकती है क्योंकि नई से नई टिन पर टाकियां लगी हैं।

हमारे राजदूतावास के दो परिवार और कुछ कनिष्ठ कर्मचारी नए मकान में जा रहे हैं। यह एक प्रकार का कूटराजनीतिक 'घैटो' है जिसका निर्माण चार पांच साल से हो रहा है, परन्तु रूसी इसे अभी तक भी पूरा नहीं कर पाये। मैं इस मकान को देखने गई थी। इसके बड़े से बड़े दो भागों में सोने के दो कमरे हैं। जिन परिवारों में बच्चे हैं उनके लिए यहां रहने में वही कठिनाई है जो मोखोवाया में। रसोईघर में गरम पानी का प्रबन्ध नहीं। गुसलखाने में गरम पानी आसानी से नहीं मिल सकता। यहां द्रोणिका के ऊपर गरम पानी के फव्वारे का प्रबन्ध अवश्य है।

रूसियों की दृष्टि में यह अति उच्च कोटि का मकान है। वे कहते हैं कि वे हमें सबसे अच्छा मकान दे रहे हैं। हमारे देश में 'पीटर कूपर' नाम के ग्राम जैसे आधुनिक स्थानों पर जो मकान बने हैं उनमें विवाहित जोड़े जिस आराम से रह सकते हैं इन रूसी मकानों में नहीं रह सकते। इन मकानों का मासिक किराया ४५० डालर होता है। दो शयनागारों के अतिरिक्त इनमें रहने का एक कमरा, उतना ही छोटा भोजन का कमरा, एक गुसलखाना और एक बहुत ही छोटी रसोई। रसोईघर में अलमारी रखने का स्थान भी नहीं। बिजली और ईंधन का खर्च अलग देना पड़ता है।

इतने ऊँचे किराये हमारे लिए निर्धारित किये गये हैं। हम जानते हैं कि सोवियत के नागरिकों को ऐसे मकान बहुत कम किराये पर मिल जाते हैं। जहां रूसी काम करते हैं प्रायः उसी संस्था को उनके रहने का प्रबन्ध करना होता है।

१ जून, १६५०

वीसा की समस्या अभी हमारे सामने बनी थी। हमारा कनिष्ट सपदेयुशी, टेड फीयर्स और उसकी पत्नी स्टाकहालम में बिस्तरा बोरिया बांध दस सप्ताह से बैठे वीसा की प्रतीक्षा कर रहे हैं उनके विषय में स्वामी ग्रोमिको से मिलना चाहते हैं। त्रिगवे लाई बिना कठिनाई के यहां पहुँच गया है, परन्तु उसके यहां आने से सभी को निराशा हुई है।

मैंने स्वामी से पूछा कि क्या जब वह यहां था उन्होंने उससे भेंट की थी। उन्होंने कहा कि नार्वे के दूतावास में जब उत्सव हो रहा था तो कमरे में से गुजरते हुये वह ठहर गया और उसने उनसे बात की थी यह एक अरीतिक भेंट थी। उन्होंने रूसी मेहमानों के सम्मुख पन्द्रह मिनट बात की।

ऐसोसियेटिड प्रेस के संवाददाता, ऐडी गिलमर ने मुझे बताया कि सोवियत सरकार की ओर से लाई का वह सम्मान नहीं हुआ जो उच्च कोटि के व्यक्तियों का होता है। जब वह रूस पहुँचा तो उसके स्वागत के लिए ग्रोमिको गया था। पोलितबूरो का कोई सदस्य वहां न था। उसके ठहरने का प्रबन्ध नेशनल होटल में किया गया था, परन्तु जो स्थान उसे मिला वह घटिया दर्जे का था। इस बात का प्रदर्शन न किया गया था कि वह एक सम्मानित अतिथि है। उसने यह घोषणा की थी कि वह रूसियों से मिलने आ रहा था इसलिए हमने और पश्चिमी देशों के अन्य राजदूतों ने उसके स्वागत के लिए सहभोज नहीं दिये। वे समझते थे कि सहभोज देना अनुचित होगा। यही कारण था कि उसका वहां आना असफल रहा। अन्तिम रात जब वह वहां था उसने होटल के एक कोने में अपने सचिव के साथ बैठकर अकेले ही खाना खाया। उसके पश्चात् वह लौबी में पोस्टकार्डों को देखता रहा और प्रतीक्षा करता रहा कि उसका हवाई जहाज़ कब चलता है। यह सब कुछ सहसा नहीं हुआ क्योंकि विदेशियों के प्रति सोवियत जो भी व्यवहार करते हैं सोच समझ कर करते हैं।

कल लेडी केल्ली, मार्ग्रेट लल्लीव और स्वामी की सचिव तथा मैं सोवियत की शृंगार प्रदर्शिनी देखने गये। मैं कई महीनों से इस अवसर की प्रतीक्षा कर रही थी। इसके विषय में पूछती तो उत्तर मिलता कि भवन सजा नहीं है, (यहां मौठ के मुख्यकार्यालय से अभिप्राय था जो स्त्रियों के वेष का केन्द्र है) या अभी संचय नहीं हो पाया अथवा अभी इसे जनता के लिए खोला नहीं गया। अन्ततः इसकी तिथि निश्चित हुई और हम झट वहां पहुँचे। हमने द्वार पर जाकर एक बुढ़िया से जो फटे कपड़ों में थी दस २ रूबल के टिकट खरीदे।

तीस चालीस रूसी स्त्रियां बैठी दिखाई दीं। यह एक काफी बड़ा कमरा था जो क्रान्ति से पूर्व एक सैलून के रूप में प्रयुक्त होता था। उसकी दीवारें सफेद और सुनहरी थीं। स्थान २ पर दर्पण लगे थे। बीच में एक चबूतरा था जिसके गिर्द कुर्सियां रखी थीं उन पर मैले कुचैले कपड़े बिछे थे। हमें आगे की पंक्ति में स्थान मिला और प्रदर्शिनी के लिए हमें १५ मिनट प्रतीक्षा करनी पड़ी।

एक युवा स्त्री आई। उसने नीले रंग का ऊँचा सूट पहन रखा था। जिस पर फीता लगा था। वह पीले पर्दे के पीछे से निकल कर चबूतरे पर आ बैठी।

उसने इस मौसम के विवाद पर एक भाषण दिया। उसने कहा कि आजकल अधिक लम्बी धारियों का रिवाज नहीं। आस्तीनों में पैड भी कम होते हैं और कढ़ाई में और बटनों पर हाथ का काम होता है।

पहला निदर्शन एक पचास साल की स्त्री थी जिसने भूरे रंग का सूट पहना हुआ था। इससे साफ जाहिर होता था कि यह वयस्क स्त्रियों का पहनावा है। उसके पश्चात् एक युवा स्त्री आई जो उससे कहीं अधिक बलिष्ठ थी। दो और आईं जो कम बलिष्ठ थीं। इनमें से किसी को भी वह दर्जा न दिया जा सकता था जो इस प्रकार के निदर्शनों को दिया जाना चाहिये। उन्होंने चमड़े के जूते पहने थे जो कुछ मैले थे। उनमें से एक ने प्रदर्शिनी के बीच में ही अपना जूता बदल लिया और उसके

स्थान पर काले पेटैन्ट लैदर का भड़कीला जूता पहन लिया। दस्ताने जो काले या भूरे चमड़े के थे पहनने के लिए न थे। वे सब उन्हें हाथों में उठाये हुये थीं। कोट खैमे के समान थे। उनकी बनावट उन कोटों जैसी थी जो हमारे देश में पांच दस साल पहले पहने जाते थे। वे पूरी लम्बाई में बने थे और उनके कन्धों में खूब रुई भरी थी, जो रूसी रिवाज के अनुसार शायद कम थी। कपड़ा हलका और पतला था। किन्तु मार्ग्रेट जो स्वयं सौचिका है कहने लगी कि उन पर बड़ी कारीगरी से काम लिया गया है। बटनों के काज, सीवनों के मोड़ आदि में बहुत सावधानी बर्ती गई है।

साधारण रूप से रूसी स्त्रियों के कपड़े ढीले-ढाले होते हैं। वस्त्रों की कमर तो विशेष रूप से खुली होती है। पर वे कटिबन्ध बांधती हैं। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि कन्धों पर और नीचे कपड़े की चौड़ाई एक समान है। वस्त्रों के अधिकतर नमूने ऐसे थे जिन्हें बदल २ कर छोटे-बड़े किया जा सकता है। थोड़े से परिवर्तन से एक नमूना घर की सभी स्त्रियों के काम आ सकता है। उनके केवल कालर बदलने होते हैं अथवा पेटियां। लम्बे कपड़े केवल दो ही निदर्शकों ने पहने थे। ये पार्टियों में पहनने वाले गाउन थे यद्यपि किसी की गर्दन भी उचित ढंग की न बनी थी और दोनों की आस्तीनें कोहनियों तक थीं।

चारों स्त्रियों में जो सबसे सुन्दर और प्रिय थी, और जो आयु में भी सबसे छोटी थी उसने प्रसव वेष धारण किया हुआ था। वह वेष बहुत प्रभावशाली और नवनिर्मित प्रतीत होता था। यह छपे हुए रेशम का बना था, और इसे बहुत चतुराई से बनाया गया था, इसमें इस प्रकार बटन लगे थे कि इसकी कमर और नीचे का हिस्सा आवश्यकता के अनुसार फैल सकता था। इसकी विशेषता का वर्णन निर्देशिका ने किया। उसने कहा, यह वेष बच्चे के जन्म से पहले भी धारण किया जा सकता है और बाद में भी। यह घर में पहनने के लिए भी अच्छा है और बाहर

जाने के लिए भी। इसे विशेष रूप से युवा माता की आवश्यकताओं को सामने रख कर बनाया गया है।

इसके पश्चात् निदर्शक ने छातियों पर लगी दो जेबों के बटन खोल कर दिखाये। इससे वास्तविक रूप में पता चला कि किस प्रकार यह बाहर काम दे सकता है और किस प्रकार घर में। वास्तव में यह सोवियत का एक बहुत बड़ा आविष्कार था।

इनमें से कोई भी वेष विक्रय के लिये नहीं था। ये केवल नमूने थे। इस लिये हम यह मालूम न कर सके कि तैयार होकर इन वस्त्रों का मूल्य क्या होगा। मेरा विचार था कि इनके दाम ज़रूर ऊंचे होंगे, क्योंकि कइयों के कालर, पेटी और कफ़ हाथ से कढ़े हुये थे। इनके रंग या तो आलूचे के समान थे, या गंदुमी या गुलाबी। सर्दी में प्रायः ये ही रंग देखने में आते हैं। गर्मी में कहीं-कहीं हरा मूंगिया, गहरा नीला अथवा समस्त रूप से छपा हुआ नमूना भी दिखाई देता है। स्कर्टों की लम्बाई उतनी ही थी जितनी आम तौर पर सड़कों पर दिखाई देती है। जुराबों का रंग हलका था और वे नाईलन की बनी थीं परन्तु भारी थीं टोपियां सख्त थीं और फैल्ट की बनी थीं।

जो अभिनेत्रियां चेकव और गौर्की के नाटकों में अभिनय करती हैं उनके वेष अपेक्षाकृत अधिक सुन्दर होते हैं। उनमें से कइयों की काट और कपड़ा इतना सुन्दर होता है कि प्रतीत होता है मानों उन्हें क्रांति के दिनों में किसी भद्रनारी के कंचुक गृह से लूटा गया हो। सोवियत संघ में कोई ऐसा दर्ज़ी दिखाई नहीं देता जो उनकी सी काट कर सके या उन पर लगे गोटा किनारी अथवा बेल बूटों की नकल उतार सके। वे ऐसे-ऐसे वस्त्र पहनती हैं जो सोवियत वेष-न्यास के सपने में भी नहीं आ सकते।

१० जून, १६५०

कल मैंने देखा कि एक शव को सड़क पर घसीटे लिये जा रहे हैं। दो पुलिस मैनों ने उसे बाजुओं से पकड़ रखा था और वे उसे नाली के साथ-साथ घसीट रहे थे। मैं मोटर कार में थी। वैसे भी मुझे दूर की चीज़

साफ़ दिखाई नहीं देती इसलिये मुझे सब कुछ स्पष्ट दिखाई नहीं दिया। परन्तु इतना अवश्य मालूम हुआ कि उसकी खोपड़ी के पिछले हिस्से पर चोट लगी है और वह मर गया है। यदि वह जीवित भी होता तो जिस प्रकार उसे खींचे लिये जा रहे थे वह कभी का मर गया होता। जो लोग पगडंडी पर चले जा रहे थे वे इस दृश्य को देखकर व्याकुल नहीं हुये। उनमें से कोई इसे देखने के लिये उत्सुक भी न था।

एक ब्रिटिश सचिव ने मुझे बताया कि कुछ महीने हुये उसने एक निर्धन व्यक्ति को मास्को नदी में गिरते देखा। वह उसकी सहायता के लिये भागा। इतने में बर्फ में से होती हुई एक नाव आई। नाव में बैठा एक आदमी बाहर को झुका और उसने डूबते हुये आदमी के गिर्द एक रस्सा डाल दिया। फिर उसे खींच किनारे पर ले आये और उसे इस प्रकार फेंक दिया जैसे वह कोई बोरा हो। उसे सजीव करने का कोई प्रयास नहीं किया गया। यह सम्भव न था कि उसमें प्राण बाकी हों, परन्तु जिस निर्दयता के साथ उसे खींचा और किनारे पर फेंका गया उसे देखकर अंग्रेज़ का दिल कांप गया।

स्पेसो से जो सड़क ऊपर को जाती है उस पर एक मकान है जिस पर लिखा है: (सचेतन गृह सं० ९) इस भवन के नाम का यह शाब्दिक अनुवाद है। इस भाग में जितने शराबी मिलते हैं उन्हें उठाकर यहां ले आते हैं। पिछले सप्ताह जब मैं वहां से गुज़र रही थी मेरी दृष्टि एक आदमी पर पड़ी जिसे ट्रक में से खींच कर ऐसे निकाला जा रहा था जैसे कोई कपड़े के गट्ठे को खींचता है। इसके बाद इस बेचारे के साथ क्या बीती होगी इस का हम केवल अनुमान ही लगा सकते हैं। तहखाने की खिड़की में से गर्मी के दिनों में भी भाप के बादल निकलते दिखाई देते हैं। दिन रात वहां पानी उबलता रहता है। इससे प्रतीत होता है कि यहां आदमियों को उत्ताप दिया जाता है।

प्राचीन रूस में शराब पीने का बहुत रिवाज था। जो शराबी किसी को हानि न पहुँचाते थे पुलिस उन्हें कुछ न कहती थी। जो लोग मदिरा

पान कर गाड़ियां चलाते थे या किसी को हानि पहुँचाते थे उन्हें कैद में डाल दिया जाता था। परन्तु उस समय उन्हें भाप में न रखा जाता था।

हम कल 'जेगोस्के' की सड़क पर जा रहे थे। वहां कई कारुक दिखाई दिये जिनसे बलपूर्वक काम लिया जा रहा था। भवन निर्माण का काम भी हो रहा था जहां जंगले के सिरे पर रक्षि गृह बने थे। इसका अभिप्राय यह नहीं कि यहां सदैव अपराधी ही काम करते हैं। रक्षि प्रायः इस लिये होते हैं कि काम समाप्त होने के पश्चात् कोई सामान न चुरा ले जाये। रक्षि चौकस प्रतीत होते थे।

एक चौराहे पर एक लड़की पुरुषों की एक टोली पर अधिपुरुष का काम कर रही थी। ऐसा मालूम होता था कि उसे अपने काम में बहुत आनन्द आ रहा है। उसके चेहरे पर ऐसी कठोरता थी जो पुरुषों के चेहरे पर भी दिखाई नहीं देती। उसके पीछे 'ऐमबीडी' का जो रक्षि बन्दूक संभाले खड़ा था। उसका चेहरा भी इतना कठोर न था।

२६ जून, १६५०

रविवार को हमें एक नयी बात मालूम हुई। स्वेच्छाचारी राज्य रविवार की पवित्रता का भी विचार नहीं करते। कल अर्थात् २५ जून को रवि के दिन कोरिया के साम्यवादी दक्षिण कोरिया में घुस गये। उन्होंने दस बारह विभिन्न स्थानों से आक्रमण किया।

किसी ने न्यूयार्क में संध्या समय संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद् के सम्मेलन का प्रबन्ध किया। अब इधर-उधर कठोर शब्द सुनाई दे रहे हैं। उनकी प्रतिध्वनि हम तक कल सन्ध्या समय पहुँची। राज्य अधिकारी वैली ने यह सूचना जिम्मेदार रूसी कर्मचारियों को पहुँचाने की असफल चेष्टा की।

किसी भी रूसी राज्य कर्मचारी तक पहुँच न हो सकी। इसलिये नहीं कि यह रविवार था। असल बात यह थी कि कोई उससे बात करना न चाहता था। वैली ने आखिर ड्यूटी अफसर को जगाया। वह रूस के

विदेशी कार्यालय में था। इस अफ़सर ने डांट कर कहा कि वहां उस समय कोई नहीं है और उस दिन कोई काम नहीं हो सकता।

हमारे लोगों को बहुत देर से यह डर था कि दूर पूर्व में कुछ होने वाला है।

२ जौलाई, १९५०

पिछले सप्ताह से अजीब-अजीब घटनायें हो रही हैं। सोमवार को स्वामी और रोजर सवेरे ही साइबेरिया से वापिस आगये थे। सभी से पत्र और तार बरस रहे हैं। विदेशी कार्यालय से कुछ दिन से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हो रहा था। स्वामी ने तुरंत ग्रोमिको से मिलने की आज्ञा चाही। वे उसे कोरिया की दुर्घटना का वृत्तांत सुनाना चाहते थे और बताना चाहते थे कि इस विषय में रक्षा परिषद ने क्या किया है। कोई उत्तर नहीं मिला। इसके पश्चात् स्वामी ने पुनः प्रार्थना की। स्वामी को पत्र मिला जिसमें रक्षा परिषद् का दूसरा प्रस्ताव और राष्ट्रपति ट्रूमन का आदेश लिखा था। वे यह पत्र ग्रोमिको को दिखाना चाहते थे। इस पर कोई उत्तर नहीं मिला। स्वामी ने ऐड क्रीयर्स को मन्त्रालय में भेजा और कहा कि जो भी वहां मिले उसी को पत्र पहुँचा दे।

शुक्रवार को कहीं जाकर स्वामी की ग्रोमिको से भेंट हो सकी। ग्रोमिको के पास इस समय उत्तर तैयार था। इसमें स्पष्ट रूप से यह बताया गया था कि सुरक्षा परिषद् का कार्य विधि के अनुसार नहीं। उस में यह भी था कि उत्तर कोरिया की ओर से कोई अग्रधर्षण नहीं हुआ। प्रभु शक्तियों के मामले में रूस कोई हस्तक्षेप न कर सकता था और यह भी कहा गया था कि रूस की सदैव यह नीति रही है कि किसी देश के आन्तरिक मामलों में हाथ न डाला जाये।

ग्रोमिको ने यह पत्र स्वामी को पढ़कर सुनाया। इस पर कोई संवाद नहीं हुआ। उच्च कोटि के सोवियत मन्त्री भी उन आदेशों के विषय में जो उन्हें मिलते हैं कोई प्रश्न नहीं उठा सकते। वे उनकी विवेचना भी नहीं कर सकते। किसी अन्य बात पर संवाद हुआ जिसका कोरिया से

कोई सम्बन्ध न था। यह आदान-प्रदान का प्रश्न था। हम चाहते थे कि सोवियत वित्त मन्त्रालय दस लाख रूबल देकर उनके बदले हम से डालर ले ले। यह काम पिछली सर्दियों में होने वाला था। इस धन का प्रयोग हमारे राज दूतावास में होता है। इसमें से वेतन आदि भी देना होता है। रूसियों ने स्पष्ट रूप से इस में टालमटोल की। अब उन्होंने रूबल का भाव बदल दिया है और हमें यह बदला नये भाव से करना पड़ेगा जिस का अभिप्राय यह होगा कि संयुक्त राज्य को दुगुना धन देना पड़ेगा।

स्वामी ने ग्रोमिको से कहा, 'मुझे खेद है कि वह ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दे सकते और अपनी सरकार से यह नहीं कह सकते कि वाशिंगटन में स्थित रूसी राज दूतावास का किराया दुगुना कर दे।' यह दुर्भाग्य की बात है कि जिस भवन में रूस का राज्य दूतावास है वह किसी समय ज़ार की सम्पत्ति था और उसे रूस को दे दिया गया था।

ग्रोमिको ने कहा, 'क्या आप वास्तव में ऐसा करने जा रहे हैं' स्वामी ने उत्तर दिया, 'हां, ज़रूर।'

. जौलाई, १९५०

रेडियो से समाचार सुन कर दिल जलता है। इसका परिणाम क्या होगा यह कोई नहीं कह सकता।

मानों जो हो रहा है वह पर्याप्त न था। (कोलोरेडो) की पौदों की प्लेग के विषय में रूसियों ने विधिवत आपत्ति उठाई है। यदि वे इस बात को गम्भीरता से न लेते तो यह एक परिहास ही प्रतीत होता। वे कहते हैं कि उन्होंने पूर्ण रूप से गवेषणा की है। उस से सिद्ध होता है कि अमरीकी विमानों ने जर्मनी में आलुओं के खेतों के ऊपर चिमगादड़ फेंके हैं, जो प्लेग से पीड़ित हैं। यह पूर्व जर्मनी की शिकायत है। इसे वे आगे भेज रहे हैं और यह मांग कर रहे हैं कि इस निकृष्ट काम को बंद किया जाये और अपराधियों को दण्ड दिया जाये।

रूसी अधिकारी जानते हैं कि यह झूठ है और हम भी जानते हैं कि इसमें कोई सचाई नहीं। वे छः सप्ताह से इसकी रट लगा रहे हैं। सर-

कारी तौर पर भी इसका समाधान होता है । इसलिये यहां और जर्मनी में अनभिज्ञ लोग अवश्य उनकी बातों पर विश्वास कर लेंगे । हमारे देश में लोग यह समझते हैं कि आलुओं में प्लेग प्रायः फैल जाती थी, किन्तु सरकार उसकी रोक थाम कर लेती थी । अब प्रशासन का काम ढीला पड़ने से यह रोग फैलने लगा है, और सोवियत अधिकारियों के काबू से बाहर हो गया है ।

कल राजनयक बस्ती के सभी नौकरों को यह आदेश दिया गया कि वे व्यवसाय संघ के हाल में एकत्रित हों और सोवियत की शांति संबंधी नीति पर भाषण सुनें । भाषण के पश्चात उनसे स्टाकहालम के आविस पत्र पर हस्ताक्षर कराये गये । इस पत्र पर जिस प्रकार हस्ताक्षर कराये गये वह एक सीधा छल है, परन्तु इसमें चतुराई से काम लिया गया है । हम सभी शान्ति चाहते हैं । परन्तु संसार के निर्धन और अबोध व्यक्ति क्या जानें कि शान्ति किस प्रकार स्थापित हो सकती है ।

कल कैनेडा के राज दूतावास से सभी रूसी कर्मचारी एकदम भाग गये । वहां एक 'कौक्टेल' पार्टी दी जा रही थी । उनका भागना परिहास का विषय बन गया । हमें यह चेतावनी दी गई थी कि हम जल्दी घर पहुँचें और शाम का भोजन करें । अभिप्राय यह था कि हमारे नौकर जाकर हमारे विरुद्ध अपना मत प्रकट कर सकें । यह एक हंसी की बात लगती है ।

इस बीच में हम चार जौलाई के नाच की तैयारियों में लगे हैं । आशा है कि ३५० व्यक्ति आयेंगे । यह संख्या ३७५ तक पहुँच जाती, किन्तु हम जानते हैं कि उपग्रही उस दिन रुग्ण हो जायेंगे । मैं चाहती हूँ कि सर्दी कुछ कम हो जाये और हम बाग का प्रयोग कर सकें । मैं उस दिन साटिन का अपना सब से सुन्दर फ्राक पहनूँगी, स्वामी और रोजर सफेद नैकटाई । नाच बड़े दालान में होगा जिसमें हम अमरीका का बहुत बड़ा झण्डा लहरायेंगे ।

५ जौलाई, १६५०

अमरीका की ध्वजा क्रैमलिन के बिल्कुल सामने फहरा रही थी। कल यह एक भव्य दृश्य था। सुहावना दिन था। हवा चल रही थी। हमारी भव्य पताका बड़ी शान से फहरा रही थी। स्वामी ने एक बड़ा और नया झंडा मंगाया था जिसे वे महामात्रावास पर लगाना चाहते थे। वायुसेना ने नायब सहचर स्टूअर्ट वार्विक द्वारा यह झण्डा कल सवेरे यहां पहुंचा। वह एक इससे ज़रा छोटा झण्डा भी लाया था जो हमने बड़े कमरे के एक कोने में लगा दिया।

यह झण्डा फहराने का उचित दिन था। उसी दिन मोमिको ने भाषण दिया जो शायद हम सबको चार जौलाई की बधाई रूप था। जो कुछ उसने कहा वह सब वाहियात और मनघड़न्त था। जो बात मन घड़न्त न थी उसे तोड़ मरोड़ कर कहा गया था। यह भाषण रूसी लोगों के लिये था। इसका अभिप्राय उनमें आत्म विश्वास की भावना उत्पन्न करना था। परन्तु जो लोग जानते हैं उनकी दृष्टि में यह एक झूठा और छबूती वक्तव्य था। विशेष रूप से जब यह वक्तव्य देने वाला व्यक्ति बहुत कुछ जानता था।

हमें आशा न थी कि वह या उसका उपमन्त्री हमारे सहभोज में सम्मिलित होगा। स्वामी ने होड़ लगाई कि कोई भी न आयेगा। उनकी जीत हुई। सात आठ निम्न श्रेणी के राज्यकर्मचारी आये थे जो आधा घण्टा ठहरे और फिर रूखेपन से हाथ मिलाकर चले गये। वे बहुत रूखे से और घटिया दर्जे के कर्मचारी थे। उनके आने से हमारा तिरस्कार हुआ। यदि वे न आते तो अच्छा रहता। उन्हें देखकर यह मालूम होता था कि इन लोगों को अपने ऊपर विश्वास नहीं। ऐसी अवस्था में यदि हम होते तो बड़े ठाठ बाट से पार्टी में जाते और वह धूम धाम दिखाते जो एक महान् राष्ट्र के प्रतिनिधियों को शोभा देती है। अभी तक उन्हें यह आभास नहीं हुआ।

रूसी सरकार ने अपनी रुष्ठता का प्रदर्शन इस प्रकार किया है। स्वामी अब मास्को की सड़कों पर बाईं ओर नहीं घूम सकते। उनको और ब्रिटिश राजदूत को ही बाईं ओर घूमने का अधिकार था जो अब वापिस ले लिया गया है। यह अधिकार उन्हें इसलिये प्राप्त था कि रक्षि उनके साथ होते थे।

परन्तु रक्षियों ने स्वयं ड्राईवर से कहा कि वह अब नियम का पालन करे। यह स्पष्ट है कि उन्हें ये आदेश अपने बड़ों से मिले हैं। शायद अन्तिम बात यह हो कि रक्षि को भी हटा दिया जाये। परन्तु इसकी संभावना नहीं दीख पड़ती। जब तक हम यहां हैं वे अवश्य हम पर दृष्टि रखेंगे।

इतना बड़ा सहभोज देना जिसका हमने कल प्रबन्ध किया कोई मामूली काम नहीं। चैन्टल गौफिन और मैं सोमवार को बाज़ार से फूल खरीदने गये। सौदा बनाने का काम उसके सुपुर्द था। वह पूरे बैल्जियन ढंग से दाम ठहराती है। सौभाग्य की बात थी कि हमें अपने मन चाहे फूल मिल गये। हमने बहुत ही शानदार गुलदस्ते बनाये। इतने बड़े दालान में ये फूल और इतने शानदार गुलदस्ते ही शोभा दे सकते हैं। चैन्टल ने खाने की मेज़ के लिये जो गुलदस्ता बनाया वह एक सिरे से दूसरे सिरे तक तीन गज़ था।

हमारे सैनिक और नाविक कल रात बहुत सुन्दर प्रतीत हो रहे थे। उनकी छातियों पर ऊपर नीचे उनके पदक लगे थे। हमारी स्त्रियों ने अति सुन्दर वेष धारण किया था। जो राजनयक आये थे वे सजावट को देखकर चकित रह गये। यह वास्तव में भव्य दृश्य था।

नाच आरम्भ करना भी एक समस्या थी। मेहमान आते ही भोजन करने लगे थे और उसी में रम गये थे। परन्तु हम इस बात पर तुले थे कि यह नृत्य उत्सव है और नाच होना जरूरी है। सभी ने इसका खूब लुत्फ उठाया। स्फटिक फानूसों की प्रतिछाया फर्श पर पड़ रही थी। चिम

और स्त्रियों ने मिल कर उस पर बड़ी सावधानी से पालिश किया था। 'आर्केस्ट्रा' भी खूब बजता रहा। समस्त उत्सव बहुत आनन्ददायक सिद्ध हुआ।

ढाई बजे द्वार से और ऊपर के झरोखे से रोशनी अन्दर आने लगी। परन्तु नाच साढ़े चार बजे तक होता रहा। अन्त में हमने सजीव रूसी लोक-नृत्यों का प्रदर्शन किया। रोजर ने सफेद नेकटाई और 'टेल' कोट पहन रखा था। उसने अकेले ही एक नाच दिखाया। उसे देख कर मेहमानों को और नौकरों को जो उधर आकर इकट्ठे हो गये थे बहुत हर्ष हुआ। नौकर रोजर को 'पोसोलचैक' अर्थात् छोटा राजदूत कहते हैं। वह उनका चहेता है। उसके माता-पिता जो पार्श्व में बैठे थे उसकी प्रशंसा सुन कर प्रफुल्लित हो उठे। सब प्रकार से यह उत्सव सफल रहा।

७ जौलाई, १६५०

पत्रवाहक के आने में कुछ देर हो गई है इसलिए पत्र पर अभी कुछ और भी लिखा जा सकता है। रूसियों का मिज़ाज दिन-प्रति-दिन बिगड़ता जा रहा है। शायद दूतावास के बाहर फहराती हुई ध्वजा ने उन्हें रुष्ट कर दिया है।

पहले उन्होंने हम पर यह वाहियात आरोप लगाया था कि हमने पूर्व जर्मनी में आलुओं पर बीमारी के कीड़े फेंक दिये हैं। अब वे कहते हैं कि उधार पट्टे के अनुसार जो सामान आया है उसमें कई प्रकार के हानिकारक कीटाणु आ गये हैं।

इन सब आरोपों की काट करना सम्भव नहीं। यदि काट की भी जाये तो इससे ये आरोप विश्वसनीय हो जाते हैं। अमरीका का रेडियो 'वीओये' समाचार देने का प्रयास करता है परन्तु इसके होते हुए भी साधारण जनता को बाहर से बिलकुल कोई समाचार नहीं मिलता। लोगों तक पहुँचने का कोई उपाय नहीं। सरकार जो उन्हें बताती है उसका प्रभाव उनके मनों से मिटाना कठिन है।

मैं दूतावास के पुस्तकालय में आधा दिन काम किया करूँगी। घर पर बैठे-बैठे अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति पर सोचते रहना कोई अच्छी बात नहीं। नौकरों को बार-बार छुट्टी देने की प्रथा एक महीने की वेतन सहित छुट्टी और रूबल की कीमत का बढ़ना इन सब बातों के कारण सहभोज अब कम होने लगे हैं। अगले दिन जब मैं चैन्टल गोफ़िन के साथ फूल खरीदने गई तो मुझे विचार आया कि कुछ भाजी भी खरीद लूँ। टमाटरों का भाव ६ डालर प्रति सेर था। स्ट्राबरी भी यही भाव थी। इसलिये मैं इनकी ओर ललचाई हुई आंखों से देखती रह गई।

जहां तक हो सकता है हम रूसी दुकानों से कुछ भी नहीं खरीदते। हमें अधिक भत्ता मिलने लगा है। फिर भी भाव इतने ऊँचे हैं कि कोई भी चीज़ खरीदना सम्भव नहीं। हमें पीड़ित देखकर रूसी बहुत खुश होते होंगे। मैं चाहती हूँ कि इस के प्रतिकार के रूप में हम भी वाशिंगटन में कोई ऐसी दुकान खोलें जो केवल रूसियों के लिए हो और हम उन्हें वहीं से सामान खरीदने पर विवश करें। चीज़ों के दाम भी वैसे ही हों जैसे हमें देने पड़ते हैं।

१२ जौलाई, १६५०

लंच के बाद स्वामी ऊपर चले गये और सुन्दर काला सूट पहने और कड़ा कालर लगाये नीचे उतरे। इससे प्रतीत होता था कि वे विदेशी कार्यालय जा रहे हैं। कुछ दिनों से राजनयकों में बात-चीत हो रही है। समाचार आया था कि सर डैविड कैल्ली और ग्रोमिको में बात चीत होने जा रही है। शायद यही कारण है कि स्वामी ने कड़ा कालर पहना है।

यह आशा करना कि कोरिया का युद्ध शीघ्र समाप्त हो जायेगा व्यर्थ है। अब यह एक घटना नहीं रही। इसने पूरी तरह एक युद्ध का रूप धारण कर लिया है।

हम लोग जो यहां रह रहे हैं उनका जीवन दूभर करने के लिये रात दिन वायुयान उड़ते हैं। वे रविवार की प्रदर्शिनी के लिये अभ्यास कर रहे हैं। 'जैट' तथा बम्बर' गरजते हुए जाते हैं और शायद जान बूझ कर वे

स्पेसो हाऊस की धुँआसिनियों को छू-छू जाते हैं। पहली प्रातः जब मैंने उनकी आवाज़ सुनी तो मैं घबराकर उठ-बैठी। अब भी इनकी आवाज़ मुझे शिथिल कर देती है।

कैनेडा के राजदूतावास में एक लड़की काम करती है जो अगली रात सहभोज के लिये आई थी। उसने कहा कि सड़क से गुजरते हुए उस पर किसी ने रोटी का एक सख्त टुकड़ा फेंक मारा। इस प्रकार की घटना पहली बार हुई है। हमने उससे कहा कि यह यूँही आ पड़ा होगा। परन्तु उसने आग्रह किया कि नहीं यह उस पर जान बूझ कर फेंका गया था।

जब कोरिया में युद्ध छिड़ा तो द्वार पर खड़े रक्षियों ने और मोखोवाया के बाहर खड़े पुलिसमैनों ने स्वामी की कार को वंदना करना छोड़ दिया था। रोजर और डिक आते जाते थे तो वे उनसे भी नहीं बोलते थे। २४ घन्टे पश्चात वंदना तो होने लगी, परन्तु स्वामी को अब भी यातायात के साधारण नियमों का पालन करना पड़ता है।

समस्त नगर में जहां कहीं भी लग सकते हैं बड़े-बड़े पोस्टर लगे हैं जिन पर लिखा है 'मईर' अर्थात् शान्ति। लोगों के एक मन पसन्द पोस्टर में लाल झंडा दिखाया गया है जिस पर मुक्के का चिन्ह बना है। नीचे कोने में ट्रूमन और चर्चिल दुबके बैठे हैं। यह शान्ति का बहुत अच्छा प्रचार है।

१३ जौलाई, १९५०

स्वामी विदेशी कार्यालय नहीं गये थे। वे भारतीय राजदूत को मिलने गये थे। भारतीय राजदूत प्रसिद्ध दार्शनिक हैं, आक्सफोर्ड में प्रोफैसर रह चुके हैं, अपने असूलों के पक्के और बहुत साहसी हैं। वे ग्रोमिको से मिलने गये थे। उन्होंने उत्तर कोरिया द्वारा किये गये आक्रमण के विरुद्ध रोष प्रकट किया। अब वह प्रयास कर रहे हैं कि किसी प्रकार इस विषय में विभिन्न पक्षों में आपस में बात-चीत आरम्भ हो जाये। स्वामी डेढ़ घंटे की बात-चीत के बाद घर आये। उन्होंने सुगन्धित चाय

पी थी। परन्तु बात-चीत का और चाय का वास्तविकता से कोई सम्बन्ध न था। इन लोगों से आध्यात्मिकता के आधार पर याचना करना व्यर्थ है। वे शान्ति को बल का स्वरूप समझते हैं और जैसे पोस्टर पर दिखाया है वे घूंसे से शान्ति स्थापित करना चाहते हैं।

रेडियो पर आलोचना करने वाले कहते हैं कि दोनों पक्ष अपने-अपने राजदूतों को वापिस बुला लेंगे। अभी तो इसका कोई चिन्ह दिखाई नहीं देता। परन्तु यह संभव हो सकता है।

जब हम स्वामी के साथ मोटर कार में बैठ कर जाते हैं तो हमें पहले की अपेक्षा स्थिति कुछ बदलती दिखाई देती है। आने-जाने वाले लोग जब हमारा झंडा देखते हैं तो वे इसकी ओर संकेत करते हैं। और इसे अधिक ध्यानपूर्वक देखते हैं।

कल महामात्रावास के सम्मुख एक बहुत हंसी की बात हुई। एक किसान जो नशे में चूर था पुलिसमैन के पास आकर कहने लगा, 'क्या यही स्थान है जहां युयुत्सु रहते हैं?' पुलिसमैन ने उसे इशारे से चले जाने के लिये कहा। किसान घुटनों के बल बैठ गया। उसने सन्तरी का हाथ चूमा और कहा, 'मित्र, तुम्हारा बहुत धन्यवाद है कि तुम इन लोगों से हमारी रक्षा करते हो।'

२५ जौलाई, १९५०

आजकल रात को गहरी नींद नहीं आती। एक तो गर्मी बहुत है। सवेरे तीन बजे ही धूप आजाती है। एक बार नींद टूट जाती है तो फिर आदमी सोचने लगता है। ये विचार ऐसे नहीं जो नींद लाने वाले हों। कोरिया से जो समाचार आ रहे हैं वे व्याकुल करने वाले हैं।

विदेशी विभाग से स्वामी को जर्मनी जाने की आज्ञा मिल गई है, परन्तु अब विमान के लिये रूसी वीसा चाहिये जो सदैव चिन्ता का विषय होता है मैंने कहा कि मुझे तो ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे किसी कैदी को पांच दिन की छुट्टी मिल रही हो। मैं सोचती हूँ कि बाहर की दुनिया को देखकर पांच दिन बाद वापिस आना कठिन होगा। हमें इस

का आभास होता है कि हम रूसियों से बहुत दूर हैं। हमारे और उनके बीच में एक खाई है जो दिन प्रतिदिन अधिक गहरी होती जाती है। हमारे और उनके विचार नहीं मिलते, हमारे रिवाज उनसे भिन्न हैं। हमारे अनुभव भी उनके अनुभवों से मेल नहीं खाते।

२७ जौलाई, १९५०

समाचार आया है कि कोरिया की लड़ाई में टिकाव आ गया है। इसका प्रमाण यह है कि पुलिसमैन स्वामी को पुनः वंदना करने लगे हैं। नौकर चाकर भी अधिक प्रसन्न दिखाई देते हैं।

हमारे एक सहकारी का एक पुराना खानसामा चला गया है। वह उनके साथ सोलह साल से काम कर रहा था। उसे एक पत्र मिला जिस पर लिखा था कि वह विदेशियों के यहां अब अधिक नौकरी नहीं कर सकता इसका कारण कुछ भी न बताया गया था। वह बहुत बूढ़ा है और उसका कोई वली वारस नहीं। इसका अभिप्राय यह है कि वह भूखा मरेगा। इससे पहले जो काम उसने किये हैं उनके कारण उसे कोई और नौकरी नहीं मिल सकती। ऐसे लोगों की सहायता के लिये रूस में प्रबंध नहीं है? वह राजदूत के पास दो प्रमाणपत्र जलाने के लिये लाया। इनमें से एक किसी राजनयक की ओर से था जिसके यहां वह पेशकार रहा था और जो अब मर गल गया था। दूसरा इस विषय में था कि इस भव्य स्थान पर उसके घर एक पुत्र ने जन्म लिया था जो या तो मर गया था या कहीं जर्मनी में खो गया था। आखिर उसने राजदूत से हाथ मिलाया और कंधे पर एक छोटी सी गठड़ी उठाये चल पड़ा। इस व्यक्ति का अन्त यही होगा कि वह ठोकर खाकर कहीं गिर पड़ेगा और किसी गाड़ी के नीचे कुचला जायेगा। जिस आदमी को मैंने आर्बेट की गन्दी नाली में देखा था और जिसे दो पुलिसमैन घसीटे लिये जा रहे थे उसका जीवन भी इसी प्रकार का रहा होगा।

३० अगस्त, १९५०

मौसम में शिशिर का रंग आगया है। दिन छोटे होने लगे हैं।

हमारा तरकारी का खेत सूख कर मुर्झा गया है। केवल प्रयवानो की क्यारियां जिनका हमारी दृष्टि में बहुत मूल्य है सुरक्षित हैं। यह पौदा रूस में नहीं होता इसलिये हम इसकी बहुत देख-रेख करते हैं और तोड़ने के पश्चात् बहुत संभाल कर रखते हैं। टमाटरों के फलने-फूलने की यहां तनिक भी संभावना नहीं है। जो टमाटर हमने लगाये थे वे ठोस हरी गेंदों के समान रह गये हैं। लौकी को फूल आचुके हैं किन्तु उस पर फल आता दिखाई नहीं देता। यह दशा देखकर दु:ख होता है जबकि हम जानते हैं कि शेष यूरोप में गर्मी की बहार रही है। यदि मौसम अच्छा होता तो शायद मन को और अधिक क्लेश होता क्योंकि हमें तो दबक कर ही बैठना पड़ता है। फिर भी सर्दी की दीर्घ ऋतु से पूर्व इतना शीत और नमदार मौसम सुखदायक नहीं हो सकता।

शुक्रवार को हम सेंट लुई गिर्जाघर गये। यह फ्रांसीसी गिर्जाघर है। फ्रांसीसी पादरी पैरा थौमस वहां अपनी अन्तिम आराधना कर रहा था। यह गिर्जाघर फ्रांस की क्रांति से पूर्व बना था। किसी समय यह समुदाय बहुत समृद्ध था। यह एक पाठशाला और एक हस्पताल का संचालन करता था। नगर में देशज अथवा विदेशी जितने भी रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के लोग थे यह समुदाय उन सभी की धार्मिक आवश्यकताओं को पूरा करता था। 'लिटविनोव' की सन्धि के पश्चात् यहां रहने की केवल एक फ्रांसीसी अथवा अमरीकी पादरी को आज्ञा थी। श्रद्धालु लोगों की देख रेख और आराधना का काम वही करता था। एक साल पुरानी बात है 'पैरिश' के अधिकारियों की एक टोली पैरी थौमस के पास आई। इन लोगों ने पादरी से गिर्जाघर की चाबियां तलब कीं और कहा कि उन्होंने गिर्जाघर की देखभाल के लिये एक समिति बनाई है। रूसी भाषा जानने वाले एक पोलैण्ड निवासी पादरी को उसका स्थान देने के लिये बुलाया गया था। उन्होंने पेरी थौमस को इस शर्त पर वहां रहने की आज्ञा दी थी कि वह केवल नियत समय पर विदेशियों के लिये आराधना का प्रबन्ध करे। इसके अतिरिक्त उसका कोई काम न था। गिर्जाघर का प्रबन्ध पैरिश के अधिकारियों ने अपने हाथ में ले लिया।

थौमस बेचारा क्या करता ? उसे उनकी बात माननी पड़ी। पिछले सप्ताह रूस के विदेशी कार्यालय ने आदेश दिया कि वह इस स्थान पर रह भी नहीं सकता। उसे कहा गया कि वह वहां से चले जाने की तैयारी करे। इस बात से वहां के निवासियों को बहुत क्लेश हुआ। उनकी दशा देखकर दया आती थी। वे पोलैण्ड के रहने वाले थे और उनमें अधिकतर बूढ़े और निर्धन थे। उन्हें अपने भौतिक जीवन में सुख की तनिक भी आशा न थी इसलिये वे परलोक पर दृष्टि लगाये हुए थे।

पेरी थौमस ने मुझे बताया कि एक रुग्ण स्त्री ने उसे एक मैले से काग़ज़ में लपेट कर ३०० रूबल भेजे हैं। यह रकम स्त्री ने अपने अंतिम संस्कार के लिये बचाई थी। अब जब पेरी थौमस विदा हो रहा था तो उसे यह आशा न थी कि उसका अन्तिम संस्कार उचित रीति से हो सकेगा। स्त्री की इच्छा थी कि जाने से पूर्व पादरी तीन बार आराधना करे, एक पोप के हित में, दूसरी उसके परिवार के मुक्त व्यक्तियों के लिये और तीसरी उसकी अपनी आत्मा की शान्ति के लिये।

शुक्रवार का दिन था। संयोगवश सेंट लुई के सहभोज के त्यौहार की भी यही तिथि थी। यह सेंट प्राचीन फ्रांस का संरक्षक था और इस गिर्जाघर का भी। आराधना का समय बारह बजे नियत किया गया था। हमारे राजदूतावास से जाने वालों की संख्या ६० के लगभग थी। सैनिकों ने यूनीफार्म धारण की थी इसलिये आने जाने वाले और दूसरी ओर के भवनों में काम करने वाले यह समझे कि वहां कोई विशेष बात है। वे काम छोड़कर ताकने लगे। हमारी मोटरकारें गिर्जाघर के प्रांगण में पहुँची तो वहां अच्छी खासी भीड़ लग गई।

आगे की पंक्तियों में चार राजदूत और उनके साथ समान कोटि के अन्य मिशनों के प्रतिनिधि बैठे थे। ब्रिटिश, फ्रांसीसी और इटैलियन सब कैथोलिक हैं। हम में से बहुत से ऐसे थे जिनका मत यह नहीं है। फिर भी हमने आराधना में अन्य लोगों के साथ-साथ चलने का प्रयास किया। कुछ निर्धन और वृद्ध नर-नारी पार्श्व में इधर-उधर घूम रहे थे। और

आगे के स्थानों पर बैठे सुन्दर वस्त्र धारण किये विदेशियों को देख-देख कर हैरान हो रहे थे । स्वामी के चार रद्दि मुँह बनाये पिछवाड़े की दीवार के साथ खड़े थे ।

पैरी थौमस का दिल भर आया । आराधना करते समय उसकी आवाज़ भर्रा गई । संगीत की अध्यक्षता अमरीकी पादरी फादर ब्रासर्ड कर रहा था । उसे आवाज़ के साथ संगीत मिलाने में बहुत कठिनाई हुई ।

आराधना समाप्त हुई तो पैरी थौमस फ्रांसीसी राजदूत के साथ-साथ बाहर आया । हम उसके पीछे-पीछे चले और द्वार पर पहुँचकर उसके साथ हाथ मिलाया । बाद में पैरी थौमस लंच के लिये हमारे घर आया । उसने उस सहायता के लिये जो उसे हमसे प्राप्त हुई थी कृतज्ञता प्रकट की । हमने उसका साथ इसलिये दिया था कि हम निरर्थक यन्त्रणा के विरुद्ध संगठित होकर आवाज़ उठाना चाहते थे ।

फादर ब्रासर्ड अभी ठहरेगा, किन्तु उसे जनसमूह में आराधना करने की आज्ञा नहीं । वह अपने मकान के एक कमरे में ही आराधना किया करेगा ।

पोलैंड का पादरी गिर्जाघर में रहेगा । वह पादरी प्रतीत नहीं होता बल्कि कोई आवारा सा आदमी लगता है । पैरी थौकस का विचार है कि वास्तव में वह इस व्यवसाय का आदमी नहीं और उसे लोगों ने कठपुतली बनाया है । वह अगले दिन वेदी के सामने से ऐसे जा रहा था जैसे एक पादरी को नहीं जाना चाहिये ।

पैरी थौमस की आराधना के समय एक पवित्र आत्मा युवक जिसके माता-पिता पोलैंड के रहने वाले थे सेवक का काम किया करता था । वह वास्तव में किसी राजदूतावास में ड्राईवर था इसलिये वहां सुगमता से न आसकता था । एक दिन उसे आने में विलम्ब हुआ तो पादरी ने गिर्जाघर के एक नौकर से आराधना के सेवक का काम ले लिया । इसके पश्चात् पोलैंड से आये हुए पादरी ने इस नौकर को बहुत डांट फटकार बताई और उसे पकड़कर समुदाय के अधिकारियों के पास जो धार्मिक समस्याओं

से सम्बन्ध रखने वाले रूसी कर्मचारी होते हैं ले गया। उससे पूछा गया कि उसने एक विदेशी की आराधना में क्यों सेवा की है? उसने उत्तर दिया कि पादरी ने उसे सेवा के लिये बुलाया था और यह आराधना फ्रांसीसी राजदूतावास के एक लिपिक ने अपनी माता की आत्मा की शांति के लिये विशेष रूप से कराई थी । उसकी माता का देहान्त पैरिस में हुआ था।

पोलैण्ड से आये हुए पादरी ने कहा, 'यह झूठ है। तुम्हें ध्यानपूर्वक सुनना चाहिये था। पादरी ने कई बार 'वियट नैम' का नाम लिया था और यह आराधना उसी राष्ट्र के सम्मान के हेतु हुई थी। उसने तुम्हें भ्रान्त किया है और तुमने रूस के शत्रुओं का साथ दिया है ।

वास्तव में बेचारे पादरी ने कहा था, 'विटा इटेर्नम' अर्थात् तुम्हें शाश्वत जीवन प्राप्त हो।

२ सितम्बर, १९५०

समस्त मास्को एक नये चलचित्र 'गुप्त चाल' के विज्ञापनों से सजा है। चलचित्र का अभिप्राय यह दिखाना है कि इंग्लैण्ड और अमरीका ने जर्मनी के साथ किस प्रकार पृथक सन्धि करने का प्रयास किया था। वे चाहते थे कि जर्मनी उनका पक्ष ले और रूस के विरुद्ध लड़ाई करे।

इस चल-चित्र ने स्तालिन पारितोषिक जीता है और मास्को में यह पच्चीस स्थानों पर एक साथ दिखाया जा रहा है।

इसमें दिखाया गया है कि आइज़नहोवर और ब्रैडले जो 'होनहार योद्धा' हैं और जो अपने युद्धों को लड़ने के लिये रूसी सेनाओं पर निर्भर हैं रूसियों के विरुद्ध षड्यन्त्र रच रहे हैं । एक अमरीकी युवक दिखाया गया है जिसे समय पर अनुभूति हो जाती है और वह एक लड़ाके राष्ट्र का साथ छोड़कर भव्य रूस की शरण लेता है । साल का यह सबसे उत्तम चित्र माना गया है।

६ सितम्बर, १९५०

स्वामी आज विशिन्सकी से मिलने आयेंगे। शायद उनकी भेंट का

विषय विमान की दुर्घटना है। इस सम्बन्ध में स्वामी किसी भी समा-चार की साधुता पर विश्वास करने को तैयार न थे। आखिर सुरक्षा परि-षद् में आस्टिन ने कल इस घटना की घोषणा कर दी। तब स्वामी को विश्वास हुआ। अब इसमें कोई सन्देह नहीं कि रूस के एक बम्बर को जो कोरिया के समुद्र में स्थित हमारे बेड़े पर आक्रमण करने आया था हमने मार गिराया है।

मलिक़ कहता है कि यह घटना किसी विशेष योजना के अनुसार हुई है। यह प्रपंच इसलिये समुद्र के ऊपर रचाया गया है कि इसकी पुष्टि में कोई साक्षी प्राप्त न हो सके। तथ्य मिल गये हैं और इतने कि हमें बाल्टिक सागर की घटना का उदाहरण लेने की आवश्यकता नहीं। रूसी सरकार ने जो रवैया अपनाया है उससे उसको हानि पहुंचने की सम्भावना है।

सौभाग्य की बात है कि आज भारतीय राजदूत लंच के लिये आ-रहे हैं। मैंने उनके लिये विशेष भोजन तैयार कराया है। यह इसलिये करना पड़ा कि वे मांस को छूते भी नहीं। वे रूस से जल्दी विदा होने वाले हैं, इसलिये हमने आज ही उन्हें लंच के लिये निमन्त्रित कर लिया. वे इस कठोर वातावरण में काफी देर रह चुके हैं। इससे अधिक देर यहां ठहरना उनकी दार्शनिक वृत्ति भी सहन नहीं कर सकती।

देखते हैं रूसी सरकार इस विमान सम्बन्धी घटना से कैसे सुलटती है। अपने समाचारपत्रों में तो रूसी ज़रूर बढ़ा-चढ़ाकर ही इसका वर्णन करेंगे। आजकल समाचारपत्रों में उत्तेजना फैलाने वाली सामग्री आ रही है। विस्तारपूर्वक बताया जा रहा है कि हमारी सेना ने कोरिया में क्या-क्या अत्याचार किये हैं। भाषा बड़ी उग्र है। मालूम होता है कि लेखों का अभिप्राय जनता को युद्ध के लिये भड़काना है।

ये आतंक के दिन हैं। मुझे खुशी है कि रोजर कुशलता से घर पहुँच गया है। राजदूतावास में स्त्रियों और बच्चों की संख्या बहुत है। मकानों और नौकरों की समस्या प्रतिदिन विषम होती जा रही है। यह

एक अनुचित बात है कि जब पुरुषों के मन पर राजनीतिक समस्याओं के घने बादल छाये हों उन्हें घरेलू कठिनाइयों का सामना करना पड़े।

तत्पश्चात्

लंच का समय डेढ़ बजे था। भारतीय राजदूत सवा बजे आ गये। मैंने उनके सम्मुख प्याला भर गिरियाँ रख दीं। मुझे आशंका थी कि स्वामी को लौटने में विलम्ब हो जायेगा। कई अन्य लोग आ गये। उनमें एक आस्ट्रेलिया के मिशन का अध्यक्ष था। एक फ्रांसीसी समुपदेशी डि लेमरिक, डिक सर्विस और थर्स्टन अन्य दो आगन्तुक थे। हम ने शैरीपान की और राजदूत के साथ गिरियों का लुत्फ उठाया। फिर दो बजे लंच के लिये बैठे।

पन्द्रह मिनट पश्चात् स्वामी और हमारा समुपदेशी थर्स्टन आ गये। स्वामी विशिन्सकी के साथ पैंतालीस मिनट तक बातचीत करते रहे थे। मन्त्री चालीस मिनट तक स्वामी को एक पत्र देने का प्रयास करता रहा, परन्तु स्वामी ने पत्र लेना स्वीकार नहीं किया।

मन्त्री ने कहा कि यह कूटराजनीतिक व्यवहार के प्रतिकूल है। स्वामी ने उत्तर दिया कि इस विषय का सम्बन्ध संयुक्त राष्ट्र संघ से है। इस पर सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमरीका की सरकारें सम्वाद नहीं कर सकतीं। स्वामी ने यह भी कहा कि सोवियत सरकार का प्रतिनिधि न्यूयार्क में स्थित है और वह भलीभाँति सुरक्षा परिषद में यह प्रश्न उठा सकता है। इस प्रश्न पर सम्वाद करने के लिये वही स्थान उचित है।

विशिन्सकी ने अपने निर्वक्ता पेस्लोइव द्वारा स्वामी को बार बार यही कहलवाया कि वे पत्र स्वीकार कर लें। आखिर स्वामी ने भुजाओं को गाँठित करके कहा—

'श्रीमान मन्त्री जी, इस बातचीत का कोई लाभ नहीं।'

स्वामी ने लगातार सौजन्य और सुदृढ़ता का व्यवहार किया।

अन्त में विशिन्सकी ने कहा, 'श्रीमान् राजदूत साहब, मैं तीसरी बार आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप इस पत्र को स्वीकार करलें।'

स्वामी ने अब भी इन्कार किया और यह सम्मेलन समाप्त होगया। फ्रीयर्स स्वामी के साथ था। उसने और स्वामी ने कहा कि स्वामी के उत्तर से विशिन्सकी को बहुत विस्मय हुआ। मानो उसे उनके उत्तर ने झंझोड़ दिया था। जब ये लोग वापिस आने लगे तो उन्होंने विशिन्सकी से पूछा कि क्या वह शीघ्र ही संयुक्त राज्य जाने की तैयारी कर रहा है।

विशिन्सकी ने उत्तर दिया, 'यदि तुम मुझे वीसा दे दो तो।'

स्वामी ने कहा, 'मैंने तुम्हारे वीसा पर कल हस्ताक्षर कर दिये थे। मेरा विचार था कि आपने इसे पहले ही मंगवा लिया है। पिछले महीने जब मैं जर्मनी जाना चाहता था तो मेरा वीसा तैयार होने में दस दिन लग गये थे।'

मन्त्री ने इसके लिये क्षमा याचना की। उसने कहा कि अवश्य कोई भूल हुई है। उसने तो अपने दफ्तर को आदेश दे रखा है कि यदि अमरीकी राजदूतावास से कोई पत्र आये तो उस पर तुरन्त ध्यान दिया जाये।

स्वामी मुस्कराये, और बोले, 'श्रीमान् मन्त्री जी, मुझे आशा है कि जो सद्व्यवहार आपने मेरे साथ यहां किया है वही आपके साथ संयुक्त राज्य में होगा।' यह वाक्य जैसे यहां लिखा गया है इस में कठोरता दिखाई देती है। परन्तु स्वामी ने यह स्पष्ट रूप से कहा कि इस सम्मेलन में दोनों पक्षों का व्यवहार उचित था। वे अपने अन्तिम कथन में व्यंग का प्रयोग न करना चाहते थे। वास्तव में रूसियों ने कभी उनकी ओर रूखापन दिखाया भी नहीं।

यह सब बात हमें उस समय मालूम हुई जब मेहमान विदा हो गये थे। स्वामी दफ़्तर में चले गये और मैं यहां बैठकर यह पत्र लिखने लगी। मैं देख रही हूँ और सोच रही हूँ कि इसका क्या परिणाम होगा।

हम ने शाम का भोजन किया। साढ़े नौ बजे एक अमरीकी संवाद दाता आगया। उसने कहा कि 'बी बी सी' ने उस घटना का समाचार

दिया है जिसके विषय में स्वामी ने हमें बताया था। यह समाचार 'तैस' ने मास्को रेडियो पर दिया था।

स्वामी जब सोने लगे तो बहुत खुश थे। आज सवेरे हमारे देश से सन्देश आया। 'हम आपके काम की सराहना करते हैं। आप की सूचना के लिये हम यह भी बता दें कि वाशिंगटन में विदेशी विभाग को एक पत्र पहुँचाया गया था जो हमने तुरन्त सोवियत राजदूत को लौटा दिया है।'

यहां सभी लोग इस बात से खुश हुये। कइयों को तो इस बात से गर्व भी हुआ।

१४ सितम्बर, १६५०

अक्तूबर की छुट्टी के लिये हमारी योजनायें पूर्ण हो रही हैं। हम यहां से बारह को चलेंगे। हमारा दिन भी यात्रा में बीतेगा। स्वामी मुझे ब्रसल्ज़ में छोड़ कर स्वयं लंदन जायेंगे। मैं वहां दो रात रहूँगी। सप्ताह का अन्तिम दिन मैं हालैंड में अपने राजदूत चैपिन के साथ व्यतीत करूंगी। सोमवार को वापिस आकर मैं कपड़े सिलने में तल्लीन हो जाऊंगी। सप्ताह के मध्य में मैं पैरिस में स्वामी को मिलूंगी। शुक्रवार को हम देहात में जाकर शिकार खेलेंगे। मास्को के अप्रिय वातावरण में रह चुकने के बाद यह समय बहुत सुहावना प्रतीत होगा।

कल रात का भोजन हमने ब्रिटिश राजदूतावास में किया। उनका बैल्जियन बावर्ची जा रहा है उसके जाने से पूर्व यह अन्तिम सहभोज था। लेडी कैल्ली किसी और बावर्ची की खोज में है। परन्तु अभी तक कोई मिलता दिखाई नहीं देता। वह २००० रूबल प्रति मास अर्थात् ५०० डालर देने को तैयार है।

जिन भवनों में राजनयक रहते हैं उनके किराये बढ़ाकर दुगने कर दिये गये हैं। इसका कोई कारण नहीं बताया गया। इसके विषय में प्रार्थना पत्र दिये गये। किन्तु किसी ने एक न सुनी। इधर किराये बढ़ा दिये गये हैं। उधर नौकरों के वेतन बढ़ गये हैं। इसलिये छोटे-छोटे

मिशन तो बोरिया बिस्तरा गोल कर रहे हैं। कइयों ने अपने नौकरों की संख्या घटा दी है।

आज हमारे विवाह की ३२वीं वर्ष गांठ है। हमने कुछ चुने हुये व्यक्तियों को शाम के भोजन के लिये निमन्त्रण दिया है। रात में बैठकर सोचने लगी कि इन बत्तीस सालों में कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि मैं आने वाले साल के विषय में ठीक अनुमान लगा सकूं। मेरा जीवन अनिश्चित रहा है। किन्तु यह देख कर खुशी होती है कि यह प्रत्याशा का जीवन है।

२३ सितम्बर, १६५०

सारे महीने तापमान का पारा ५० के लगभग रहा है परन्तु घर में गर्मी का ज़रा भी आभास नहीं होता। बूरोबिन ने आदमियों की टोली भेजी थी। इन लोगों ने तहखाने को तोड़ फोड़ दिया है। गर्मी पहुँचाने वाले यन्त्रों को हटा दिया है और अब किसी कमरे में रेडियेटर नहीं। बाग में लेजाकर उन्हें पानी से धो दिया गया है। रूसी विकिरकों में हवा या भाप छोड़ने के लिये कपाट नहीं। जब कभी उनकी मरम्मत करनी पड़ती है तो यह एक भारी काम बन जाता है। विकिरक हमारे सामने बाग में पड़े हैं। देख कर यह विश्वास नहीं होता कि अगले महीने कमरों को गरम करने का प्रबन्ध हो सकेगा। इंजीनियर हंसकर कहता है कि २ अक्तूबर तक वह उन्हें दुबारा लगा सकेगा। मैं चाहती हूँ कि किसी प्रकार ये जल्दी लग जायें। मकान में बहुत सर्दी है। दो अंगीठियां जो इस समय उसमें जलती हैं काफ़ी गर्मी नहीं पहुँचाती।

इस साल 'बैलेट' का पहला प्रयास सन्तोषजनक न था।

अब हम 'प्रोपोफीफ रोम्यो जूलियट' में २६ को उलानोवा को देखने की योजना बना रहे हैं। इन दिनों 'प्लिसेतस्काया' और 'स्तुचोवा' की धूम है परन्तु उनमें से कोई भी 'उलानोवा' या 'लेपेनस्चया' का मुकाबला नहीं कर सकती। ये दोनों चालीस साल से अधिक आयु की हैं। कभी 'सेमेनोवा' की धूम थी। वह एक रात नाचती नाचती मंच पर गिर पड़ी।

यह बहुत बुरी बात हुई। रूसी लोग 'बैलेट' को भी एक गंभीर विषय समझते हैं। उनकी दृष्टि में एक नर्तकी और एक जनरल यदि उनका पतन हो जाये तो दोनों बराबर हैं। दोनों का तब एक समान अपमान होता है।

४ अक्तूबर, १९५०

युद्ध के पहले साल इंग्लैंड में जो ब्लैक आउट हुआ था मैं उसे कभी भी नहीं भुला सकती। इसी प्रकार रूसी रेडियो द्वारा अमरीकी रेडियो का ब्लैक आउट भी मुझे कभी न भूलेगा।

कहीं भी सुई घुमाओ। यदि कोई ऐसा समाचार है जो इन लोगों को पसन्द नहीं तो झट गड़गड़ की आवाज़ आती है। यह शोर ऐसा है कि झट पहचाना जाता है। यदि कोई बेचारा रूसी नागरिक भूल से भी रेडियो की हत्थी घुमा दे और यह आवाज़ उत्पन्न हो तो समझो उसकी आफ़त आगई। उनमें से कोई भी अमरीका अथवा ब्रिटेन का रेडियो नहीं सुन सकता। इस शोर को देखकर आदमी परेशान होजाता है, उसे घबराहट होने लगती है। यह शोर स्वतन्त्रता का बिल्कुल उलट है।

पिछले कुछ दिनों से 'वी ओ ए' और 'बी बी सी' के अंग्रेज़ी समाचार भी सुनाई नहीं दिये। जो संचालक हमारे राजदूतावास का रेडियो बुलेटिन तैयार करता है यही समाचार भेजता है कि रातभर रेडियो में रुकावट रही।

कल शाम को हम समाचारों की खोज कर रहे थे। फ्रांसीसी भाषा में एक स्पष्ट आवाज़ आई। 'फ्रांसीसी भाषा में मास्को रेडियो।' यह रूसियों का विदेशी प्रोग्राम था। एक स्त्री ने घोषणा की कि संयुक्त राज्य से एक समाचार विस्तारपूर्वक आया है जिसमें बताया गया है कि '२७ राज्यों में निर्धन व्यक्तियों को लिंगहीन किया जा रहा है।' हम केवल इतना ही सुन सके। यदि रूस के विदेशी प्रोग्राम का यही नमूना है तो पश्चिम की सभ्य जातियां इन समाचारों पर कभी भी विश्वास न करेंगी।

१२ अक्तूबर, १६५०

मकान को गरम करने का अभी भी प्रबन्ध नहीं हुआ। दिनप्रतिदिन सर्दी बढ़ती जा रही है। रूसी कर्मचारियों ने वचन दिया था कि इस सप्ताह के अन्त तक प्रबन्ध हो जायेगा। हमारा इंजीनियर देखने गया तो मालूम हुआ कि वाष्पित्र के एक बड़े सूराख को वे अभी तक बन्द नहीं कर सके। तेल की टंकी भी साफ़ नहीं की गई। गरम पानी करने के लिये एक छोटी सी टंकी से तेल जाता है। परन्तु यह टंकी नीची होती जा रही है इसलिये तेल अब बड़ी टंकी में रखना पड़ेगा। हम अब इसकी सफाई की प्रतीक्षा नहीं कर सकते। यह रूसियों के स्वभाव का एक उदाहरण है। वे कभी किसी काम को ठीक तरह और पूर्ण रूप से समाप्त नहीं करते। जब कभी स्वामी को इस बात पर रोष आता है तो मैं कहती हूँ कि इससे हमारा पक्ष बलवान होता है और उन्हें शिकायत नहीं करनी चाहिये।

जब रूसी ड्राइवरों के हाथ हमारी सुन्दर 'कैडेलिक' कार पड़ती है तो वे उसका भी बुरा हाल कर देते हैं। वे समझते हैं कि गीयर बदलना एक हेठा काम है। मोड़ पर या चढ़ाई पर वे मोटरकार को बिना गीयर बदले ही ले जाते हैं। एक रात स्पेसो हाउस के पास वाली गली में हम ऊपर की ओर चले। अचानक सड़क के बीच में एक आदमी आ गया। उसे देख कर दया आती थी निर्धन, फटे हाल, जिसकी आंखें हम पर गड़ी थीं। वह बेचारा बाल-बाल बचा। रक्षियों में से एक आदमी बाहर निकला और वह उसे सड़क के दूसरी ओर ले गया। वह अंधा और अपांग था। मास्को की गलियों में ऐसे व्यक्ति कई बार घूमते मिलते हैं। यदि कोई ऐसा व्यक्ति अंधेरे में मिल जाये तो देखने वाले को बहुत घबराहट हो।

यह देख कर विस्मय होता है कि रूस में अपांग लोगों को बसाने का कोई प्रयत्न नहीं किया जाता यदि किया भी जाता है तो बहुत अधूरा।

मैं चाहती थी कि कोई हस्पताल देखूं। मैंने पिछले साल भी विदेशी

कार्यालय से प्रार्थना की थो और इस साल भी। परन्तु कोई उत्तर नहीं मिला। हस्पतालों से भी बढ़ कर मैं नर्सरी स्कूल और अन्य स्कूल देखना चाहूंगी। इन्हें देखने की आज्ञा भी अभी नहीं मिली।

अब ड्यूटी पर नई ऐमवीडी टीम आ गई है। रक्षियों को भी कभी-कभी छुट्टी चाहिये।

कभी-कभी ये आदमी भी बहुत भव्य प्रतीत होते हैं। एक रात हम 'बोलशोई' थियेटर गये। हमारे बैठने के स्थान ब्रिटिश राजदूत और लेडी कैल्ली के साथ थे। स्वामी के और डेविड के रक्षि हमारे पीछे बैठे थे। उन आठों की पंक्ति बहुत भव्य मालूम होती थी।

एक रात उन्होंने और तमाशा किया। वे इटली के राजदूतावास की खिड़कियों में से झांकने लगे। इस राजदूतावास में रूसी लोक-नृत्य सिखाने का प्रबन्ध किया गया है। चुने हुये लोगों को ही निमन्त्रित किया जाता है। हम उनके विशाल दालान के दोनों ओर बैठे थे। वहां तीन राजदूत थे, मन्त्री थे और कई अन्य शिष्ट राजनयक थे हमारी बहुत सी सुन्दर नारियां वहां आई हुई थीं जिनसे दालान महक रहा था। इन्हीं को देखने के लिये वे लोग अन्दर झांक रहे थे।

नृत्य सिखाने वाली रूसी है। वह एक मृदुल स्त्री है। वह फ्रांसीसी भाषा कुछ-कुछ बोल लेती है। कभी बोलते-बोलते वह रूसी भाषा पर उतर आती है। इस अवसर पर ऐड फ्रीयर निर्वक्ता का काम करता है। इसके पश्चात् वह हिम्मत से काम लेता है और उसके साथ नाचने लगता है।

एक दिन एक रूसी लोक-नृत्य हो रहा था। स्वामी और सर डेविड हाथ में हाथ डाले मार्च कर रहे थे। स्वामी से एक कदम छूट गया। सर डेविड भी पुराना सैनिक है। शिक्षक ने कहा कि उन्हें दांया पांव पहले उठाना चाहिये। इस पर दोनों को रोष आ गया। स्वामी ने कहा, 'रूसियों को यह बात सीखनी पड़ेगी।'

५ नवम्बर १९५०

तुम्हें रूसी अखबारों की कतरन मिल गई यह जानकर बहुत खुशी हुई। उन्हें पढ़कर रोष आता है। यह मास्को के समाचार पत्रों का ही हाल नहीं बल्कि इस समस्त देश में यही कुछ होता है। जो कुछ यहां के 'प्रावदा' में है वही कुछ साइबेरिया के नगरों के स्थानीय 'प्रावदा' में मिलेगा। मानवीय अभिरुचि का समाचार पत्रों में नाम नहीं। कई साल से यह कहीं भी दिखाई नहीं दी। प्रारम्भ के पृष्ठों में दलीय नीति सम्बन्धी घोषणायें होती हैं, कई प्रकार के लेख होते हैं जिनका अभिप्राय प्रचार है। अन्तिम पृष्ठ पर ही कुछ विदेशी समाचार होते हैं। स्थानीय समाचारों के स्थान पर केवल सम्मेलनों की सूचना होती है, या मत दाताओं के लिये आदेश लिखे होते हैं। व्यक्तिगत समाचारों का अभाव है।

'सोवियत वुमन' नाम की एक पत्रिका है। इसमें 'स्ताखानोवाइत' की श्रमिकों के चित्र होते हैं जो साईबेरिया के स्पात के कारखानों में काम करती है या उक्रइन के खेतों में। नारी जीवन की मृदुलता के विषय में यदि कुछ होता भी है तो बहुत कम।

पुराने रिवाजों के फिर भी कुछ अवशेष रह गये हैं। चाय की केत-लियां अब भी होती हैं। परन्तु वे ताम्बे अथवा पीतल की नहीं होतीं जिसका अभिप्राय यह है कि नई केतलियां इन धातों से नहीं बनाई जातीं। नई केतलियां किसी पतली धात से बनती हैं। यह कहना कठिन है कि वे अब भी तूला के कारखानों में बनती हैं। 'यास्ने पोलियाना' जाते समय हम इस स्थान से होकर गुज़रेंगे। हमारे लिए अब इस क्षेत्र में जाने का निषेध है। जब हम स्वामी के सग दृश्यांकन के लिये निकले थे और 'टालस्टाए' का घर देखने गये थे तो हमें पुलीस की तीसरी मोटर-कार तूला में ही मिली थी। जब हम वापिस आये तो तीनों मोटरकारें फिर भी हमारे पीछे-पीछे आ रही थीं। मार्ग में हम पिकनिक करने उतर पड़े और जिस समय हम चौदह ऐमचीडी सन्तरियों की नज़रों के सामने

समोसे खा रहे थे, दो पुलिसमैन और आ गये। वे मोटर साईकलों पर सवार थे।

इस स्थिति को देखते हुये हमें अपने मित्रों की बात पर हैरानी नहीं आती। पिछले महीने जब हम बाहर गये थे तो इन मित्रों ने बाद में कहा, "कहने को मन तो नहीं चाहता परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि तीन दिन तक आपके चेहरों पर मास्को के बादल छाये रहे थे।'

हमें अपनी दो सप्ताह की छुट्टी में बहुत आनन्द आया। इसका विचार आते ही मन मुदित हो उठता है। नवम्बर का महीना आरहा है। फिर हमें ७ नवम्बर के उत्सव अनुष्ठान को देखने जाना होगा'''परन्तु हम ७ दिसम्बर को फिर बाहर जा रहे हैं। क्रिसमस हम अपने देश में मनायेंगे। इसका विचार कर मन हर्षित हो जाता है।

कल छः तारीख की रात को बोलशोई थियेटर में बहुत बड़ा जन-सम्मेलन हो रहा है। हम वहां जायें या न जायें, इसके विषय में निश्चय करना एक बहुत बड़ी समस्या है। इसमें नीति से काम लेना पड़ेगा। वहां जाने में हमें इसलिये हिचकिचाहट है कि वहां का वातावरण असाधारण रूप से अमरीका विरोधी होगा। दूसरा कारण यह है कि हमारे राजदूतावास से केवल स्वामी को और मुझे निमन्त्रित किया गया है। हमारे साथ ऐसा कोई व्यक्ति न होगा जो हमें वहां दिये गये भाषणों का मतलब बता सके। यदि कोई बहुत बुरी बात कही गई तो हमें यह बोध न हो सकेगा कि किस समय हम लोगों को रोष में आकर उठ कर बाहर आजाना चाहिये।

८ नवम्बर, १९५०

कई साल बाद ७ नवम्बर को पहली बार वर्षा हुई। मेरे मन में मिले-जुले अनुभाव थे। मुझे इस बात की चिन्ता न थी कि मौसम के कारण कवायद के रंग में भंग पड़ गया है। परन्तु अपने और अपने सहकारियों के लिये जो कूटराजनीतिक अहाते में दो घण्टे से खड़े कवायद

देख रहे थे मैं चाहती थी कि धूप निकल आये। यदि थोड़ी वर्फ पड़ जाती तो मैं समझती चलो कोई बात नहीं परन्तु यहां तो धुआंधार वर्षा हुई और धुँध छा गई। लाल ध्वजा भीग गई। लेनिन, स्तालिन और अन्य लोगों के चित्रों पर गन्दी-गन्दी धारियां पड़ गईं। इन चित्रों पर जो कागज़ों के हार लटक रहे थे उन्हें देखकर मन पर उदासी छा जाती थी।

६ तारीख को ही जब प्रसन्नचित्त नागरिक घरों को सजाने में लगे थे वर्षा आरम्भ हो गई थी। किसी ने कहा कि दो ही स्थान ऐसे हैं जिनकी सजावट नहीं हुई। एक क्रेमलिन और दूसरा अमरीकी राजदूतावास। हमने आखिर अपना विशाल झण्डा लगा दिया। महामात्रावास के सामने मोसोवाया स्क्वेयर में जो लोग कवायद कर रहे थे यह झण्डा उनके सम्मुख बड़े ठाठ से फहरा रहा था।

हम पौने नौ बजे घर से निकल पड़े थे। मेरा वेष ऐसा था कि मैं एक साधारण रूसी स्त्री के समान प्रतीत होती थी। डैड, एड फ्रीयर्स और सैनिकों का वेष ढंग का था। स्त्रियों ने मुझ जैसा ही वेष बनाया हुआ था। समझदारी भी यही थी। इतनी वर्षा में सुन्दर कपड़े पहनना कोई बुद्धिमानी न थी।

इस साल इस उत्सव में पिछले साल की सी धूमधाम न थी। एक विशेष अन्तर यह था कि उत्सव के प्रारम्भ में बुडैनी ने एक भाषण दिया। वह कह रहा था, 'स्तालिन की जय हो।' इस पर चारों ओर से खुशी के नारे बुलन्द हुये।

पैरेड केवल नाममात्र की पैरेड थी। सैनिक प्रदर्शनी का कार्यक्रम काटकर आधा कर दिया गया था। वायु सेना की प्रदर्शनी बिल्कुल नहीं हुई। फिर भी यह दृश्य प्रभावशाली रहा।

असैनिक पैरेड आरम्भ होने के थोड़ी देर बाद हम वहां से उठ आये। हमारे साथ और भी बहुत से राज्यनयक चले आये और राजनयक कट-हरा लगभग खाली हो गया।

उससे पहली रात डैड बोशोई थियेटर अकेले ही गये। मैंने उनके साथ जाना उचित न समझा। मैं चाहती थी कि उन लोगों को आभास हो कि डैड वहां केवल एक सरकारी कर्तव्य पालन के लिये आये हैं। वे न जाते तो फजीता हो जाता। सम्वाददाता बात का बतंगड़ खड़ा कर लेते और ख्वाहमख्वाह एक कहानी बन जाती। सम्वाददाताओं ने तो यहां तक किया था कि डैड जिस वेष में पैरेड देखने गये थे उसका भी विवरण दे दिया था। अच्छा हुआ उन्होंने मेरे वेष का विवरण नहीं दिया।

१६ नवम्बर, १६५०

मास्को में रहते हुये हम लोगों को एक बात बहुत बुरी लगती है। यदि कोई प्रेम भावना का प्रदर्शन करे तो हम उसकी सराहना नहीं कर सकते और न ही उसकी प्रेम भावना का प्रत्युत्तर दे सकते हैं। एक बात तो यह है कि हमें उसके अनुभावों की सच्चाई पर भरोसा नहीं होता और दूसरे हमें भय होता है कि कहीं उस व्यक्ति को हमारे कारण हानि न पहुँच जाय।

इस प्रकार का प्रदर्शन प्रायः नहीं होता। मास्को से बाहर गाड़ी में सफर करते समय हमारे लोगों को कभी-कभी यह अनुभव होता है। वे इसकी ओर से उदासीन ही रहते हैं।

इस विषय में एक घटना याद आती है। हमारे जानने वाले एक ब्रिटिश युवा पति-पत्नी ने अपनी ही आयु के एक रूसी जोड़े से मित्रता स्थापित कर ली।

यह बात ऐसे आरम्भ हुई, अंग्रेज़ लड़की बस में जा रही थी कि उसका बटुवा वहां रह गया। रूसियों को बटुवा मिल गया। उन्होंने टेलीफून किया और उसे लौटाने के लिये समय नियत कर लिया। इस प्रकार दोनों परिवार एक दूसरे से परिचित हो गये।

उनकी कई बार भेंट हुई। अंग्रेज़ जोड़ा जब भी टेलीफून करता सदैव राजदूतावास के बाहर से करता।

एक बार उन्हें रूसियों ने अपने घर में शाम के भोजन के लिये बुलाया। बात-चीत का सम्बन्ध गायन, नृत्य आदि कलाओं से था। राजनीतिक विषय पर कोई बात नहीं हुई।

इतना होने पर भी अंग्रेज़ी जोड़े के पीछे पुलिस लग गई। कोई विशेष बात नहीं हुई परन्तु जब उन्होंने दुबारा टैलीफून किया तो कोई उत्तर न मिला। कई बार उन्होंने अपने रूसी मित्रों से सम्पर्क करने का प्रयास किया परन्तु सफलता न मिली। इस मित्रता का यही अंत हुआ।

हमारे एक राजनयक सहकारी ने हमें इस प्रकार की एक और कहानी सुनाई। वह पिछले महीने तिफ़लिस में था। उसे गाड़ी में एक रूसी मिला। उसने उससे और उसकी पत्नी से बात-चीत की और जिससे उसे मालूम हुआ कि वह गायन के इतिहास का प्रोफैसर है, और मास्को में काम करता है।

ये दोनों आदमी विद्वान् थे। उनके विचार कई पहलुओं में एक से थे। वे तिफ़लिस में एक सप्ताह साथ-साथ घूमते रहे।

हमारे सहकारी का नाम हैनरी है। रूसी ने उसे अपने मित्रों से मिलाया। हैनरी ने कई बार इन मित्रों के घर भोजन किया। वह स्थानीय अजायब घर के अध्यक्ष के साथ इधर-उधर सैर सपाटे को गया। वह खुल्लमखुल्ला आता जाता था इसलिये यदि पुलिस को कोई आपत्ति होती तो वह प्रोफैसर से कह सकती थी और उनका साथ-साथ रहना छूट सकता था।

हैनरी के कथनानुसार उन्होंने किसी भी राजनीतिक विषय पर बात चीत नहीं की। प्रोफैसर और उसके मित्र या तो अंग्रेज़ी में बात करते थे या फ्रांसीसी में। वे सब सुसंस्कृत व्यक्ति थे और बौद्धिक विषयों में उनकी अभिरुचि थी। वे हैनरी को अपना एक साथी समझते थे। उसे बहुत आनन्द आया। मास्को लौट कर प्रोफैसर ने उसे कई बार भोजन के लिये निमन्त्रित किया और टैलीफून पर उससे बात-चीत की।

मैंने हैनरी से इसके विषय में वार्ता की। उसने मुझे बताया कि

प्रोफैसर का वेतन प्रतिमास ४००० रूबल है। वह और उसकी पत्नी दो कमरों के मकान में रहते हैं। सजावट का सामान बहुत सादा है परन्तु चारों ओर पुस्तकें लगीं हैं।

उनका एक अपना रसोई घर है, एक गुसलखाना है। और यह ठाठ का मकान समझा जाता है।

इनके घर में कोई नौकर नहीं। एक स्त्री सफाई करने के लिये आती है। उनके पास मोटरकार भी नहीं है। प्रोफैसर मोटरकार खरीदना चाहता था परन्तु जिस संस्था में वह काम करता है वहीं से उसे आवश्यकता पड़ने पर मोटरकार मिल जाती है। इस संस्था ने छुट्टियों में उसका 'काकेसस' में ठहरने का प्रबन्ध किया था। इस संस्था ने उसकी कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित कीं हैं जिनसे उसे कुछ आय होती है। वह रागों की रचना करता है परन्तु कुछ साल से उसने किसी राग की रचना नहीं की।

हैनरी ने उसके रागों के कुछ नमूने देखे हैं। वे अपने भावों और अपनी बनावट के अनुसार आधुनिक प्रतीत होते हैं। इस प्रकार की रचनाओं को रूसी सरकार प्रोत्साहन नहीं देती और समझती है कि ये साम्यवाद को हानि पहुँचाती है। यही कारण है कि उसने रागों की रचना करना छोड़ दिया है

इन बातों का अनुमान हैनरी ने स्वयं लगाया है। उसके रूसी मित्र ने इसके विषय में उसे कुछ नहीं बताया। बल्कि उसने कहा कि व गायन के दो इतिहास लिख रहा है—एक ज़िच गायन का और दूसरा पोलिश गायन का। इसी में उसका सब समय व्यतीत हो जाता है

इस मेल-जोल पर अभी तक कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया। इससे हैनरी को भी घबराहट हो रही है और हमें भी। हम सोते हैं कि क्या रूसी प्रोफैसर के मन में कोई पाप तो नहीं है? राज्य अधिकारियों ने उसे एक विदेशी के साथ मित्रता स्थापित करने की आज्ञा क्यों दी है? यदि यह सब कुछ उनकी इच्छा से हो रहा है तो प्रोफैसर ने उसे अपने विचारों से प्रभावित करने की चेष्टा क्यों नहीं की? क्या हैनरी को

मित्रता का नाता कायम रखना चाहिये ? क्या प्रोफैसर जानता है कि इस मित्रता से उसे हानि पहुँच सकती है ? हम इन प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाते ।

बार-बार हमें यही आभास होता है कि अधिकारियों को इसका बोध है और यह सब कुछ उनकी इच्छा से हो रहा है ।

इस प्रकार की घटनायें बहुत कम होती हैं । यही कारण है कि हमारे मन में सन्देह उत्पन्न होने लगते हैं ।

एक बात ज़रूर है कि हैनरी का मन बदलना सुगम नहीं । वह सुदृढ़ विचारों का व्यक्ति है और पक्का देश भक्त है ।

मास्को का जीवन बहुत विचित्र है । रूसियों के बीच में रहते हुये भी हम उनसे पृथक हैं । हम मानो विरोधी शिविरों में रहते हैं ।

देश में रहने वाले लोगों को यह आभास नहीं हो सकता कि यहां सन्तरी किसी के आदेश से ही वंदना करता है और वह इस आदेश के अनुसार ही वंदना करना छोड़ भी देता है ।

नौकरानियां भी आदेश के अनुसार ही आती जाती हैं ।

इसी प्रकार जब वे चाहते हैं थियेटर का टिकट भेज देते हैं, जब नहीं चाहते तो नहीं भेजते । एक प्रार्थना आज स्वीकार कर ली जाती है, कल उसी स्वीकृति को वापिस ले लिया जाता है ।

ये लोग हीन-से-हीन बात भी कर सकते हैं । कोई ऐसी बात नहीं जो उनके मस्तिष्क में न आये ।

६ फरवरी, १९५१

हम बर्लिन से कल रवाना हुये । जर्मनी और पोलैंड पर बादल छाये थे । परन्तु ज्यूं हीं हम रूस में दाखिल हुये धूप निकल आई । नीचे रूस के काले वन और बर्फ से ढके मैदान दिखाई देने लगे ।

न्यूकोवा के हवाई अड्डे पर हमारे लोगों के साथ-साथ रूसी भी आये हुये थे । वे अपने पोलिश भाई-बन्दों को लेने आये थे जो एक अन्य हवाई जहाज़ से उतरे थे । रूसी लाल झण्डियां फहरा रहे थे ।

आखिर हमारे दूतावास के लोग दिखाई दिये। रूसियों की अपेक्षा वे अधिक शोभायमान प्रतीत होते थे। वे हमें मिलकर बहुत खुश हुये।

बर्फ के कारण मास्को अति सुन्दर प्रतीत होता था। जब हम यहां से गये थे उस समय दृश्य इतना सुहाना न था जितना अब है।

फ्रीयर्स परिवार के लोगों ने हमें क्रिसमस का हाल सुनाया। यह उत्सव बड़े समारोह से मनाया गया था। इस साल हेल्सिन्की से प्रोटैस्टैन्ट पादरी नहीं आया था। आधी रात को नाचघर में फादर ब्रासार्ड ने आराधना की। बहुत लोग आये हुये थे।

सदैव के समान शाम का सहभोज हुआ। दूतावास के अमले के लोगों ने और बच्चों ने मिल कर क्रिसमस के भजन गाये।

एक परिवार को छोड़ कर बाकी सभी अमरीकियों को निमन्त्रित किया गया था। 'डेली वर्कर' का संवाद दाता श्री क्लार्क और उसकी पत्नी रूसियों का साथ देते हैं। वे अमरीका की हर एक बात की कड़ी आलोचना करते हैं। इन लोगों को बुलाना उचित भी न था।

इन लोगों की भी एक कहानी है। आस्ट्रेलिया के राजनयक की पत्नी मार्जोरी ब्लेकिने और श्रीमती क्लार्क इंग्लैंड से जहाज़ पर सवार होकर आ रहे थे। उनके बच्चे भी उनके साथ थे। यह रूसी जहाज़ था। जब यह स्टाकहालम की बन्दरगाह पर लगा तो मार्जोरी ने कहा कि वह तट पर जाकर कुछ चीजें खरीदना चाहती है।

श्रीमती क्लार्क ने पूछा, 'क्यों? मास्को में तो सभी चीज़ अच्छे दामों मिल जाती है।'

मार्जोरी ने कहा, 'मुझे मालूम था कि तुम्हारा यही विचार है। यह ठीक ही है। परन्तु तुम्हारे दो बच्चे हैं। हो सकता है इन्हें इस शीत ऋतु में बहुत सर्दी लगे। मैं तुम्हें जीवन के कुछ तथ्य बता सकती तो तुम्हारे लिये बेहतर रहता।'

दूसरी स्त्री ने उसकी ओर आंखें फाड़ कर देखा और कहा, 'तुम्हारा मतलब है कि मास्को में दो बच्चों को नहलाने का पानी नहीं मिल सकता ?'

अब श्रीमती क्लार्क को भी सचाई का बोध हो गया है। वे पति, पत्नी और दो बच्चे मैट्रोपोल होटल में डेढ़ कमरे में रहते हैं, गरम तवे पर भोजन बनाते और द्रोणिका में कपड़े धोते हैं।

यही नहीं। हमारे समुपदेशी ने मुझे बताया कि अभी कुछ दिन हुये श्रीमती क्लार्क आईं और कहने लगी कि उसका नाम अमरीका की नागरिका के रूप में दर्ज कर लिया जाये। वह अपने दांत ठीक कराना चाहती थी।

इतनी कठिनाइयां सहन करने के पश्चात् यदि उसका जनून उतर गया था तो यह कोई आश्चर्य की बात न थी। इतना काफ़ी था कि वह अपने 'साम्राज्यवादी' देश वासी से अपना दांत ठीक कराने के लिये तैयार हो गई थी।

स्पेसो हाऊस में आजकल मेला लगा है। बैल्ली बाबोअर के स्थान पर ह्यु कर्मिंग मन्त्री नियुक्त हुआ है। वह परिवार सहित अतिथि गृह में रह रहा है। और भी कई लोग आये हैं। मज़ा यह है कि कई नौकर छोड़ कर चले गये हैं। परन्तु घबराने की कोई बात नहीं। कर्मिंग पुराने मित्र हैं और उनके साथ रहने में आनन्द आता है।

नौकरों की कठिनाई सभी लोगों को है। ब्रिटिश राजदूतावास से इस महीने चार नौकर चले गये हैं। नार्वे के राजदूतावास से बावर्चिन ने, जो वहां पांच साल से काम कर रही थी, अवकाश प्राप्त कर लिया है। उसे सूचना मिली थी कि वह विदेशियों के यहां नौकरी नहीं कर सकती। वह बोरिया बिस्तरा बांध कर अपनी इच्छा से साईबेरिया चली गई है।

स्वेच्छिक परावासी को अधिकार है कि वह अपना प्रवेश-पत्र अपने पास रख सकता है। रूस में प्रवेश-पत्र मानो एक अधिकार पत्र है। यदि यह खो जाये तो न भोजन मिलता है, न रहने को स्थान और न सांस लेने को हवा।

इस लड़की के पास प्रवेश पत्र था, किन्तु वह न चाहती थी कि उसके रहने खाने का प्रबन्ध सरकार करे। वह अपने ऊपर ही निर्भर रहना चाहती थी इसलिये वह साईबेरिया चली गई।

हमारे विषय में सभी का यह विचार है कि हम बहुत प्रसन्न दिखाई देते हैं। इसका कारण यह है कि दृश्य अति सुन्दर है। खुले दिन हैं। खूब धूप रहती है। सर्दी कम है।

स्पेसो हाऊस के बाहर जो वर्गाकार है उसमें बच्चे पिल्लों के समान लोट लगाते हैं। आंखों और कानों तक उन्हें कपड़ों में लपेटा हुआ है। छोटे बच्चों को 'बाबुश्का' अर्थात् बूढ़ी स्त्रियां खिलाती फिरती हैं।

इस दृश्य में टूटे-फूटे, छोटे से गिर्जाघर ने जान डाल दी है। सर्दी की धूप में वह भी मुस्काता सा प्रतीत होता है।

१६ फरवरी, १९५१

दो बातें उल्लेखनीय हैं। स्तालिन ने प्रावदा के संवाददाता से भेंट की जिसका वृतांत प्रकाशित हुआ। इसमें ऐटली के दुष्कार्य पर विशेष रूप से जोर दिया गया है। अमरीका के सैनिकों और सेनाओं का भी वर्णन है। जहां इनके शौर्य की सराहना की गई है वहां यह भी बताया गया है कि वे कोरिया में अनमने होकर लड़ रहे हैं। जिन लोगों ने हिटलर के दांत खट्टे किये थे, स्तालिन के कथन के अनुसार, वे चीनियों से मात खा गये हैं। इससे यह परिणाम निकाला गया है कि कोरिया में हस्तक्षेप करना अमरीका के लिये उचित न था।

हमारे लोगों को यह भय है कि रूसी हमें अग्रधर्षक सिद्ध करना चाहते हैं। विदेशी मन्त्रियों में समझौते के लिये यदि कोई सम्मेलन हो तो रूसी अवश्य इस बात पर ज़ोर देंगे। वे बताना चाहेंगे कि वे ही शान्ति स्थापित करने के इच्छुक हैं।

कल हमारे आदमी इसी विषय में गंभीर वार्ता करते रहे।

दूसरी बात एक पुस्तक के विषय में है। इस पुस्तक का नाम है 'सिबेरी' और इसका लेखक है 'सिवोजा' जो सर्बिया का रहने वाला है।

वह सात साल तक साईबेरिया के 'श्रम शिविरों में' काम करता रहा है। साईबेरिया में श्रमिक किस प्रकार भरती किये जाते हैं और किस प्रकार उनसे काम लिया जाता है यह सब कुछ बड़े विस्तार से इस पुस्तक में दिया गया है। जब कभी कोई बड़ा काम हाथ में लिया जाता है, देश के सब कारागार खाली हो जाते हैं। जिन अपराधियों पर अभियोग चल रहे होते हैं उन्हें तुरन्त जजों के पास लाया जाता है और सथस्क आवश्यकता के अनुसार उन्हें कैद की सज़ा दे दी जाती है।

हमारी बावर्चिन का पुत्र साईबेरिया के दूर उत्तरी भाग में चार साल की कैद काट रहा है।

२६ फरवरी, १६५१

तुम्हारा पत्र कल मिला। इसमें तुमने मानो बसन्त ऋतु को बन्द करके भेजा है। इसने हमारे मन में बसन्त ऋतु का वेष धारण करने की लालसा उत्पन्न करदी, किन्तु यहां तो अभी भी सर्दी है, गहरी बर्फ पड़ी हुई है, स्त्रियां अभी भी सड़कों पर से बर्फ हटा रही हैं।

कभी-कभी हम ओपेरा अथवा बैलेट देखने चले जाते हैं, परन्तु आनन्द नहीं आता।

पिछले शनिवार हम 'क्वीन आफ़ स्पेड्ज़' देखने गये। यह पुश्किन की एक कविता से लिया गया है और एक दुखद कहानी है जिसकी पृष्ठभूमि प्राचीन सेंट पीटर्सबर्ग है। कुछ दृश्य आधुनिक पार्कों के और नेवा के तट के भी हैं। ये दृश्य अति उत्तम हैं। इन दृश्यों का चित्रण दमित्रोविच ने किया था। युद्ध से पूर्व का वह एक कुशल कलाकार था जिसे मदिरा और ज्यौर्जिया की प्रेयसियों के बाहुल्य ने नष्ट कर दिया।

यह ओपेरा फिर भी कुछ अच्छा है। बोलशोई में एक ओपेरा हो रहा है जो सिवाये प्रौपेगेन्डे (प्रचार) के और कुछ नहीं है। संगीत और अभिनय दोनों बहुत तुच्छ हैं।

एक दृश्य में कुछ उत्कण्ठा दिखाई दी। यह गेहूँ के खेत का दृश्य था। जब पर्दा उठा तो नायका फूस-पराल के ढेर पर लेटी दिखाई दी। सहसा

विचार आया कि आखिर प्रेम का कुछ तो अंश दिखाई दिया। नायक वहां आया और उसने नायका को धूप में लेटे देखा तो अपनी जेब से एक पत्र निकाला और गाने लगा। यह प्रेम का गीत न था। इसमें विस्तार पूर्वक यह वर्णन किया गया था कि किस प्रकार नया बांध लगाया जा रहा है, किस प्रकार नदियों के बहाव से अथाह शक्ति प्राप्त की गई है और किस प्रकार रूसी अपनी सृजन शक्ति का प्रयोग कर रहे हैं।

कभी-कभी विचार आता है कि क्या रूसी कभी अपने विषय में नहीं सोचते। जहां भी देखो वे चुपचाप दिखाई देते हैं। थियेटरों में, लोब्बी में, होटल में कहीं भी किसी की आवाज़ सुनाई नहीं देती। हैरानी होती है कि रूसियों के दिलों में क्या है। वे अपने नेताओं और शासकों से किस बात की आशा करते हैं? यह एक बुझारत है।

किसी अन्य राजदूतावास के एक मित्र ने अपने ड्राइवर से स्तालिन के प्रावदा में छपे वक्तव्य के विषय में बात की और पूछा कि वह साम्यवाद का क्या अर्थ समझता है।

ड्राईवर ने उत्तर दिया, 'हो सकता है साम्यवाद हमारे जीवन में न आये, किन्तु यह बहुत बढ़िया चीज़ हैं, फिर किसी को तीन घंटे से अधिक काम करने की आवश्यकता न पड़ेगी। दुकान पर सब चीजें बिना दाम मिलेंगी। सबके रहने के लिए पर्याप्त स्थान होगा। हम बहुत प्रसन्न होंगे।'

सोवियत सरकार ने विदेशी मंत्रियों के सम्मेलन की मांग की थी। स्वामी ने इस मांग का उत्तर देते हुए कल पराह्न में एक पत्र विशिन्सकी को दिया। फ्रेंच और ब्रिटिश राजदूतों ने भी इसी प्रकार के पत्र दिये। हम चाहते हैं कि सम्मेलन हो। इसके विषय में प्रारम्भिक वार्ता पैरिस में मार्च के आरम्भ में होनी चाहिए। हमारा यह भी सुझाव है कि कार्यक्रम में जर्मनी को सशस्त्र करने के अतिरिक्त और बातें भी हों। जिन बातों पर या क्षेत्रों के विषय में विवाद है उन पर भी वार्ता की जाये।

स्वामी विशिन्सकी केसाथ केवल आठ मिनट रहे। उसने अब एक नया निर्बंक्षा रखा है जो बहुत निपुण नहीं है।

विशिन्सकी कुछ थका-थका सा और चिड़चिड़ा सा दिखाई देता था। स्वामी का ऐसा ही विचार था।

६ अप्रैल, १६५१

बसन्त ऋतु आ गया है। ऐर फ्रीयर्स ने कहा, 'क्या कमाल है? सिमेन्ट दिखाई देने लगा है।'

यह बात ठीक भी है। अभी तक कहीं कोई पत्ता दिखाई नहीं देता था, न ही कहीं कोई फूल। अब लोग रुई के फूल लिये दिखाई देते हैं और यही इस बात का संकेत है कि शीत ऋतु समाप्त हो गया है।

घरों के प्रांगण और छोटी सड़कें कीचड़ से अटी हैं। सड़क से द्वार तक लोग तख्ते रख लेते हैं। शहर से बाहर जहां कहीं नई इमारतें बनी हैं दशा इससे भी बुरी है। कहीं भी नालियां नहीं बनीं। इन नए भवनों के आस-पास फूल पत्ते लगाने का कोई प्रयास नहीं किया गया। इनके चारों ओर सर्दी में बर्फ होती है। बसन्त और शिशिर में कीचड़ और गर्मी में धूल।

कीमतें घटने से दुकानों पर जमघट दिखाई देने लगे हैं। सभी दुकानों पर ग्राहकों की लम्बी-लम्बी पंक्तियां लगी हैं। अचार की दुकान पर भी। इसका कारण यह है कि मांग बहुत है, उत्पादन कम। 'मोस्तोर्ग' सामान की एक बहुत बड़ी दुकान है। इसके भीतर जाना और बाहर आना ही एक बहुत बड़ा अभियान है।

इस समय देहात के लोग क्रय-विक्रय के लिए निकलते हैं। बाजारों में स्थान-स्थान पर किसान दिखाई देते हैं। आदमियों ने भेड़ की खाल के कोट पहने हैं। स्त्रियां पोस्तीन अथवा कढ़ी हुई टोपियां पहने और बेल बूटेदार शाल ओढ़े फिरती हैं। ये लोग लेनिन के मकबरे को आश्चर्य की दृष्टि से देखते हैं। दुकानों और अजायब घरों के अन्दर जाते और

बाहर आते हैं। कभी सड़क के मोड़ों पर खड़े होकर सूरजमुखी के बीज चबाने लगते हैं।

भूमि पर से बर्फ हटा दी गई है और मैं अपने बागीचे की देख-भाल करने लगी हूं। हमारा पुराना बूढ़ा माली न जाने कहां चला गया है। उसका कोई पता नहीं। उसे गये दो सप्ताह हो गये हैं। सुना है कि किसी होटल में नशे की हालत में उसने किसी ऐसे आदमी को पीट दिया जिसका एक बाजू टूटा हुआ था। हो सकता है इस अपराध में उसे बन्दी बना लिया गया हो।

उसकी पत्नी ने उसका पता लगाने का प्रयास किया। वह कारागार का पता पूछ-ताछ कर जिसमें उसे ले गये थे उसे ढूंढने गयी। उस कारागार से वह कहीं और चला गया था। वह दूसरे कारागार में गई। यहां उसका कोई पता न था। उसने एक वकील की सहायता ली। परन्तु अभी तक माली का कोई पता नहीं लगा। माली की आयु ६९ साल की है। वह दुर्बल व्यक्ति है। वह मदिरा का सेवन करता है किन्तु फिर भी उस पर दया आती है।

उसकी पत्नी कहती है कि अब उनकी कभी भेंट न होगी। वह ये शब्द इतने विरक्त भाव से कहती है कि उन्हें सुनकर आदमी सहम जाता है।

हम रविवार को 'कम्मिंग्ज़' के साथ 'जैगोर्स्क' मठ देखने गये। हमारा एक पूरा कारवां था। तीन मोटरकारें हमारी थीं, दो रशियों की। स्वामी के रशियों की मोटरकार 'ज़िम' बहुत नई और सुन्दर है। वह 'बु इक' के समान है। उन्हें इसका बहुत गर्व है। स्वामी ने जब इसकी प्रशंसा की तो वे बहुत प्रफुल्लित हो उठे।

हमारे पास कैमरा भी था। स्वामी का नया 'पोलराइड' कैमरा तो बहुत ही अच्छा था। उसने मानो हलचल मचा दी। इसमें एक मिनट में बना बनाया चित्र तैयार हो जाता है। हमने जब यह चित्र रशियों को दिखाया तो वे सम्मोहित हो उठे। उन्होंने अवश्य इसके विषय में मुख्यकार्यालय में बातचीत की होगी।

आसपास बच्चे भी बहुत थे। उनमें से एक लड़का अपने साथियों से कहने लगा, 'यह जादू के समान है। विदेशी आदमी ने बटन दबाया और एक मिनट में एक चित्र बन कर बाहर आगया। उसने मुझे यह चित्र दिखाया था। मैंने इसे अपनी आंखों देखा है।'

'कम्मिग्ज़' ने गांव के होटल में हमें दोपहर का खाना खिलाया। हमारे लिए अलग एक कमरा नियत किया गया था। हम रूसी जनता से अलग बैठे थे। कमरा भी साफ सुथरा था। उसके एक कोने में एक बिस्तर लगा था। इससे यह कमरा घर प्रतीत होता था।

लड़के बाहर खड़े देख रहे थे। उनमें से एक गुसलखाने के द्वार पर आ खड़ा हुआ। यह बहुत गंदी जगह थी और यहां से बदबू आ रही थी।

दो छोटी लड़कियों ने खाना परोसा। सब्ज़ी में चर्बी ऊपर तैर रही थी।

हम 'त्रेतियाकोव आर्ट गैलरी' (अर्थात् कलाकेन्द्र) देखने गये। इसमें हर एक कमरे में स्तालिन और म्यो की मूर्तियां लगी थीं। बड़े-बड़े चित्र लगे थे। इनसे प्रतीत होता था कि रूस और चीन में जो सन्धि हुई है उसकी खुशियां मनाई जा रही हैं। इनमें यह दिखाने का प्रयास किया गया था कि प्रत्येक जाति के लोग आपस में भाई-भाई हैं।

'कार्टूनों' के कमरे में कोरिया के युद्ध के चित्र दिखाये गये थे। उस में दिखाया गया था कि मैकार्थर खड़ा देख रहा है कि किस प्रकार लोगों को फांसी पर लटकाया जा रहा है। बम्ब छोटे छोटे बच्चों पर गिरते दिखाये गये थे और अमरीका के सैनिक रक्त के समुद्र से गुज़रते हुये।

एक पंक्ति में व्यक्तिगत चित्र लगे थे। इसके ऊपर लिखा था: 'लड़ाई कराने वाले।' इसके लिये तीन कलाकारों को स्तालिन पारितोषिक प्राप्त हुआ था। डीन अचेसन का विशेष रूप से खाका उड़ाया गया था।

जब कभी मैं इस कला भवन में जाती हूँ मेरे पीछे-पीछे एक आदमी रहता है। यह स्वामी के रक्षियों में से नहीं होता। बल्कि एक विशेष

गुप्तचर है। जिस कमरे में भी मैं जाती हूँ वह मेरे पीछे-पीछे रहता है। वह अपने दफ़्तर को बहुत कुछ लिख कर देता होगा और बताता होगा कि हमने वहाँ क्या-क्या देखा और कितना समय किस कमरे में व्यतीत किया।

कितनी अजीब बात है कि रूसियों ने एक आदमी केवल इसलिए नियुक्त किया है कि यदि अमरीका के राजदूत की पत्नी कला भवन देखने आए तो उस पर दृष्टि रखी जाये। यदि वे इस प्रकार आदमी नियुक्त करते हैं तो यह कोई बड़ी बात नहीं कि रूस में बेकारी का अभाव है।

इस आदमी को हम द्वार पर ही छोड़ आये थे। मुझे आशा है कि वह वहीं मेरी राह देखेगा और तीन महीने पश्चात् जब मेरा फिर वहां जाना होगा तो वह वहीं खड़ा होगा।

११ अप्रैल, १९५१

मुझे विचार था कि मास्को और क्रैमलिन बसन्त ऋतु के आगमन में बाधा डालेंगे। किन्तु किसी न किसी तरह बसन्त ऋतु आ ही गया है। हवा सुरभित है। सभी घरों में स्त्रियां खिड़कियों के शीशे साफ़ करने में लगी हैं। स्पेसो में यह काम बहुत वेग से हो रहा है। तीनों नौकरानियां अपने सिर पर तौलिये लपेटे खूब काम में लगी हैं और साबुन से शीशे धो रही हैं।

मुझे अपने बागीचे की बहुत चिन्ता है। हमें अभी तक दूसरा माली नहीं मिला। मुझे डर है कि जब तक नया माली आयेगा बीज बोने का समय बीत चुका होगा। पिछले साल की भांति इस साल भी बीज देर से बोए जायेंगे और कहीं जाकर गर्मी के मध्य में फूल खिलेंगे।

स्वामी के रक्षियों ने नई टोपियां पहन ली हैं। उनके हलके और हरे रंग के कोट भी अति सुन्दर लगते हैं। अपनी 'ज़िम' कार में बैठे हुये ये लोग बहुत शोभायमान प्रतीत होते हैं।

इनमें से एक व्यक्ति हमारा मित्र बन गया है। उसकी आंखें काली हैं और डिक उसे 'लम्बा चाकू' कहकर पुकारता है। इसका कारण यह

है कि वह एक ऐसा चाकू लगाये रहता है जो उसकी बगल से कमर तक लटकता है।

हमारे यहां दो लड़कियां टैलीफून संचालन का काम करती हैं। मैंने 'सियर्स' से इनके लिये नीली और सफेद बूटियों का वेष मंगाया है। 'मौंटगोमरी वार्ड' से मैंने छपे हुये भड़कीले गिरेबान मंगाये हैं। ये उन स्त्रियों के लिये हैं जो हमारे कपड़े धोती हैं। ये स्त्रियां हमारे लिये मुसीबत हैं। यदि होटलों वाले हमारे कपड़े धोने लगें तो मैं इन सब को एक दिन में निकाल दूं। मोखोवाया में काम करने वाले नौकर गुसलखानों में काफ़ी कपड़े धो लेते हैं फिर भी चादरें और अन्य कपड़े ऐसे हैं जो घर पर नहीं धुल सकते।

मास्को में कपड़े धोने का प्रबन्ध केवल एक स्थान पर है। वह है बोलशोइ थियेटर, यहां केवल ग्राहकों के कपड़े धोये जाते हैं। यदि हमें अपने वस्त्र विशेष रूप से धुलवाने हों तो फिनलैंड या स्वेडन भेजने पड़ते हैं। मास्को में कपड़े धुलाने की कठिनाई के कारण ही लोग रंगीन कमीजें और रंगीन बनियानें पहनते हैं।

इसका अभिप्राय यह नहीं कि रूसी लोग गंदे रहते हैं। उनके यहां सप्ताह में एक दिन स्नान के लिये विशेष रूप से नियत है। वे लोग भाप द्वारा स्नान करते हैं। गांव-गांव में गुसलखाने हैं। वहां लोग इस प्रकार एकत्रित होते हैं जैसे क्लबों में। हमारे कई आदमी इन स्थानों को देख आये हैं। वायुसेना के सहायक सहचारी स्ट्रय वार्विक ने एक दिन स्वामी से कहा कि वे भी वहां ज़रूर जायें। वह देखना चाहता है कि फिर उनके रक्षि क्या करेंगे। यदि उन्हें स्वयं भी नहाना पड़ा तो वे अपने अस्त्र-शस्त्र कहां रखेंगे।

लेनिन का मकबरा फिर खुल गया है। वह सप्ताह से भी अधिक बन्द रहा। पिछले साल भी वह बन्द रहा था। तब यह कहानी फैल गई थी कि लेनिन के एक कान की मरम्मत हो रही है। किन्तु हो सकता है वहां भी खिड़कियां साफ हो रही हों।

मुझ से भूल हो गई। मकबरा अभी भी बन्द है। जिन लोगों को मैंने देखा था वे विशेष व्यक्ति थे जो देहात से आये थे। इस बार मकबरा कुछ अधिक दिन के लिये बन्द रहा है। पिछले दो साल में जब से हम यहां हैं वह इतने दिन कभी बन्द नहीं रहा। हो सकता है कोई बड़ी मरम्मत आ पड़ी हो। आशा है मई दिवस तक यह तैयार हो जायेगा।

सदैव की भांति इस साल भी इस दिवस की तैयारियां बड़ी धूम-धाम से हो रही हैं। रात को जब हवा एक विशेष दिशा में चलती है तो कारखानों की आवाज़ ऐसे आती है जैसे यह सुरग में से होकर आ रही हो। यह आवाज सभी घरों से आती है और शिथिल कर देती है। शायद उत्पादन बढ़ाने की तैयारियां हो रही हैं।

आज सवेरे रेडियो द्वारा समाचार आया कि राष्ट्रपति ने जनरल मेकार्थर को अपने पद से विमुक्त कर दिया है। यह समाचार 'बी बी सी' ने दस बजे दिया था। देखते हैं रूसी क्या कहते हैं। वे तत्क्षण तो कुछ न कहेंगे। वे किसी भी महत्वपूर्ण घटना पर तुरन्त आलोचना नहीं करते। वे देखते हैं कि प्रचार के लिये उसका क्या और किस प्रकार लाभ उठाया जा सकता है।

स्वामी रिजवे को अच्छा आदमी समझते हैं। कुछ भी हो जो आदमी वहां था उसी ने अध्यक्षता संभालनी थी।

जब तक शान्ति की सन्धि नहीं हो जाती जापान पर सेना का अधिकार रहना ज़रूरी है।

वाशिंगटन में तो आजकल खूब फूल खिले होंगे।

४ अप्रैल १९५१

नगर में चारों ओर चीन के लोग दिखाई देते हैं। व्यापारी, विद्यार्थी और राज्यकर्मचारी सभी प्रकार के लोग आये हुए हैं। त्रित्याकोव में पिछले सप्ताह के पश्चात् चित्रों और मूर्तियों की बहुत वृद्धि हो गई है।

जब ट्रोट्स्की और टीटो जैसे व्यक्तियों पर कोप की दृष्टि पड़ती है तो रूसी सरकार को कितनी उलझन का सामना करना पड़ता होगा।

कितने लेखे बदले जाते हैं, चित्र हटाये जाते हैं और मूर्तियां तोड़ी जाती हैं। ऐसे अवसर पर स्याही उड़ाने वाला यन्त्र रूस की नौकरशाही का एक मुख्य उत्पादन होता होगा।

ऐड फ्रीयर्स रूसी भाषा सीख रहा है। उसने मुझे बताया कि सोवियत संघ को छोड़कर भागने वालों के लिए कड़ी सजा है। यदि कोई सैनिक या सेना का उच्चकर्मचारी भागता है तो उसे देखते ही गोली से उड़ाया जा सकता है। अन्वीक्षा की कोई आवश्यकता नहीं समझी जाती! यदि उनका कोई मित्र या सम्बन्धी उन्हें भागने में सहायता देता है तो उसे दस साल की कड़ी कैद दी जाती है। जिन लोगों का उनके साथ घनिष्ट सम्बन्ध रहा हो, चाहे उन्हें उनके भागने का बोध न भी हो—तो उन्हें पांच साल कैद की सजा हो सकती है। उन्हें पांच साल दूर उत्तर में घोर श्रम करना पड़ता है। ये लोग राजनीतिक रूप से अवांच्छित समझे जाते हैं। यदि भागने वाले असैनिक हों तो उन्हें अन्वीक्षा के पश्चात् दंड दिया जाता है।

माली की पत्नी अभी भी उससे नहीं मिल पायी। सुना है कि इस महीने उसकी पेशी है। परन्तु कारागार से उसके विषय में कोई भी सूचना प्राप्त नहीं हुई। उसे भय है कि शायद वह उस कारागार में है ही नहीं।

बागीचे में काम करने के लिए बूरोबिन एक स्त्री को भेज रहा है। बिल नागोस्की के कथनानुसार वह एक बलिष्ट औरत है जिसे बाहर काम करना बहुत भाता है।

बुद्धवार रात को 'यूपी' और न्यूयार्क टाईम्ज़ के प्रतिनिधियों, टौम व्हिटने और 'हैरिसन सालिसबरी' ने एक ठाठ का सहभोज दिया। उन्होंने 'आराग्वी' होटल में एक निजी कमरा किराये पर लिया था। इसके बाहर एक उच्चलित छज्जा है जहां से मुख्य होटल दिखाई देता है।

'अराग्वी' ज्यौंजियन रैस्तोरां है। नगर में यह सबसे श्रेष्ठ गिना जाता है। इसकी सजावट को देख कर 'पैन' स्टेशन के गुसलखाने याद

आते हैं। उसमें सफेद चमकदार चौके लगे हैं और बत्तियों पर शेड नहीं हैं। दूसरी मंजिल का निजी कमरा और भी अच्छी तरह सजाया गया है। किन्तु यह सुखदायक नहीं। भोजन के साथ उन्होंने अचार और चटनी, खीरे, ककड़ी और कच्चे प्याज दिये। मैंने खीरे कुछ अधिक खा लिये जिन्होंने तत्पश्चात् मुझे बहुत कष्ट दिया।

उसके पश्चात् आर्केष्ट्रा आ गया। उसने ज्यौर्जियन और रूसी राग बजाये। इन यन्त्रों पर ये राग दुखद प्रतीत हुये। उन्होंने हम पर कृपा की और श्वेत रूस का राष्ट्रीय गान बजाया। नीचे बैठे ग्राहक क्या सोचते होंगे इसका हमें तनिक भी विचार न आया था। हम रंगरेलियां मना रहे थे और खुश थे।

१७ अप्रैल, १९५१

हमारे नाविक सहचारी, 'कैप्टेन ड्रेम' के पास दो सप्ताह हुये एक संवेष्ट आया जिसमें एक पदक था। इसे 'नेवी डिस्टिंग्विष्ड सर्विस मैडल' कहते हैं। उसे आदेश था कि यह पदक स्वामी को भेंट किया जाये। मुख्य नाव क्रिया संचालक और सचिव की अध्यक्षता में यह उत्सव मनाये जाने का आदेश था। तुम्हें याद होगा कि जिस समय स्वामी 'नौर्मंडी' से वापिस आये थे ऐसी नीति थी कि एक कृति के लिये एक ही पदक मिल सकता था। उन्हें उस समय दो पदक भेंट हुये थे—एक सेना की ओर से और एक नाव सेना की ओर से। स्वामी ने सेना का पदक स्वीकार किया जो सचिव 'स्टम्सन' ने उन्हें स्वयं भेंट किया। फिर न जाने कैसे यह नीति बदल गई, और यह दूसरा पदक भी उन्हें दिया जाने लगा। यह बहुत सुन्दर पदक है। अव्वल तो मुझे इस बात की खुशी है कि यह पदक उन्हें मिल रहा है। दूसरे यह कि इसे प्रदान करने का उत्सव स्पैसो हाऊस में मनाया जा रहा है।

शनिवार शाम को सब सैनिक सुन्दर यूनीफार्म पहने आ गये। नाविकों ने नीले वस्त्र धारण किये थे। वे द्वार पर खड़े थे। हमने उन सभी देशों के दूतावासों और मिशनों को सूचित किया था जिनके सैनिक

स्वामी के आधीन रह चुके थे। पहले तो हमें विचार आया कि वे इस अवसर पर यूनीफार्म धारण करें किन्तु यूनीफार्म मैला हो गया था और उसका प्रयोग न हो सकता था। वे कहते हैं कि उनके लिये सूट काफ़ी है। परन्तु मैंने कहा कि 'सेंट पीटर' भी चाहते थे कि उनके वेष पर चमकदार धारियां हों।

स्वामी को किसी प्रकार सजाना था। हम उन्हें ऊपर ले गये और वे दुलहन के समान वहीं रहे। अन्ततः एक सार्जेन्ट मेजर आया और वह उन्हें नीचे ले गया।

कैप्टेन ड्रेम ने प्रोद्धरण पढ़ा, जो अति सुन्दर था। उसके पश्चात् पदक उनके कोट पर लगा दिया गया। मेरी आंख से खुशी का एक आंसू ढुलक गया और कइयों का भी यही हाल हुआ। हम सबको यह उत्सव देख कर बड़ा गर्व हुआ। शैम्पेन उड़ रही थी कि 'प्रिंस्टन' से रोजर का सन्देश आया। उसने कहा कि वायुसेना का कार्यक्रम स्थगित हो गया है और वह जून में गर्मी व्यतीत करने के लिये मास्को आ सकता है। यह कितना शुभ दिन था।

अगले शनिवार को नाच होगा। मास्को में रहने वाले हमारे सभी मित्र बड़े ज़ोरों में इसके लिये तैयारी कर रहे हैं। हमने २२५ व्यक्तियों को निमन्त्रित किया है, वे नौ बजे आयेंगे। उसके पश्चात् शाम का खाना होगा और फिर रातभर नाच।

सहभोज को उत्तम बनाने के लिये हमने अफगानिस्तान के राज दूतावास से ५०० अंडों का सौदा किया है। ये अंडे पूरे उबले हुये हैं। मिश्र के मन्त्री के पास इसी प्रकार के ४५० अंडे हैं। केन्ज़ के पास १५०, स्वेड्ज के पास २०० और यूनानियों और तुर्कों के पास भी ज़रूर कुछ अंडे होंगे।

डैन्मार्क से ताज़ा अंडे मंगाये गये थे। अंडे रूसी चुंगी से गुज़रे। खाद्य सामग्री की आयात के विषय में रूसियों के नियम बहुत कड़े हैं।

उन्होंने कहा कि हो सकता है इन अंडों में बीमारी के कीड़े हों। इसलिये उन्होंने सभी अंडों को पूरा उबाल दिया।

डेन्ज़ ने अंडों के साथ प्याज़ और सलाद भी मंगाई थी। रूसियों ने प्याज़ों को छील दिया है और सलाद के टुकड़े कर दिये हैं। यह भी इसीलिये किया गया है कि बीमारी न फैले। कल रात मिश्र का मन्त्री सहभोज के लिये आया तो उसने यह कहानी सुनाई।

हो सकता है इनमें से कुछ अंडे हमें मिल जायें।

भोजन की तैयारी में हमें काफ़ी दिक्कत का सामना करना पड़ेगा। हमें कई प्रकार की भाजी तरकारियां तैयार करनी हैं। सलाद भी बनानी है। परन्तु 'लैट्यूस' का जिससे सलाद बनती है एक पत्ता भी प्राप्त नहीं हुआ। आज कल खीरों का भाव ५ रूबल प्रति खीरा है। छोटे-से-छोटा खीरा १.२५ डालर का आता है। फूलों का यह हाल है कि मुर्झाये हुये गुलाब के फूल भी २५ रूबल प्रति फूल हैं।

यह देख कर मुझे धाराग्वी का विचार आ गया। उन लोगों ने हमें कितने खीरे दिये थे। वहां मेज़ पर अति सुन्दर गुलाब के फूल सजे थे।

आज पराह्न को स्वामी विदेशी कार्यालय जायेंगे। विशिन्सकी की अपेक्षा वहां उनका स्वागत अब 'ज़ोरिन' करेगा। विशिन्सकी बीमार है या शायद अपना स्वास्थ्य बना रहा है। स्वामी ज़ोरिन के साथ हमारी उस यात्रा की बात-चीत करेंगे जिस यात्रा पर हम काकेसस जा रहे हैं। वे इस बात का निश्चय करना चाहते हैं कि मई दिवस पर वहां होते हुये हमें हमारे होटल के कमरों में ही तो बन्द न कर दिया जायेगा। पिछले साल की बात है हमारे कुछ लोग ७ नवम्बर को ओदेस्सा में थे। उन्हें बारह घंटे तक ताले में बंद रहना पड़ा था।

२२ अप्रैल, १९५१

यह सहभोज बहुत अच्छा रहा। सवेरे चार बजे स्वामी ने आर्केस्ट्रा पर 'गुड नाईट लेडीज़, वाला राग बजवाया। जब मुख्य अतिथि चले गये और थोड़े से रंग रेलियां मनाने वाले रह गये तो स्वामी ने घर के सभी

नौकरों को' चाहे वे रसोई में काम करते थे चाहे पेन्ट्री में और चाहे टैलीफून पर, बाहर बुला लिया, और उनके काम की सराहना करते हुये उनका धन्यवाद किया। फिर उन सबने सेहत का जाम पिया।

पुरुष सिर झुकाये खड़े थे। हमारी बावर्चन फ्रीदा की आंखें भर आईं। पुरानी नौकरानियों ने झुक कर वंदना की और नन्हें तथा प्रिय स्टेपन ने जो परिमार्जक है इसके उत्तर में एक भावुक व्याख्यान दिया। इसे सुन कर सब के दिल भर आये।

सभी के वेष बहुत सुन्दर थे। सभी ने अपने आप को सजाने का पूरा प्रयत्न किया था। धन्य हो बोलशोई थियेटर का कंचुक गृह जहां से सभी प्रकार का वेष किराये पर मिल जाता है। जिनके पास अपना वेष नहीं होता वे वहां से अपना मन भाता वेष प्राप्त कर सकते हैं।

स्वामी ने गहरे सब्ज़ रंग का 'फ्राक कोट' पहन रखा था। 'वेस्ट' उनकी अपनी थी। यह चैक डिज़ाइन की थी जिस पर सोने की एक भारी जंजीर लगी थी। 'रफल' की कमीज़ थी। बड़ी-बड़ी मूछें थीं। ब्रिटिश राजदूत ने उन्हें देख कर कहा, 'कर्क तो आज ब्रिटेन के नवाब प्रतीत होते हैं। हो सकता है कि उनका कोई वंशज सचमुच ब्रिटेन का नवाब रहा हो।' यह बात कुछ सच्ची ही थी।

मेरे हाथ प्राचीन रूसी दरबार की सफेद और सुनहरी पोशाक आ गई थी। यह बिल्कुल नई थी और बहुत सुन्दर। यह मुझे ठीक बैठी। मैंने इसके साथ एक कंठी पहनी जो मोतियों की बनी थी। जो इसका रहस्य जानते थे उन्होंने मुझे बताया कि इसकी लड़ियां आयु और स्तर को प्रदर्शित करती हैं। कंठी की लड़ियों को देखकर ही पता चल जाता है कि कोई स्त्री कुंवारी है, विवाहित है अथवा विधवा है। जो कंठी मैंने पहन रखी थी उसकी लड़ियों का महत्त्व मालूम करना बुद्धिमानी न थी।

पारितोषिक देने वाली समिति में टर्की का राजदूत और वैल्ली थे। उनकी सहायता के लिये नार्वे की राजदूत 'हैल्जबी' को नियुक्त किया गया था। उनका काम बहुत कठिन था। पहला इनाम पाकिस्तान के राजदूत

की पत्नी बेगम हसन को मिला। उसने हिन्दुस्तानी मालिन का वेष धारण किया था। वह ऐसी मालिन थी जिसकी भेंट राजा से हुई। बेगम हसन के पास बहुत कीमती हीरे मणियां हैं। उसने साड़ी पहन रखी थी किन्तु उसे इस प्रकार लपेटा हुआ था कि वह स्कर्ट लगती थी। साड़ी का कपड़ा और रंग बहुत बढ़िया था।

दूसरा इनाम हमारे वायु सहचारी की पत्नी श्रीमती जेम्ज़ को मिला। उसने एक ऐसी स्त्री का पात्रण किया था जिसे 'लेडी हू इज़ नोअन एंज़ लोड' कहते थे।

पुरुषों में पहला इनाम ब्रिटिश राज दूतावास को मिला। इसकी ओर से प्रचीन रोम के दरबार का दृश्य प्रस्तुत किया गया था। इसमें सम्राट का पात्रण विशेष रूप से सराहनीय था। पुरुषों का दूसरा इनाम हालैंड के राजदूत को मिला।

आर्केस्ट्रा भी खूब था। रूसी गायकों को विदेशी राग बजाना अच्छा लगता है। उनकी सहायता के लिये हमारा चार यन्त्रों का बैंड था। कभी कभी वे कोई रूसी धुन निकालने लगते। हममें जिन लोगों ने रूसी लोक नाच सीख रखा था उन्होंने अपने करतब दिखाये। हम सब मिल मिलाकर २०० नर नारी थे।

लड़कों और लड़कियों ने नाचघर को खूब सजाया था। बत्तियों का प्रबन्ध कुछ इस प्रकार किया था कि वेष के अनुसार वे तेज़ और मन्द की जा सकती थीं।

हमने यह योजना बनाई है कि हम अगले बुद्धवार तिफलिस की सैर को चलें। यदि डुरोबिन और इन्तूरिस्त आज्ञा दे दें तो हम बुद्धवार को ही रवाना हो जायेंगे।

७ मई, १९३१

तिफलिस की यात्रा का विस्तृत वर्णन करने का समय नहीं है। परन्तु तुम्हें यह जानकर बहुत खुशी होगी कि हम कुशलता से लौट आये हैं और हमारे ये दस दिन बड़े आनन्द से व्यतीत हुये हैं।

रूसी सरकार ने हमें पूरा डिब्बा दिया था जिसमें हम सोये जा सकते थे। यह डिब्बा उसे देना ही पड़ा क्योंकि हम सबके सब दस जन थे। हमारे साथ गौफिन परिवार था और चार रक्षि। डिब्बे के कई भाग थे। एक-एक में दो-दो व्यक्ति बैठे थे। डिब्बे के दोनों ओर रक्षि पहरा दे रहे थे। 'स्ट्यू वार्षिक' ने कहा कि हमारे साथ छः फालतू व्यक्ति थे जिनका सरकारी तौर पर हमसे सम्बन्ध न था। ये लोग हमारे साथ ही गये और साथ ही वापिस आये। किन्तु सरकार को इस बात का ध्यान रहता है कि कहीं कमी न रह जावे। संभव था हम में से किसी एक को दूसरी गाड़ी से जाना पड़ता अथवा एक दिन ठहर कर।

एक दिन सवेरे डिक सर्विस और मैं प्लेटफार्म पर उतर कर टहलने लगे। हमें बताया गया था कि गाड़ी वहां २० मिनट ठहरेगी। गाड़ी दस मिनट पहले छूट गई और तीन डिब्बे हमसे आगे निकल गये। परन्तु हम उछल कर चढ़ गये। कुशल हुई कि डिब्बे का सामने का द्वार खुला था नहीं तो हमारा हाल बेचारे उस युवक के समान होता जो हाथ ओछा पड़ने के कारण श्याम सागर में जा पड़ा था। अपना पायजामा और जंगली फूलों का एक विशाल गुच्छा संभाले वह तेज़ी से गाड़ी की ओर लपका। स्टेशन मास्टर पीछे से प्रोत्साहन दे रहा था। वह हमारे डिब्बे की सीढ़ी की सलाख़ को पकड़ता-पकड़ता रह गया और पटड़ी पर जा पड़ा। उसका पायजामा घुटनों पर से छलनी हो गया और वह बेचारा वहीं पड़ा रह गया।

तिफलिस और काकेसस दर्शनीय स्थान हैं। मैं खुश थी कि हमने इस यात्रा की योजना बनाई और यह बात और भी अच्छी थी कि हम ने मई दिवस नियत किया। मेरी प्रसन्नता का मुख्य कारण यह है कि उस दिन क्वायद के समय मास्को में खूब वर्षा हुई थी और दूसरे लेनिन के मकबरे से जो भाषण दिया गया उसमें अमरीकियों की इतनी अवज्ञा की गई थी जितनी पहले कभी न हुई थी। इस अवसर पर एक हंसी की बात हुई। ज़िच राजदूत ने नीले रंग का नया टोप लिया था। उस

से नीले रंग की धारियां बहने लगीं और उसके चेहरे पर और गर्दन पर जा पहुँची। एक घटना और हुई। ब्रिटिश राजदूतावास का एक लिपिक जन प्रदर्शनी की भीड़ की लपेट में आ गया। वह सारा रास्ता रूसियों के साथ-साथ चलता गया यहां तक कि स्तालिन के सामने से भी गुज़र गया। यदि कोई उसे सम्बोधित करता तो वह ऐसे व्यवहार करता जैसे उसके कान ही नहीं और गूंगा है। वह उन पुलिस मैनों से भी बच कर निकल गया जिनकी पंक्तियां कूच करने वाले पांच-पांच व्यक्तियों को पृथक-पृथक करती हैं। वर्षा इतनी हो रही थी कि उस पर रूसी होने का गुमान हो सकता था तथापि उसके दो देशवासियों ने जो कटहरे में खड़े थे उसे पहचान ही लिया और समझा कि शायद वह शत्रु से जा मिला है।

तिफलिस की क्वायद के समय हम पर बहुत बुरी नहीं गुजरी। तुम्हें यह याद होगा कि चलने से पूर्व स्वामी विदेशी कार्यालय विशेष रूप से इसलिये गये थे कि अपने तिफ़लिस जाने की सूचना उसे दे दें। वे बताने गये थे कि वहां मई दिवस व्यतीत करना चाहते हैं और यह नहीं चाहते कि जिस प्रकार हमारे लोगों को ओदेसा में बंद रहना पड़ा था हमें भी होटल में बंद रहना पड़े। मई दिवस मंगलवार का था। स्वामी ने रविवार को ऐड फ्रीचेंस से मुख्य रवि 'सामन शर्ट' को कहलवाया कि हमने यह दिन देहात में सैर सपाटे के लिये नियत किया है और यदि वह प्रबन्ध कर सके तो हम सुविधा के समय होटल के किसी पिछले द्वार से बाहर चले जायेंगे।

हमें सूचना मिली कि ऐसा हो सकता है किन्तु हमें साढ़े सात बजे तैयार रहना होगा।

स्वामी ने कहा, 'यह सुविधा का समय नहीं है।' और तुरन्त ही उन्होंने क्रिया आरम्भ कर दी। झट मास्को के पते पर कर्मिंग के नाम एक तार लिख दिया जिसमें इस अनुचित व्यवहार का विरोध किया गया था और कहा गया था कि इसकी सूचना वाशिंगटन भेजी जाये।

स्थानीय अधिकारियों ने हमें सूचित किया था कि यदि हम इस समय से पूर्व बाहर न जायेंगे तो हमें होटल में ही बंद कर दिया जायेगा और खिड़कियों के पर्दे हटाने की भी हमें आज्ञा न होगी। लुई गौफ़िन ने भी इसी प्रकार का एक तार भेजा था। उसकी भाषा इतनी सांग्रामिक न थी परन्तु थी सुदृढ़।

हमारे रक्षक काफी घबरा गये। स्वामी और लुई चुप रहे किन्तु उन्हें बहुत रोष आया हुआ था। तीस मिनट पश्चात् ऐड को सूचना मिली कि हम अपनी इच्छा के अनुसार साढ़े दस बजे मुख्य द्वार से बाहर जा सकते हैं। यदि हम होटल में रहना चाहें तो हम खुली खिड़कियों से पैरेड देख सकते हैं।

लोगों को इकट्ठे करते और कारें तैयार करते हमें दस मिनट की देर हो गई। जिसका नतीजा यह हुआ कि हम उनकी पैरेड के बीच में फंस गये। हमारे दोनों ओर दो विशाल टैंक थे। उन लोगों ने कर कराकर हमें पटड़ी पर चढ़ाया और हम बाल-बाल बचे। कुछ देर और हो जाती तो हम इन विशाल दानवकाय टैंकों के नीचे पत्तों के समान कुचले जाते।

उसके पश्चात् एक पुलिसमैन मोटर साईकल पर आया और उसने हमें अपने पीछे-पीछे आने का इशारा किया।

अब हम पुलिस के और जनता के बीच में चले जा रहे थे। हमें विचार था कि वे हमें किसी पिछली गलीमें निकाल देंगे किन्तु रूसियों के मन की गति अनिश्चित है। इस दशा में हम शायद ऐसे लग रहे थे जैसे पोलितब्रुरो से आया हुआ कोई शिष्ट मंडल हो।

भीड़ हमारे पास से गुज़र रही थी। हम उसे वंदना न कर रहे थे। कई फरलांग तक हम ऐसे ही चलते गये आखिर एक मोड़ पर पहुँचे जहां से हम उस सड़क पर चढ़ गये जो नगर से बाहर जाती थी।

यह सब कुछ एक उपहास प्रतीत होता है, विशेषकर इस विचार से

कि दो रात पहले स्टूअर्ट तथा डिक और सुन्दर कैनेडियन लड़की जैरी बार्कले जो इस यात्रा में हमारे साथ थे जब वे क्वायद का पूर्व-प्रयोग देखने गये थे पुलिस के हत्थे चढ़ गये थे जिसने डिक और जैरी को वापिस होटल में पहुँचा दिया था। उसके पश्चात् सोमवार को जलूस में सम्मिलित होना कोई बुरा प्रतीत नहीं हुआ।

हमारे घर के विषय में एक शुभ समाचार यह है कि हमारे माली को पांच साल की अपेक्षा केवल एक साल का कारागार हुआ है। उसकी पत्नी कभी-कभी उससे भेंट कर सकती है। परन्तु कारागार की अवधि समाप्त होने के पश्चात् फिर वह मास्को में न रह सकेगा। इस बात की उसकी पत्नी को तनिक चिन्ता नहीं, क्योंकि वह जानती है कि जब उसका पुत्र साइबेरिया से वापिस आयेगा तो उसकी भी यही स्थिति होगी।

विमुक्त कैदियों की कई श्रेणियां हैं। इनमें कुछ ऐसे हैं जिन्हें उत्तर में रखा जाता है। कुछ ऐसे हैं जिन्हें नियत नगर अथवा ज़िलों में रहने की आज्ञा है, कुछ ऐसे भी होते हैं जो मास्को से लगभग सौ मील के अन्तर पर रह सकते हैं। सोवियत विधि बहुत चतुराई से निर्धारित की गई हैं। इस स्त्री को इस बात का रोष आना चाहिये था कि सरकार ने उसके पति को बन्दी बनाया और उसे कारागार में डाल दिया। इसकी अपेक्षा वह न्यायालय की कृतज्ञ है कि उसने उसके पति के कारागार की अवधि घटा दी है। उसे पांच साल का कारागार हुआ था परन्तु एक दयावान और विचारशील सरकार ने इसे घटाकर एक साल कर दिया है!

वह अपने पति के पास भोजन और औषधियां पहुँचाना चाहती थी। किन्तु उसे ऐसा करने की आज्ञा नहीं मिली। बाद में जब उसे किसी स्थाई कारागार में रखा जायेगा या किसी श्रम शिविर में भेजा जायेगा तो उसे ये चीजें पहुंचाई जा सकेंगी। कुछ दिन हुए उसकी पत्नी को इस बात की आज्ञा मिल गई थी कि वह उसे कुछ पैसे दे आये। कारागार में ही दुकान है। वहां से वह इन पैसों से खाने पीने की चीजें खरीद सकता है।

साधारण रूप से जो भोजन कैदियों को मिलता है वह बहुत घटिया दर्जे का होता है। इसी स्त्री ने मुझे बताया कि वहां सवेरे पतला-सा दलिया मिलता है, दोपहर को शोर्बा और रोटी, रात को रोटी और पानी। वह कहती है कि उसका पति बहुत प्रसन्नचित्त और स्वस्थ प्रतीत होता था। मेरा अनुमान है कि उसके शरीर से मदिरा का विष निकाल दिया गया है और यह प्रक्रिया उसके लिए लाभदायक सिद्ध हुई है।

हमारे विदेशी विभाग का सेवि वर्ग निर्देशक स्टीवन्ज़ बैलोड से यहां आया। वह कहने लगा कि कल जब वह आर्बट सड़क पर जा रहा था उसने एक युवक को देखा जो हाथों और घुटनों के बल चल रहा था। उसकी टांगों के मुंड पर कागज और फटे कपड़े लिपटे हुये थे। वह सड़क की पटड़ी पर चढ़ने लगा तो उसकी छाती पर से चार पदक नीचे गिर पड़े। उसने यहां और भी बहुत से अपांग देखे हैं। उसका अनुमान है कि यहां जितने अपांग हैं किसी निर्धन से निर्धन देश में भी न होंगे।

मैंने भी पिछली गर्मियों में एक अपांग को भिक्षा मांगते देखा था। उसके तीन अंग कटे हुए थे। उसने कटे अंग दिखाने के लिए अपना पायजामा और कमीज़ फाड़ रखी थी। जिस आदमी को स्टीवन्ज़ ने देखा था उसका इस आदमी के साथ जोड़ खूब रहेगा। मैं चाहती हूँ कि मेरे पश्चिमी मित्र इस व्यक्ति को अवश्य देखें।

२० मई, १९५१

जिस विमान में हम पन्द्रह दिन के लिए जर्मनी जाना चाहते थे वह रुक गया है। कारण यह है कि वीसा और विदेश पर उड़ने की आज्ञा उसे प्राप्त नहीं हुई। इससे हमें विशेष रूप से बेचैनी हुई है। स्वामी को वहां कुछ काम है और बाहर से हमें कुछ सामान भी खरीदना है। अब हमें अगले महीने तक ठहरना पड़ेगा और रेल द्वारा लम्बा सफ़र तय करना पड़ेगा।

कल हमने अपनी सशस्त्र सेना के कर्मचारियों का स्वागत किया। नाचघर में नाव सेना की संकेत पताकायें फहरा रही थीं। सेना के सभी

कर्मचारी अपनी बढ़िया से बढ़िया यूनी फार्म पहन कर आये थे। हम अपने ज्येष्ठ सहचारियों और उनकी पत्नियों के साथ उनके स्वागत के लिए पंक्ति में खड़े हुए थे। हमारे पीछे स्वामी की पताका और जनरल की पताका फहरा रही थी। ऐसा प्रतीत होता था जैसे हम सैनिकों की भरती करने खड़े हों।

इस उत्सव पर पांच रूसी आये थे। वे पुरुष थे। उनमें सबसे बड़ा सेनाकर्मचारी वायुसेना का करनल था। वे सब के सब एक साथ आये, हाथ मिलाकर अन्दर गये, एक-एक घूंट भरा और फिर बाहर निकल आये।

राजनयकों में सबसे अच्छे मुझे इज़राईल के राजनयक लगे। इस दूतावास की दो-तीन स्त्रियां बहुत ही सुन्दर हैं और आदमी बहुत समझदार। मैंने उनके अध्यक्ष से बातचीत की। उसने कहा कि मास्को में ४५,००० यहूदी हैं। वहां उनका एक मन्दिर भी है जहां वे आराधना के लिए जाते हैं। वहां किसी ने उनसे कभी बात नहीं की। किसी ने भी सरकारी या गैरसरकारी तौर पर उन तक पहुंचने का प्रयास नहीं किया उन्होंने ओदेस्सा और किएव में इससे कहीं अधिक संख्या में यहूदी देखे हैं। उनकी दशा बुरी है। उन्हें नौकरियों से हटा दिया गया है और घरों से निकाल दिया गया है। न तो उन्हें वीसा दिये जाते हैं और न ही उन्हें फिलिस्तीन जाने की आज्ञा मिलती है। उत्तर में जो उनका लोकतन्त्रीय राज्य है उसकी दशा कारागार से बेहतर नहीं।

मास्को में रूसी एक विश्वविद्यालय की स्थापना कर रहे हैं। इसके लिए "स्पेरो हिल्ज़" का स्थान नियत किया गया है। यह वही स्थान है जहां से खड़े होकर नैपोलियन ने नगर पर दृष्टि डाली थी। यह एक बहुत बड़ी योजना है जिसका रूसियों को गर्व है। यहां कई स्कूल होंगे और गवेषणा के कई केन्द्र। पौ फटते ही बहुत से कारीगर उन सड़कों पर खड़े मिलते हैं जो इस स्थान को जाती हैं। उन पर रक्षि नियुक्त हैं।

अन्त में पुलिस होती है और पुलिस के कुत्ते । इन श्रमिकों में सैकड़ो नर-नारी होते हैं ।

विद्याध्ययन का मन्दिर बनाने का यह एक भयावह तरीका है । क्या मनुष्य के स्वतन्त्र विचारों का स्मारक इसी प्रकार बनाया जाता है ?

जब हम तिफ़लिस जा रहे थे तो हमें बहुत से कैदी मिले जो रेल गाड़ियों में भरे जा रहे थे । एक डिब्बे में जो वास्तव में पशुओं का डिब्बा था स्त्रियां भरी थीं । वे खिड़कियों से बाहर झांक रही थीं । खिड़कियों को कांटेदार तार लगे थे । यह दिन का समय था । कई लोगों ने उन्हें इस दशा में देखा होगा । परन्तु यह प्रथा जारी है और न जाने इसका क्या परिणाम होगा ।

२३ मई, १६२१

आज बुद्धवार है । विमान बर्लिन में टैम्पलहौल्फ के हवाई अड्डे पर शनिवार से रुका खड़ा है । रूसी कहते हैं कि वे पोलैंड की सरकार से बातचीत कर रहे हैं कि वह उन्हें इस विमान को पोलैंड के ऊपर से उड़ने की आज्ञा दे दे । भगवान करे कि उन्हें सफलता हो ।

हमारे अमले का एक और व्यक्ति चला गया है । वह कई महीने से बीमार था । उसे हमारे साथ जाना था । कल वह हमारे युवक कर्मचारियों के साथ चला गया । वे मार्ग में उसका ध्यान रखेंगे । उसके रोग की जटिलता में स्नायु का हाथ है । देश में बहुत कम लोग हैं जो यहां रहने वालों की कठिनाइयों को जान सकते हैं । सेवि वर्ग का जो अधिकारी आया हुआ है उसने स्वयं यह बात स्वीकार की है कि उसे यहां रहने वालों की कठिनाइयों का तनिक भी बोध न था । वह अपनी पिछली तारों को पढ़कर बहुत लज्जित हुआ ।

माली की पत्नी उसे कारागार में मिलने गई थी । रविवार का दिन था । कारागार के बाहर ३०० व्यक्ति, अधिकतर स्त्रियां और बच्चे, पंक्ति बनाये प्रतीक्षा कर रहे थे । वह कई घंटे खड़ी रही । आखिर थक गई और वापिस लौट आई ।

३ जून, १९५१

पोलैंड की सरकार ने अन्ततः आज्ञा दे ही दी। हम पन्द्रह दिन के लिये बाहर जाना चाहते थे परन्तु अब छः दिन से अधिक बाहर न रह सके। हम वापिस लौट आये हैं। सफ़र में खूब आनन्द रहा।

पोलैंड और रूस के ऊपर से उड़ते हुए हम पैरिस पहुँचे। यहां से बी० १७ द्वारा हेग गये और सन्ध्या समय से अगले दिन तीन बजे तक हम वहीं 'चैपिन्ज़' के साथ रहे। वे बहुत उत्तेजित थे इसलिये नहीं कि उनकी पुत्री का विवाह हो रहा था बल्कि इसलिये कि मार्गेट ट्रूमेन तीन दिन के लिये वहां आ रही थी। उसके मनोविनोद की तैयारियां हो रही थीं।

हम उसी विमान से फिर वीज़बेडन गये। वहां हम नौस्टड्ज़ के साथ ठहरे। वहीं स्नान किया, विश्राम किया और खाना खाया। यूरोप की हवाई सेना के नायक जनरल केनन के स्थान पर अब नौस्टड हैं।

शुक्रवार सवेरे मैं बाज़ार गई और सेरों भाजी तरकारियां खरीद लाई। दर्जनों अंडे लिये। अन्य छोटा-मोटा सामान खरीदा।

साढ़े दस बजे हम पुनः 'बौच' के लिये रवाना हुये। विमान उस सामान से भरा था जिसकी हमें स्पेसो में आवश्यकता थी। इस सामान में एक थैला था जिसमें विशेष प्रकार के फल थे जो हवाई टापुओं से 'नौस्टड' के पास आये थे। आज लंच के समय हम उन्हीं का लुत्फ उठाएंगे।

हम हवाई अड्डे की ओर आ रहे थे कि डिक मार्ग में रुक गया और केले खरीदने लगा। एक दो दर्जन नहीं बल्कि गुच्छे का गुच्छा। इसमें ६८ केले थे। वह इन्हें स्पेसो के बच्चों में बांट रहा है।

१० जून १९५१

क्या अच्छी धूप निकली है; परन्तु हम इसका कोई लाभ नहीं उठा सकते। तीन सप्ताह से वर्षा नहीं हुई।

दिन और रात बहुत लम्बे हैं। धूप खूब रहती है। इतनी प्यारी ऋतु हो और आदमी नगर में दबक कर बैठा रहे!

पहले साल हमने बाहर उन 'कोर्टों' पर टैनिस खेलने की आज्ञा चाही थी जहां जनसाधारण खेलते हैं। वास्तव में जनसाधारण के कोर्ट मास्को में नहीं। रैड आर्मी और ऐमवीडी तथा कारखानों और सरकारी संस्थाओं के कुछ कोर्ट हैं। हमें आज्ञा प्राप्त नहीं हुई। बूरोबिन के अधिकारियों ने हमें स्पेसो में भी कोर्ट बनाने की आज्ञा नहीं दी।

बुद्धवार पराह्न में बड़ा ठाठ रहा। अमरीका से हमारे पास शक्ति से चलने वाली एक मशीन आई है जो घास छील सकती है, हल जोत सकती है, सुहागा दे सकती है और बर्फ हटा सकती है। यह एक प्रकार का छोटा ट्रैक्टर है। हमारे इन्जीनियर को इस पर बहुत गर्व है। वह दर्शाना चाहता था कि यह किस प्रकार काम करती है। इटली और पाकिस्तान के राजदूत आये हुये थे। वे सभी इसे देख कर चकित रह गये।

रूसी भी चुप नहीं बैठे रहे। ऐमवीडी के आदमी भी आये थे और उन्होंने अवश्य मुख्य कार्यालय को बढ़ा चढ़ाकर इसकी सूचना भेज दी होगी।

हमारा नया ट्रक भी एक अजीब चीज़ है। साल भर हुआ कि कई ट्रक मँगाये थे। अभी तक केवल एक ही पहुँचा है। इसका नाम 'डा एमंड टी' है और इसका रंग शोख और लाल है। वैल्वी को डर था कि अव्वल तो ट्रक को लाएसंस न मिलेगा और दूसरे यदि लाएसंस मिल भी गया तो हमें ट्रक का रंग बदलना पड़ेगा। रूसियों का स्वभाव है कि वे उल्टी बात करते हैं। उन्होंने लाएसंस भी दे दिया है और रंग बदलने की बात भी नहीं की। किन्तु एक और अड़चन लगा दी है।

इसे चलाने के लिये हमने एक ऐसे आदमी को रखा था जो सेना में सार्जेंट रह चुका है और जो इन्जीनियर है। वह इस काम पर बीस साल तक रह चुका है।

सोवियत संघ में गाड़ी चलाने की आज्ञा प्राप्त करने के लिये प्रार्थी के लिये आवश्यक है कि वह कला सम्बन्धी परीक्षा पास करे। यह शर्त

विदेशियों पर खास तौर पर लागू होती है। यातायात के नियमों के ज्ञान की अपेक्षा वे इस परीक्षा को अधिक महत्व देते हैं। वे जो भी प्रश्न करते हैं प्रार्थी को घबराने के लिये होते हैं।

हमारे सार्जेंट को भी उन्होंने फेल कर दिया। उससे पूछा गया था :

'बैट्री में अम्ल कब डाला जाता है ?'

सार्जेंट ने उत्तर दिया, बैट्री में अम्ल नहीं डालते। उसमें जल डाला जाता है।'

'बिल्कुल गलत। यदि बैट्री में सूराख हो जाये तो उसमें अम्ल ही डाला जाता है' इस बात पर उसे लाएसंस नहीं मिला।

अन्त में परीक्षक ने उसे एक भाषण दिया और कहा कि वह तीन मास पश्चात् फिर आये और इस बीच में इन्टर्नैल कम्बस्चन इंजन को समझने का प्रयास करे।

इस प्रकार की छोटी-छोटी कई बातें हैं जिनसे हमें हर रोज दो चार होना पड़ता है।

२८ जून, १६५१

थोड़े दिन हुये हमने रात को ब्रिटिश राज दूतावास में भोजन किया। हम बाहर चबूतरे पर खड़े थे कि हमें क्रैमलिन से बहुत सी मोटरकारें बाहर निकलती दिखाई दीं। आधी रात का समय था। विशाल महल में रोशनी थी। यहां कोई सहभोज था। लोग खाना खाकर जा रहे थे। बड़े-बड़े नेताओं की कार के पीछे एक-एक रक्षि कार थी। हमने सोचा कि ग्रोमिको के आगमन पर सहभोज दिया गया है। वह अभी-अभी पैरिस से लौट कर आया है। विशिन्स्की अभी भी बीमार है। ग्रोमिको ने उसे बताया होगा कि किस प्रकार उसने पश्चिमी मन्त्रियों और प्रतिनिधियों से संग्राम किये थे।

मलिक ने युद्ध बन्दी का जो प्रस्ताव प्रस्तुत किया था उसे प्रकाशित हुये कई दिन हो गये हैं। स्वामी ग्रोमिको के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

उन्होंने ग्रोमिको से भेंट करने की आज्ञा चाही। वे मलिक के सुझावों को स्पष्ट कराना चाहते थे।

कल बुद्धवार २७ तारीख को ग्रोमिको ने उनके साथ भेंट का समय नियत किया। स्वामी ऐड फ्रीयर्ल और डिक सर्विस तीनों गये थे। ऐड निर्वक्ता के रूप में, तथा रूसी विशेषज्ञ के रूपमें। डिक दूरपूर्वी विशेषज्ञ के रूप में।

स्वामी को ग्रोमिको से भेंट करने में आनन्द आता है। एक तो वह बहुत चतुर व्यक्ति है। वह बात की तह को बहुत जल्दी पहुँच जाता है और निजी बातचीत में खाली भाषण नहीं देता। दूसरे बातचीत दोनों ओर से अंग्रेजी में हो सकती है। जब सरकारी पत्रों का आदान-प्रदान हो चुकता है तो ग्रोमिको अपना पत्र रूसी भाषा में पढ़ता है। जो बात लिखने वाली होती है वह भी वह रूसी भाषा में ही कहता है किन्तु बाकी ले दे की बातें अंग्रेजी में ही होती हैं। स्वामी इन सम्मेलनों का सञ्चालन इस ढग से करते हैं कि मेरा जी चाहता है कभी मैं भी देखूं। उनके इस ढंग के कारण ही रूसी उनका इतना मान करते हैं। स्वामी ने ग्रोमिको से पूछा कि पैरिस में उसके सप्ताह कैसे व्यतीत हुये। ग्रोमिको ने कहा कि दिन व्यतीत होने में न आते थे। परन्तु पैरिस एक अति सुन्दर नगर है और वहाँ जैसे बावर्ची संसार में कहीं न मिलेंगे।

रूस के विदेशी उप-मन्त्री के मुख से यह बात सुन कर आश्चर्य होता है।

हमारे बग़ीचे में पौदे उग आये हैं किन्तु वे सब डंठल से प्रतीत होते है। रूस में फूल इसी प्रकार उगते हैं। बूढ़ा माली जेल में ही पड़ा सड़ रहा है। जिस दिन उसको दंड सुनाया गया उस दिन के पश्चात् से उसकी पत्नी उसे नहीं मिल पाई है। वह कहती है कि कारागार के बाहर लोगों की लम्बी-लम्बी कतारें होती हैं और उसकी बारी आना सम्भव नहीं। इस पर भी वह खुश है। वह सोचती है कि जब उसका

पति और पुत्र मुक्त होकर आयेंगे तो उसका जीवन बड़े आनन्द का जीवन होगा। उसके पुत्र की कैद के अभी ढाई साल बाकी हैं।

६ जौलाई, १९५१

चार जौलाई का शुभ दिन आया और चला गया। हमने अपना विशाल झण्डा मोखोवाया पर लगाया था। हवा खूब चल रही थी इस लिये झण्डा आने जाने वालों के सिरों पर खूब फहरा रहा था। स्पेसो हाउस में हमने सामने के छज्जे पर झण्डा फहराया था। अन्दर लाल, सफेद और नीले फूल सजाये थे।

इस बार सहभोज हमने पराह्न में दिया। भोजन के कमरे से हम बड़ी मेज़ नाचघर में ले आये थे और सब द्वार बागीचे में खोल दिये थे। खिड़कियां भी खोल दी थीं। अन्य चीज़ों के साथ हमने असली अमरीकी क्रीम पेश की जिसकी सभी ने खूब सराहना की।

स्वामी ने और मैंने ठीक छः बजे अपना काम संभाल लिया। हम दोनों ने अति सुन्दर वस्त्र धारण किये थे। हमारे साथ हमारा एक ज्येष्ठ मुख्य सचिव रहता था जो पन्द्रह-पन्द्रह मिनट बाद बदलता रहता था। सात बजे के पश्चात् हमारा स्थान वैल्ली और कर्मिंग परिवार के दोनों सदस्यों ने ले लिया। हम मेहमानों में मिल गये। छः से आठ बजे तक का निमन्त्रण था। इसलिये बहुत से लोग जल्दी आगये और अन्त तक ठहरे रहे। जो थोड़े से रूसी आये थे उन्होंने भी लुत्फ़ उठाया।

हमने अनुमान लगाने की चेष्टा की थी कि देखें विदेशी कार्यालय से कौन आता है। पिछली बार उन्होंने बहुत निम्न श्रेणी के व्यक्ति भेजे थे जो बीस मिनट पश्चात चले गये थे। इस बार हमारी सूची छोटी थी विशिन्सकी बीमार था उसे महीनों से किसी ने न देखा था। ग्रोमिको और अन्य विदेशी उप मन्त्रियों को निमन्त्रित किया गया था उनमें से कोई भी नहीं आया। बहाना था कि काम बहुत है परन्तु एक जेष्ठ सहायक सचिव आ ही गया। उसे विदेशी कार्यालय का सामान्य सचिव

कहते हैं अन्य कर्मचारी भी आये थे जिनमें अमरीकी विभाग का मुख्य अध्यक्ष भी था, उसकी पत्नी भी आई थी। वह सुन्दर नारी है और ग्रोमिको की पत्नी के अतिरिक्त दूसरी रूसी स्त्री है जो स्पेसो हाउस आई है।

वह और उसका पति संयुक्त राज्य अमरीका से अभी वापिस आये हैं। उसने अमरीकी काट के वस्त्र धारण किये हुए थे। वह अंग्रेज़ी बोलती है और मीठी-मीठी बातें करती है। उसे भी सहभोज में बहुत आनन्द आया।

ज़िचोस्लोवेकिया के राजदूत और उसकी पत्नी ने हमें विशेष रूप से उत्तेजित किया। ये दोनों वयस्क व्यक्ति हैं और ऐसा प्रतीत होता था जैसे वे अपने विवाह की स्वर्ण-गांठ मनाकर आये हैं। अन्त में पोलैंड का राजदूत आया। उसने ढीले-ढाले वस्त्र पहन रखे थे और पहले-पहल किसी ने उसे पहचाना भी नहीं। इन दोनों व्यक्तियों का आगमन बड़ा विचित्र था क्योंकि पिछले साल से ये लोग स्पेसो हाउस न आये थे। शायद कोरिया की विराम सन्धि की तैयारियां हो रही हैं।

ज़िच राजदूत ने हमारे द्वितीय सचिव की पत्नी, वाह्र ग्रैट से कहा कि वह एक अच्छा अमरीकी सिगार पीने आया है। हमारे घर में सिगार नहीं होते। यहां रहने वाला कोई आदमी भी सिगार पीने की हिम्मत नहीं कर सकता। मुझे उनकी दुर्गन्ध पसन्द नहीं।

वाह्र इधर-उधर भागने लगी। उसे याद आया कि डिक ने सिगारों की एक डिब्बी कहीं रखी है। उसने डिक से सिगार लाने को कहा। इतनी देर में फादर असार्ड ने बात-चीत सुन कर अपनी जेब से एक सिगार निकाल कर दिया। उसने यह भी कहा कि वैटिकन बहुत खुशी से ज़िच राजदूत को सिगार पेश करना चाहेगा। बिना यह पूछे कि यह सिगार कहां से आया है उसने इसे मुंह को लगा लिया। जो तीन सिगार उसे डिक ने दिये थे वे उसने जेब में डाल लिये।

१६ जौलाई १९५१

९५ दर्जे की ऊष्मा इस नगर में जहां सफाई का प्रबन्ध नहीं और जहां बहुत धूल उड़ती है असहनीय है। कहते हैं कि मास्को में सोवियत संघ के किसी अन्य स्थान की अपेक्षा अधिक गर्मी पड़ती है। यहां तिफलिस और खारखव से भी अधिक गर्मी पड़ती है।

कल रविवार को सभी नगर से बाहर चले गये। हम स्वयं भी देहात में हवाई अड्डे की दिशा में चल पड़े। हम शाम को आये। डिक को जो कल जा रहा है सहभोज दिया। वह लेनिनग्राद और हेल्सिन्की से होता हुआ ब्रसलज़ जायेगा। हम भी वहां जाना चाहते हैं। हम, फ्रांसीसी और ब्रिटिश, बस तीन ही राजदूत हैं जो यहां रह गये हैं। शेष सब छुट्टी मनाने गये हैं।

कल हमने बर्मा के राजदूत के साथ मास्को होटल की छत पर रात का भोजन किया। वहां ब्रिटिश इटैलियन और फ्रैंच राजदूत भी आये हुए थे इस होटल में रूसियों की भीड़ थी। नर-नारी सभी ने अजीब-अजीब वस्त्र पहने हुए थे। स्त्रियों के वस्त्र सर्दियों के थे। उनमें से बहुतों ने घड़ियां लगाई हुई थीं। सोवियत संघ में घड़ी लगाना बड़प्पन की निशानी है। कुछ स्त्रियों ने छल्ले भी पहन रखे थे और कई अन्य आभूषण भी। रूस में छल्ले बहुत कम दिखाई देते हैं। एक दुकान पर मैंने कुछ छल्ले पड़े देखे। उनमें से हलके से हलके छल्ले का मूल्य ८० डालर था।

इस विषय में 'एडिथ मेंसन' ने मुझे एक कहानी सुनाई। वह पिछले महीने हमें मिलने आई थी। फिनलैंड की सीमा पर चुंगी वालों ने उसके कड़े देखे तो उनके मुँह में पानी भर आया। उसके हीरों और मणियों की ओर उन्होंने इतना ध्यान नहीं दिया। उसके कड़े सचमुच बहुत बड़े हैं। रूसी इनसे बहुत प्रभावित हुये।

रूसी लोग जब भी होटल में जाते हैं तो वे उसका पूरा-पूरा लाभ उठाते हैं और वहां घंटों बैठे रहते हैं। एक तश्तरी में से वे थोड़ा सा

खाते हैं। फिर मदिरा का एक गिलास पीते हैं, फिर दूसरा। पीते-पीते वे नशे में चूर हो जाते हैं और वहीं मेज़ पर सिर टेक देते हैं।

होटल के 'वेटर' ढीले वस्त्र पहनते हैं। अपनी बाजुओं पर वे गंदे से अंगोछे लटकाये रहते हैं। उन्होंने भी अन्य रूसियों के समान सिर मुंडा रखे थे। इस पर भी मेरे सलाद में से कई लम्बे लम्बे और काले काले बाल निकले।

भोजन के लिये बहुत कुछ दिया गया था परन्तु था सब घटिया दर्जे का। इस पर भी यह बहुत मँहगा था।

साढ़े दस बजे तक ही हम तंग आगये और अपने परिपोषिता से विदा ली। उस बेचारे को बहुत रक़म देनी पड़ी होगी।

२४ जौलाई, १९५१

लेडी कैल्ली ने मुझे रात के भोजन के लिये निमन्त्रित किया है। सात 'क्वेकर' आये हुये हैं जो रूसियों के साथ शान्ति की वार्ता करना चाहते हैं। यह सहभोज उन्हीं के सम्मानार्थ हो रहा है। ये लोग साम्यवादी नहीं। ये जानना चाहते हैं कि रूसी शान्ति के लिये कितने इच्छुक हैं। डेविड कैल्ली ने मुझे बताया है कि जहां-जहां भी ये लोग गये हैं वहीं रूसियों ने लाल रंग की दरियां बिछवाई हैं। वे उन स्थानों पर भी गये हैं जहां जाने की हमें आज्ञा नहीं।

क्वेकरों में सद्भावी नर और नारियां हैं। ये लोग ब्रिटेन के सफल व्यापारी हैं और वहां के सांस्कृतिक क्षेत्र में उच्च समझे जाते हैं। उनमें से एक श्री कैडबरी हैं। उसका चौकोलेट बनाने का एक बहुत बड़ा कारखाना है। श्री मैटकाल्फ़ कोयले का मुख्य व्यापारी है। कुमारी फ़्रीक एक डाक्टर है और बाल मनोविज्ञान की विशेषज्ञ। श्री बेली कुछ समय न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्रसंघ में काम करता रहा है। ये ऐसे लोग हैं जिनकी आंखों में धूल नहीं डाली जा सकती, ये क्वेकर हैं। उनका यह निश्चय है कि युद्ध और शस्त्र संसार से लोप होने चाहियें। रूसियों को उनके साथ सच्चे दिल से बात करनी होगी।

२५ जौलाई, १९५१

बैल्ली के यहां मुझे बहुत आनन्द आया। क्वेकर विचारशील और समझदार लोग हैं। इन लोगों को रूस में एक बात बहुत अच्छी लगी है कि रूसी बच्चों का बहुत ध्यान रखते हैं।

इस क्वेकर शिष्टमंडल का आगमन' बहुत महत्त्वपूर्ण है। रूस में ऐसे शिष्ट मंडल बहुत कम आये हैं जिनके विचार साम्यवादी नहीं। इसके अतिरिक्त इस मंडल के सदस्यों के दिल उदार हैं और वे सच्चे दिल से यह जानने की चेष्टा करेंगे कि रूसियों की नीति क्या है।

ये लोग त्रितियाकोव गैल्लरी देखने जा रहे थे। मैंने कहा कि वे उन चित्रों को अवश्य देखें जिनमें अमरीकियों का और ब्रिटिश का खाका उड़ाया गया है। वे उस दिन वहां न जा सके। आज सवेरे जब मैं वहां गई तो वे लोग दिखाई दिये।

मैं यहां दो मास पश्चात् गई थी। देखा तो रूसियों ने सब कुछ बदल डाला है। वे चित्र जिनमें हम लोगों का खाका उड़ाया गया था कहीं दिखाई न देते थे। चीनियों के चित्र भी लोप हो गये थे। म्यो और हो ची मिन्ह की मूर्तियां भी वहां न थीं।

इनके स्थान पर वहां नये चित्र थे। बड़े-बड़े विशाल चित्र जिन्होंने गज़ों स्थान घेर रखा था। इनमें वे सम्मेलन अंकित किये गये थे जो शान्ति के लिये हुये थे। स्तालिन के चित्र से भी अब करुणा बरसती थी। एक चित्र में विशिन्सकी को संयुक्तराष्ट्र संघ के सामने भाषण देते दिखाया गया था। इस चित्र का शीर्षक था 'शान्ति का घोष' इसके एक कोने में संयुक्त राज्य के प्रतिनिधि दिखाये गये थे। उनके पीछे कुछ अंग्रेज और फ्रांसीसी। उनके आनन से उद्दंडता और रोष टपकता था। दूसरे पक्ष पर युक्रइन और ज़िचोस्लोवेकिया के प्रतिनिधि दिखाये गये थे जो विशिन्सकी के भाषण को सुन कर खुशी के और प्रशंसा के नाद लगा रहे थे।

इन चित्रों के चारों ओर फूलों, माताओं, बच्चों आदि के चित्र

लगे थे। उन पर लिखा था 'सबके लिये सुख और शान्ति', 'ये हैं सोवियत भूमि के उपहार'।

क्वेकर मंडली को गैलरी में प्रवेश करते समय तो मैंने देखा था। उसके पश्चात् वे दिखाई नहीं दिये।

ब्रिटिश समुपदेशी जो रूस सम्बन्धी समस्याओं के विषय में परामर्श देता है कहने लगा कि यह सब कुछ क्वेकर शिष्ट मंडल के लिये किया गया है। उसकी बात का मुझे विश्वास नहीं हुआ परन्तु मैं जानती हूँ कि रूसियों से कोई बात भी दूर नहीं है।

२ सितम्बर, १९५१

जब से मैं स्पेसो हाउस में आई हूँ मैं यही चाहती रही हूँ कि यहां किसी का विवाह रचा सकूं। अब यह सुअवसर आ रहा है। समुपदेशी की सुन्दर सचिवा, जेन मैकनरिज, का विवाह ग्रिफ़ ऐडवर्ड से हो रहा है। वह एक सहायक नाविक सहचारी है। कल पराह्न के समय यह शुभ संस्कार होगा। फादर आसर्ड यह संस्कार करायेंगे। यह एक नाविक का विवाह है। इसलिये स्वामी ने अपनी यूनीफार्म बाहर निकाल ली है। समस्त राजदूतावास में चहल-पहल है। महामात्यावास के सभी नौकरों को निमन्त्रण दिया गया है कि वे आयें और छज्जे पर बैठ कर यह उत्सव देखें।

दूलहा और दूलहन यह चाहते थे कि उनके दस बारह घनिष्ट मित्रों को ही बुलाया जाये। शीघ्र ही उन्हें आभास हो गया कि राजदूतावास के अन्य लोगों को इससे बहुत निराशा होगी। अन्य राजदूतावासों से भी वे कुछ लोगों को बुलाना चाहते थे। इस प्रकार संख्या बढ़ती गई और अब यह १२० तक पहुँच गई है। इनमें चार राजदूत हैं और पांच मिशनों के अध्यक्ष।

नाचघर से सुनहरी कुर्सियां निकाल कर पंक्तियों में लगा दी गई हैं। फूल सजाने का काम लेडी कैलली ने अपने ऊपर लिया है और वह कल सवेरे फूल सजा देगी। फर्श को खूब साफ़ कर दिया गया है। मोखोवाया

से सफ़ाई करने वाली नौकरानियां आई थीं जो घंटों फर्श को धोतीं और उसे पालिश करती रहीं।

विवाह के लिये लाल दरी बिछा दी गई है।

रसोईघर में बावर्ची पंचहरी 'वैडिंग केक' तैयार करने में लगे हैं।

विवाह के वेष की समस्या हल हो गई है। वाइ प्रेंट ने अपना वेष पेश किया जो उसने विवाह के समय पहना था। उसके पश्चात् यह वेष प्रयुक्त नहीं हुआ था। जेन के विवाह के पश्चात् यह राजदूतावास में सम्भाल कर रख दिया जायेगा और जब फिर किसी का विवाह होगा तो यह दुलहन को दिया जायेगा। यह जेन का अपना सुझाव है। दोपट्टे की समस्या का हल वायुसेना के सहचारी की पत्नी ने कर दिया है। आस्ट्रेलिया के मिशन के अध्यक्ष की बहन का एक स्कर्ट था। उसने उससे दोपट्टा तैयार कर दिया है। यह भी दुल्हन के वेश के साथ ही दूतावास में रख दिया जायेगा।

गोटा लेडी कैल्ली ने उधार दे दिया है। प्रार्थना की पुस्तक जेन की साथिन, इस पर सफेद रेशम चढ़ाने के लिये यह पुस्तक हैल्सिन्की को भेजी जायेगी। 'पेटीकोट' दो अन्य मित्रों ने दिये हैं। जूते और जुराबें जेन के अपने पास थीं।

अब 'मेड आफ़ आनर' के वेष का प्रश्न था। मेड आफ़ आनर तो स्वामी की सचिवा जैकी ब्रैनेमन' बनने को तैयार थी। उसके वेष के लिये भी मैंने दो सप्ताह हुये स्टाकहालम को लिख दिया था। किन्तु वह वेष कल पहुँचा और देखा तो वह बिलकुल उचित नहीं। जैकी ने मुझे टेलीफून किया और मैं अपना नीला स्कर्ट लेकर मोखोवाया भागी गई। हमने उसमें कुछ परिवर्तन किया और उसे जैकी को पहनाया। यह बहुत सुन्दर प्रतीत हुआ। कार्यालय की एक लड़की, ऐन्नी ने एक नीले रंग की टोपी निकाल दी और बस काम बन गया। अब वेष तैयार है। यह जैकी को खूब फबेगा।

अब एक समस्या और है। जेन और ग्रिफ़ दोनों प्रोटस्टैन्ट हैं। फादर आलर्ड एक अमरीकी 'कैथोलिक पादरी है। किन्तु उसने खूब देख लिया है कि वह संस्कार करा सकता है। इसमें कोई कमी न रह जाये इसलिये हमने यह प्रबन्ध किया है कि रूस के पंजि कार्यालय में इस विवाह का इन्दराज करा दिया जाये।

जब अमरीका वाले अपने देश से बाहर विवाह करते हैं तो विवाह विधिवत बनाने के लिये सदैव ऐसा किया जाता है। इसके पश्चात् दुलहन और दूलहा को एक प्रलेख दे दिया जाता है जिसमें लिखा होता है उनका विवाह हो चुका है।

एक छोटी सी समस्या और थी। केक काटने के लिये तलवार चाहिए थी। यह टर्की के नाविक सहचारी ने दे दी। चार तलवारों की इसलिये आवश्यकता थी कि दुलहा और दुलहन के गुज़रने के लिये मेह-राब बनाई जाये। ये तलवारें हम बोलशोई थियेटर से मांग लाये हैं।

आर्गन बजाने के लिये ब्रिटिश राजदूतावास का समुपदेशी 'लेनहम टिचनर,' देर से अभ्यास कर रहा है। बाजा फादर आलर्ड ने दे दिया है।

'टिचनर' की पत्नी कहती है कि उसका पति दूलहा से भी बढ़कर लज्जावान है और कांपता है।

फूल इस ऋतु में काफ़ी होते हैं। मंहगे जरूर हैं। हमने सफेद फूल बाज़ार से खरीद लिये हैं। कुछ फूल हमारे बग़ीचे से मिल गए हैं। हरे पत्ते 'विल्ले' जंगल से ले आया है। हमने फूलों को बाल्टियों और द्रोणिकाओं में रख दिया है। उन्हें सजाना लेडी कैल्ली का काम है। मुझे कल दोपहर तक अवकाश न होगा क्योंकि मैं दुलहन की माता बन-कर पंजि कार्यालय जाऊँगी।

हम अभी-अभी पंजि कार्यालय से लौटकर आये हैं—दुलहन, दूलहा मेड आफ़ आनर, जेन की साथिन, बैस्टमैन', रोजर, मैं और हमारा समु-पदेशी, कल्वर। हमें कई छोटी-छोटी गलियों में से होकर आना पड़ा। आखिर हम एक विशाल भवन के पास पहुँचे जिस पर भूरे रंग का पल-

स्तर हुआ था। उसके द्वार पर तख्ती लगी थी जिस पर लिखा था 'विवाह पंजि कार्यालय।'

या तो यहां बहुत कम लोग आते हैं या उन्होंने हमें कोई विशेष कमरा दिया था। हमें केवल आधा घण्टा प्रतीक्षा करनी पड़ी। इसके पश्चात् एक कठोर आकृति की स्त्री आई और हमें अपने साथ ले गई।

एक कमरा था जिसमें तीन स्त्रियाँ बैठी थीं। उनके सामने एक मेज़ पड़ी थी, उन्होंने हमें बैठ जाने का संकेत किया। दुलहन और दूलहा इन स्त्रियों के सामने कुर्सियों पर बैठ गये, हम एक ओर हट कर।

इन में से दो स्त्रियाँ जो कुछ कम उम्र की थीं काग़ज़ पत्र भरने में लग गईं। इस काम में उन्होंने काफ़ी समय लगाया। अन्तत: उन्होंने दूलहा और दुलहन से पूछा कि क्या उनके बच्चे हैं। दूलहा और दुलहन ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया और दो तीन प्रलेखों पर हस्ताक्षर किये। बस उनकी शादी हो गई थी।

इसके पश्चात् तीनों स्त्रियां उठीं। उन्होंने दूलहा और दुलहन के नाम और पते पढ़कर सुनाए और कहा कि इनके कोई बच्चे नहीं। फिर उन्होंने इस नवविवाहित जोड़े से हाथ मिलाया।

हम सब ने भी उनसे बारी-बारी हाथ मिलाया। उसके पश्चात् दूलहा ने १५ रूबल दिये और उसे एक प्रमाण-पत्र मिल गया जिस पर लाल रंग की मोहर लगी थी। सोवियत अधिकारियों की दृष्टि में ये लोग अब पति और पत्नी थे।

४ सितम्बर १९५१

यह विवाह बहुत ठाठदार रहा। इससे बेहतर यह न हो सकता था। स्वामी को और मुझे इस बात की खुशी है कि स्पैसो हाउस में हमने एक अन्तिम और ठाठदार उत्सव मनाया है। कैनेडा मिशन के अध्यक्ष की पत्नी श्रीमती फोर्ड ने एक बात कही जिससे मेरा दिल भर आया। उसने कहा, 'दूलहा और दुलहन को तो यह उत्सव याद रहेगा ही परन्तु हम भी इसे न भुला सकेंगे। मास्को में जीवन नीरस है, हम आप लोगों के कृतज्ञ हैं कि आपने इसे रंगीन बनाने का प्रयास किया।'

मैं पहले भी लिख चुकी हूँ कि हमारे राजनयक सहकारी अमरीकी राजदूतावास को मास्को में स्वतन्त्र-संसार का दुर्ग समझते हैं। वे समझते हैं कि इस पर उन सब का अधिकार है।

अब ज़रा विवाह संस्कार का समाचार सुनो।

हम रूसी कार्यालय से वापिस आये तो देखा कि लेडी कैल्ली, इलेन क्रीथर्स और विनिफ्रेड कम्मिंग बड़े ज़ोरों से काम पर लगी हैं।

भोजन के कमरे में स्तम्भ पर बैन्जामिन फ्रैंकलिन और जौर्ज वाशिंगटन की मूर्तियां रखी थीं, वे हटा दी गईं। पिप्पों में लेडी कैल्ली ने बालूत की टहनियां और सफेद फूल लगा दिये थे। पिप्पों की बनावट ऐसी थी कि वे भी स्तम्भ का अंग प्रतीत होते थे। वेदी पर बोखारा का कढ़ा हुआ कपड़ा बिछाया गया था, उसके ऊपर रूसी ज़री दार चादर जो मेरी चादरों में सब से सुन्दर है। इसके साथ-साथ हमने बड़ी-बड़ी मोम बत्तियां रख दीं जो फादर ब्रासर्ड अपने गिर्जाघर से लाया था।

यह दृश्य बहुत ही सुन्दर था। ऊपर से फानूसों की रोशनी पड़ रही थी। नीचे लाल, सुनहरी, सफेद और हरे रंग के वस्त्र तथा फूल शोभा दे रहे थे। इसकी आभा का वर्णन करना कठिन है।

साढ़े चार बजे कार्यवाही आरम्भ हुई। दुलहन का रंग निखर आया था, परन्तु स्वामी भी अपनी यूनीफार्म में कुछ कम आकर्षक न लगते थे।

विवाह संस्कार की कार्यवाही एक नाटक के समान थी जिसमें निर्देशक का काम श्रीमती टिचनर ने किया था।

इसके पश्चात् सहभोज हुआ; बेहद शैम्पेन उड़ी। असंख्य चित्र लिये गये। नीचे नौकरों को जी भर कर मदिरा पीने को मिली। सभी खुश थे।

सब से अधिक खुशी मुझे थी कि मैंने अन्ततः स्पैसो हाउस में एक शादी रचाई है।

४ अक्तूबर, १९५१

दो साल और चार महीने हो गये जब हम पहले पहल मास्को आये

थे। उस समय ऐसा मालूम होता था कि ये दिन कैसे कटेंगे। अब यह अरोचक काल सुकड़ कर केवल दो दिन रह गया है।

सब अलमारियां खाली कर दी गई हैं। ट्रंकों में सामान भर दिया गया है। मैंने सब से विदा ले ली है।

मैं स्वेडिश राजदूत की पत्नी से मिलने गई और ईरानी राजदूत, टर्किश राजदूत, डच राजदूत की पत्नी से मिली। हमने पाकिस्तानी, भारतीय और नार्विज्यिन राजदूतावासों में लंच लिये। ब्रिटिश और फ्रेंच राज दूतावासों में हमने डिनर खाये। इटैलियनों ने हमें एक अति रमणीय पार्टी दी। इन लोगों को हम अपने परम मित्र समझते हैं और उन्हें छोड़ कर जाने में हमें खेद हो रहा है।

मुझे अनेक उपहार मिले हैं। कइयों ने हमारी विदाई की सूचना पा अश्रु बहाये हैं।

राज दूतावास में जितने भी लोग काम करते हैं उन सभी से हमारे घनिष्ट सम्बन्ध थे। हम एक दूसरे पर निर्भर थे। नौकरों को भी हम अपना समझते थे। अब वे बेचारे आंसू बहाते हैं। उनकी आंखें सूज गई हैं। उन बेचारों को क्षेम कहां प्राप्त होता है?

इस विचार से कि हम यहां से वास्तव में जा रहे हैं, मुझे उत्तेजना हो रही है।

चन्द्रमा के प्रकाश में मैंने 'रैड स्क्वेयर' और 'क्रैमलिन' पर अन्तिम दृष्टि डाली। आर्बट की सड़क पर मैंने अन्तिम बार चक्कर लगाया। स्पेसो स्क्वेयर में से भी मैं अन्तिम बार गुजरी। 'स्काई स्क्रेपर' पर भी मेरी अन्तिम दृष्टि पड़ी। यह भवन अभी तक अधूरा है।

मुझे आर्बट की भीड़ याद रहेगी और यह भी याद रहेगा कि एक मैले कुचैले गुप्तचर ने मेरा पीछा अन्तिम बार किया था। स्पेसो स्क्वेयर की रेल में पिल्लों के समान खेलते हुये बच्चे भी मुझे न भूलेंगे।

हमें ले जाने वाला विमान कल यहां पहुँच गया था। पोलैण्ड पर से गुज़रने की आज्ञा और अन्य पत्र सब तैयार हैं।

परसों सवेरे दस बजे हम प्रस्थान करेंगे। दो दिन और फिर हम पेरिस में होंगे। मास्को एक स्वप्न के समान पीछे रह जायेगा। यह एक ऐसा स्वप्न है जो हमारे जीवन का अंग बन गया है, जो सचेत रूप से हमारे मन पर छाया रहेगा।

रूस को भुलाना किसी के लिये भी सम्भव नहीं।

रूप-वाणी प्रिंटिंग हाउस, २३ दरियागंज, दिल्ली में मुद्रित।